इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BHDLA-136
हिन्दी भाषा : लेखन कौशल

खंड

2
लेखन कौशल

इकाई 6

प्रभावी लेखन के गुण 5

इकाई 7

रचना (कंपोजीशन) की तैयारी 15

इकाई 8

पुनर्रचना (संक्षेपण, भाव पल्लवन आदि) 31

इकाई 9

वर्णनात्मक लेखन 44

इकाई 10

आख्यानपरक लेखन 60

इकाई 11

तार्किक लेखन 73

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. वी. रा. जगन्नाथन
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं निदेशक
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए. अरविन्दाक्षन
पूर्व प्रतिकुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा (महाराष्ट्र)

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर
केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ.प्र)

प्रो. आर. एस सर्राजु
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. आलोक गुप्ता
प्रोफेसर एवं डीन
हिंदी भाषा और साहित्य केन्द्र
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
गांधीनगर (गुजरात)

प्रो टी.वी. कट्टीमनी
कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक

संकाय सदस्य

प्रो. सत्यकाम (निदेशक)
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी
प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
(पाठ्यक्रम संयोजक)

पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
हिन्दी संकाय
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

खंड संयोजन, संशोधन एवं संपादन

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
हिन्दी संकाय
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक

डॉ. सीता राम शास्त्री
डॉ. भारत भूषण
डॉ. सुरेश कुमार

संपादन सहयोग

डॉ. शंभुनाथ मिश्र, परामर्शदाता (हिंदी)
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सचिवालयिक सहयोगः श्रीमती गीता नेगी

सामग्री निर्माण

श्री के. एन. मोहनन
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
सा. नि. एवं. वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा. नि. एवं. वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

दिसम्बर, 2019

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019*

ISBN : 978-93-89668-47-6

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सा. नि. एवं वि. प्र., द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइप सैट : ग्राफिक प्रिंटर्स, 204, पंकज टॉवर, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली-110091

मुद्रक : पी. स्क्वायर सॉल्यूशन्स, एच-25, साईट-बी, इण्डस्ट्रीयल एरिया, मथुरा

खंड 2 : लेखन कौशल

हिन्दी भाषा : लेखन कौशल पाठ्यक्रम का यह दूसरा खंड है। इस खंड के माध्यम से हम हिंदी भाषा के विविध व्यावहारिक पक्षों और उनसे संबंधित कौशल के विकास की प्रक्रिया का अध्ययन कर सकेंगे।

खंड-1 में हम व्यावहारिक हिंदी के विविध पक्षों का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। सरकारी पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण, समाचार लेखन और संपादकीय तथा अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों से हम परिचित हो चुके हैं।

प्रस्तुत खंड में हम हिन्दी भाषा में रचनात्मक लेखन और उससे संबंधित गुणों और कौशल के विकास पर बल देंगे।

इकाई 6 प्रभावी लेखन से संबंधित है। इसमें हमने प्रभावी लेखन की अवधारणा के विषय में चर्चा की है तथा साथ ही विषय वस्तु एवं शिल्प के उन प्रमुख पक्षों की जानकारी भी दी है जिनसे लेखन प्रभावी हो सकता है।

इकाई 7 रचना की तैयारी से संबद्ध है। इसमें रचना की तैयारी से पहले तथा रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातों की चर्चा की गई है। रचना में शीर्षक का क्या महत्व है यह भी बताया गया है।

इकाई 8 पुनर्रचना से संबंधित है। इसमें संक्षेपण, भाव पल्लवन, रिपोर्ट लेखन आदि की जानकारी दी गई है। परीक्षा की तैयारी करते समय पाठ्यसामग्री का अध्ययन करके उसमें से महत्वपूर्ण बिन्दुओं के किस प्रकार नोट्स लिए जाते हैं, इसकी जानकारी नोट्स लेखन के अन्तर्गत दी गई है।

इकाई 9, 10 एवं 11 रचना के प्रमुख प्रकारों से संबद्ध है। वर्णनात्मक लेखन में किसी व्यक्ति वस्तु दृश्य या घटना का चित्रण वर्णनों द्वारा किस प्रकार किया जाता है, इसकी जानकारी इस इकाई में दी गई है। आख्यानपरक लेखन भावों और विचारों को चरित्रों और घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है और बीच-बीच में अपनी बात भी कहता है। लेखन में निजी ज़िन्दगी के साथ समाज की व्यापक ज़िन्दगी के चित्र भी अंकित होने आवश्यक हैं। तार्किक लेखन में किसी विषय को तर्कों एवं उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इकाई 11 में हमने तार्किक लेखन की प्रक्रिया एवं उसमें उदाहरणों के महत्व पर भी चर्चा की है।

यदि आप इस खंड में सीखे हुए बिन्दुओं को ध्यान में रखेंगे तो आप किसी प्रकार की रचना के लेखन में आसानी से प्रवृत्त हो सकेंगे तथा अपने लेखन को किसी भी विषय पर सही दिशा दे सकेंगे।

इकाई 6 प्रभावी लेखन के गुण

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 प्रभावी लेखनः अवधारणा

6.3 प्रभावी लेखनः विषय के स्तर पर

6.4 प्रभावी लेखनः शिल्प के स्तर पर

- 6.4.1 भाषा पर अधिकार
- 6.4.2 शब्दावली
- 6.4.3 वाक्य-विन्यास
- 6.4.4 शैली
- 6.4.5 मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग
- 6.4.6 अलंकारिकता
- 6.4.7 व्याकरणिक शुद्धता
- 6.4.8 अर्थ और भाषा में अन्विति

6.5 प्रभावी लेखन : लक्ष्य

6.6 सारांश

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

खंड-1 की पाँच इकाइयों में आपने भाषा और सम्प्रेषण के विविध पक्षों का परिचय प्राप्त किया। अब खंड दो में आप 'लेखन कौशल' के विविध पक्षों का परिचय प्राप्त करने जा रहे हैं। इस खंड की प्रथम इकाई व पाठ्यक्रम की छठी इकाई है 'प्रभावी लेखन'। इस इकाई में आप लेखन के सामान्य गुणों की पहचान करेंगे। लेखन के विविध पक्षों पर इसके बाद की इकाइयों में विचार होगा।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- लेखन की प्रभाव क्षमता को रेखांकित कर सकेंगे; और
- प्रभावी लेखन के विभिन्न पक्षों की पहचान कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आपको लेखन की प्रभाव क्षमता संबंधी जानकारी दी जाएगी। यह पूरा खंड लेखन के विविध रूपों की जानकारी देने वाला है, लेकिन लेखन के विविध रूपों की जानकारी से पहले अच्छे या प्रभावी लेखन के सामान्य गुणों को पहचानना जरूरी है। एक ही विषय पर दो लेखकों की रचनाएं सामनें हों और उनमें एक की रचना बहुत प्रभावित करे तथा दूसरे की प्रभावित न सके तो जाहिर है कि एक के लेखन में पाठक को प्रभावित करने के गुण मौजूद हैं और दूसरे के लेखन में वे गुण नहीं हैं, ये गुण क्या हैं, कैसे हासिल होते हैं, लेखक किस विधि से अपने रचना कौशल में इन गुणों का

प्रयोग करते हैं जिनसे उनका लेखन प्रभावशाली लेखन बन जाता है, ये कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन पर इस इकाई में विचार किया जाएगा।

प्रभावी लेखन, लेखन के विषय से संबंधित है या लेखन के शिल्प से, यह लेखन की विशिष्ट शैली है या लेखन का सामान्य कौशल ये सारे मुद्दे इस इकाई के दायरे में आते हैं, जिन पर आगे विचार किया जाएगा।

6.2 प्रभावी लेखनः अवधारणा

प्रभावी लेखन क्या है? किसे हम प्रभावी लेखन मानते हैं और किसे नहीं? क्या प्रभावी लेखन की कोई परिभाषा निर्धारित हो सकती है? प्रभावी लेखन कैसे सीखा जा सकता है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जो प्रभावी लेखन को समझने के लिए उठाए जा सकते हैं। सबसे मूल बात तो यही है कि जो लेखन पाठक को प्रभावित करे अर्थात जिस लेखन को पढ़कर पाठक पर अपेक्षित प्रभाव पड़े– वह भावाकुल हो उठे, सोचने लगे, हंसने/रोने लगे, यहाँ तक कि उस लेखन को पढ़ कर वह पहले जैसा इंसान न रह कर कुछ अलग किस्म का इंसान महसूस करने लगे, जिंदगी में उसे नई राह या नई रोशनी दिखाई देने लगे– ऐसे अनेक लक्षण हैं, जिनसे प्रभावी लेखन की प्रभाव क्षमता की व्याख्या की जा सकती है। नींद आ रही हो तो प्रभावी लेखन आदमी की नींद उड़ा दे सकता है, जबकि दूसरी ओर कुछ लेखन ऐसा होता है, जिसे रात में सोते समय इसलिए पढ़ा जाता है कि नींद आ सके। नींद लाने वाला लेखन अनिवार्यतः अप्रभावी लेखन नहीं होता– उसमें लोरी की क्षमता भी हो सकती है, जिससे नींद आ जाए अर्थात वह नींद ला सकने का प्रभावी लेखन भी हो सकता है, लेकिन ऐसा लेखन भी होता है, जो इतना उबाऊ हो कि उसे पढ़ते-पढ़ते नींद आ जाए, कई लोग रात को सोने से पहले ऐसी दुरूह किताब या पत्रिका उठा लेते हैं कि उन्हें नींद की गोली की जरूरत ही नहीं पड़ती। कई बार ऐसा भी लेखन होता है कि नींद पर भी अपना प्रभाव छोड़ जाता है और मनुष्य को सपने भी उसी लेखन के आते हैं, जो उसने सोने से पहले पढ़ा है।

इन सारी बातों से तात्पर्य यह है कि प्रभावी लेखन की मुख्य विशेषता पाठक को, उसके सोचने-समझने के तरीके में, उसके संस्कारों को, उसकी बुद्धि को, उसके हृदय को गहरे में जाकर प्रभावित करना है। इस अर्थ में प्रभावी लेखन की सरल परिभाषा भी यही हो सकती है कि ''प्रभावी लेखन वह लेखन है, जिसे पढ़ कर पाठक का मस्तिष्क झकझोरा जाए, उसका हृदय द्रवित हो जाए और उसके संस्कारों में उद्वेलन होने लगे और पाठक उस रचना के पाठन के बाद जीवन को या समस्याओं को एक नई दृष्टि से, नई रोशनी ग्रहण कर देखने-समझने लगे।'' हालांकि प्रभावी लेखन की यह व्याख्या आधी-अधूरी है, लेकिन प्रभावी लेखन की अवधारणा क्या है, इसे जरूर इससे समझने में मदद मिल सकेगी।

सवाल यह है कि लेखन में यह भेद कैसे हुआ कि कुछ लेखन या कि अधिकांश लेखन 'अप्रभावी' लेखन का रह जाता है, जबकि विश्व के विशाल लेखन भंडार में थोड़ा ही ऐसा लेखन है और अब भी रचा जा रहा है, जो सही मायनों में प्रभावी या असरदार लेखन कहा जा सकता है। लेखन की प्रभावक्षमता की एक कसौटी समय भी है, यह कसौटी बहुत बड़ी व महत्वपूर्ण कसौटी है, जो लेखन बहुत समय बीतने पर भी अपनी प्रभावक्षमता बनाए रखता है, वास्तव में तो वही लेखन प्रभावी लेखन है। कई बार तात्कालिक प्रचारादि कारणों से थोड़े समय के लिए किसी लेखन को उस काल के आलोचकों के दिए 'प्रमाण पत्रों' के कारण भी 'प्रभावी' लेखन कह दिया जाता है। अनेक तत्कालीन पत्रिकाएं कई बार लेखक की (सामाजिक) सत्ता को ध्यान में रख कर प्रशंसा के पुल बांध देती हैं, लेकिन समय की कसौटी पर ऐसा लेखन जल का बुलबुला ही रह जाता है। दूसरी ओर कई बार ऐसा भी लेखन होता है, जिस पर फिर लेखक की (सामाजिक) सत्ता के कमजोर होने से आलोचक आदि ध्यान नहीं देते और ऐसा लेखन

कई बार लेखक के जीवनकाल में अचर्चित रह जाता है, लेकिन काल की कसौटी पर कई बार ऐसा लेखन बहुत ही प्रभावी सिद्ध होता है। मुक्तिबोध के साहित्य पर उसके जीवनकाल में अधिक ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन उनके देहांत के बाद जब उनका अधिकांश अप्रकाशित साहित्य छपा तो वे हिंदी साहित्य के सभी कालों के सबसे प्रभावशाली लेखकों में से एक माने गए।

अतः लेखन की प्रभावक्षमता को तत्काल नहीं आंका जा सकता, हाँ प्रमाणित हो चुके प्रभावी लेखन के गुणों को रेखांकित कर प्रभावी लेखन के सामान्य गुणों को जरूर अंकित किया जा सकता है।

प्रभावी लेखन की प्रभावक्षमता को दो स्तरों पर पहचाना जा सकता है (1) विषय के स्तर पर अर्थात् लेखक किस विषय को लेखन में प्रस्तुत करना चाहता है तथा (2) शिल्प के स्तर पर – अर्थात् जिस विषय को लेखक ने अपने लेखन के लिए चुना है, इसकी प्रस्तुति के लिए किन शिल्पगत विधियों को उसने प्रयुक्त किया है।

विषय और शिल्प में सामंजस्य है या नहीं, इस बात पर भी लेखन की प्रभावक्षमता काफी निर्भर करती है। अतः इकाई में अब प्रभावी लेखन के इन दो पक्षों पर विचार किया जाएगा।

6.3 प्रभावी लेखनः विषय के स्तर पर

किसी अंग्रेजी लेखक से किसी ने पूछा– ''प्रभावी रचना का मूल मंत्र क्या है?'' उसने उत्तर दिया ''किसी विषय पर अच्छी तरह और स्पष्ट विचार करने पर ही प्रभावी रचना प्रस्तुत होती है।'' तो प्रभावी लेखन में विषय के स्तर पर पहली आवश्यकता विषय संबंधी लेखक की स्पष्ट समझ है। जो विषय लेखक के मानस के जितना निकट होगा और जिस पर लेखक लगातार विचार भी करता रहेगा, उसी से लेखक का घनिष्ठ संबंध बनेगा, इससे उस विषय पर लिखने में लेखक का आत्मविश्वास अधिक होगा, अतः प्रभावी लेखन के लिए लिखने से पहले रचना में प्रस्तुत किए जाने वाले विषय की सभी बातों को लेखक को अच्छी तरह मन में बसा लेना चाहिए। विषय से संबंधित जितनी भी सामग्री मिले, उसे एकत्र करना चाहिए और उस पर यथेष्ट मनन–चिंतन करना चाहिए। जिस विषय पर लेखक का सच्चा वास्तविक अनुराग नहीं होगा उस विषय पर लेखक प्रभावी ढंग से नहीं लिख सकेगा। जिस विषय पर लेखक को स्पष्टता प्राप्त होगी, उसे वह सुचारु ढंग से लेखन में प्रतिपादित कर सकेगा। अतः विषय पर पर्याप्त अध्ययन मनन करके ही लेखक को कलम उठानी चाहिए। वैसे तो लेखक अनेक विषयों का ज्ञाता हो सकता है लेकिन लिखना उसी विषय पर चाहिए, जिस पर मन में भलीभांति विचार परिपक्व हो चुका हो, उदाहरणतः महाश्वेता देवी ने अपने उपन्यास 'जंगल के दावेदार' की रचना के लिए और अमृत लाल नागर ने अपने उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' की रचना से पहले अपने विषयों से संबंधित सामग्री का गहन व सांगोपांग अध्ययन किया। 'जंगल के दावेदार' उपन्यास बिहार के आदिवासी महापुरुष बिरसा मुंडा के जीवन से संबंधित था तो लेखिका ने नृतत्वशास्त्री कुमार सुरेश सिंह के नृतत्वशास्त्रीय लेखन व अन्य बहुत सी सामग्री का अध्ययन किया, खुद उस क्षेत्र के आदिवासियों से मिल कर उनकी भावनाओं को समझा तथा फिर तार्किक रूप से उपन्यास की स्पष्ट योजना बना कर यह उपन्यास बंगला भाषा में लिखा जिस पर बाद में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

इसी प्रकार अमृतलाल नागर मेहतर या भंगी जाति के जीवन को अपने उपन्यास की कथा का विषय बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने मेहतर जाति के सामाजिक इतिहास का जमकर अध्ययन किया व उसके बाद इस उपन्यास –'नाच्यो बहुत गोपाल' की कथा का विन्यास तैयार किया।

इस प्रकार विषय पर समुचित ध्यान देने से दोनों लेखकों की यह कृतियाँ महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं का दर्जा प्राप्त कर गई। यशपाल के 'झूठा सच' की आलोचना में यह कहा गया कि लेखक ने उस काल के अखबारों की विभाजन से संबंधित तमाम कतरनों को छान मारा। ऐतिहासिक उपन्यासकारों के लिए तो विषय की तथा अतीत के समुचित इतिहास की जानकारी अत्यंत आवश्यक होती है, अन्यथा यह अतीत के अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है।

किसी साहित्यिक रचना के लेखन में रचनाकार को विषय के साथ-साथ भाव का भी ध्यान रखना होता है। सृजनात्मक रचनाओं में भाव पर ध्यान देना बेहद जरूरी होता है, अतः रचना में भाव का विभाव कुशलता से होना बहुत जरूरी होता है, यह तभी हो सकता है, जब लेखक अपनी रचना में भावों की प्रस्तुति अत्यंत सहज रूप से करता है। जितनी सहज भाव-प्रस्तुति रचना में होनी उतनी ही वह अधिक प्रभावी होगी।

विषय के चुनाव व उसके अध्ययन-मनन के अतिरिक्त लेखक को अपने विषय को रचना में वस्तु का रूप देना होता है, इसीलिए साहित्य के संदर्भ में विषय को विषयवस्तु या प्लॉट भी कह दिया जाता है। प्लॉट कायदे से कथा-वस्तु का पर्याय है, लेकिन विषय वस्तु रचना की अन्तर्वस्तु के रूप में भी परिभाषित कर दी जाती है। अर्थात लेखक पहले अपनी रचना की अन्तर्वस्तु पर मनन करता है, फिर उस अर्न्तवस्तु के लिए उपयुक्त रूप या शिल्प या रचना-कौशल की तलाश करता है। कहा तो यह भी जाता है कि रचना की अन्तर्वस्तु अपने उपयुक्त रूप या शिल्प स्वाभाविक रूप से ही चुन लेती है, लेकिन लेखक को इसके लिए सायास प्रयत्न भी करने होते हैं। अन्तर्वस्तु की प्रस्तुति उतनी ही अधिक प्रभावी बन जाती है, जितना उपयुक्त उसका रूप या शिल्प होता है। अतः लेखक को शिल्प, शैली या रूप पर बहुत ध्यान देना पड़ता है।

बोध प्रश्न 1

1) प्रभावी लेखन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए।

(क) नाच्यो बहुत गोपाल के लेखक श्री अमृतलाल नागर हैं। ( )

(ख) सृजनात्मक रचनाओं में भाव पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है। ( )

(ग) किसी विषय पर अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से विचार करने पर ही प्रभावी रचना प्रस्तुत होती है ( )

3) 'प्लॉट' से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

6.4 प्रभावी लेखनः शिल्प के स्तर पर

लेखक कई बार अपने विषय के संबंध में तो स्पष्ट होता है, लेकिन स्पष्टता के बावजूद वह अपने लेखन में प्रभावी नहीं हो पाता। इसका कारण यह है कि वह विषयों या मतों को ही लेखन का सब कुछ मान लेता है और यह नहीं समझ पाता कि न सिर्फ 'बात' महत्वपूर्ण है, 'बात' को कहने का 'ढंग' भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है यदि बात ठीक या प्रभावी ढंग से नहीं कही जाएगी तो बात बड़ी होकर भी बेकार चली जाएगी। इसलिए लेखन में रचना कौशल अर्थात् अपने विचार या भाव को किस तरह से अधिकाधिक प्रभावी बनाया जाए, की जरूरत होती है और यह रचना कौशल सीखना पड़ता है, इसे अभ्यास व परिश्रम द्वारा साधा जाता है। इस रचना कौशल के अन्तर्गत कई पक्ष आ जाते हैं, जिन पर यहाँ विचार किया जाएगा। ये कुछ पक्ष हैं–

(1) भाषा पर अधिकार

(2) शब्दावली

(3) वाक्य-विन्यास

(4) शैली

(5) मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग

(6) अलंकारिकता

(7) व्याकरणिक शुद्धता

(8) अर्थ और भाषा में अन्विति

6.4.1 भाषा पर अधिकार

जिस भी भाषा में लेखक अपने विचारों या भावों को लेखन के रूप में प्रकट करना चाहता है, उस भाषा पर उसे अधिकार होना चाहिए। यहाँ हिंदी के संदर्भ में देखें तो हिंदी की अनेक उपभाषाएँ हैं– भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी इत्यादि। लेकिन जो लेखक हिंदी की सभी उपभाषाओं के पाठकों तक पहुँचना चाहता है, उसे प्रचलित हिंदी अर्थात् खड़ी बोली हिंदी पर अपनी पकड़ बढ़ानी होगी। लेखन के विषय के अनुसार भी भाषा पर अधिकार होना चाहिए। सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेमचंद जैसी भाषा भी हो सकती है और निराला या मुक्तिबोध जैसी भी। लेकिन यदि विचारात्मक लेखन है तो भाषा का स्वरूप बदल जाएगा, इसलिए लेखक को भाषा के बहुविध रूपों की जानकारी व उन पर पर्याप्त पकड़ होना जरूरी है, यह प्रभावी लेखन की पहली शर्त है। भाषा को जटिलता से बचा कर उसे यथासंभव सरल रखना चाहिए।

6.4.2 शब्दावली

लेखक की शब्दावली जितनी समृद्ध होगी, उतनी ही अधिक प्रभाव क्षमता वह अपनी रचना में ला सकता है। न केवल शब्दावली ही समृद्ध होनी चाहिए, लेखक को अपनी शब्दावली के शब्दों के अर्थ की सूक्ष्म छायाओं का भी समुचित ज्ञान होना चाहिए। कई बार एक जैसे अर्थ वाले अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते हैं, किंतु शब्दों का अलग-अलग होना ही यह बताता है कि हर शब्द किसी विशिष्ट संदर्भ में प्रयुक्त करने लायक है।

6.4.3 वाक्य-विन्यास

लेखक की रचना में वाक्यों की बुनावट बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विचार चाहे जितने भी अच्छे या उत्तम हों, यदि उन्हें अटपटे वाक्यों में प्रस्तुत किया जाएगा तो वे कुछ भी प्रभाव नहीं छोड़ पाएंगे। इसके लिए जरूरी है कि लेखक अपने लेखन में वाक्य विन्यास के प्रति सचेत हो। जहाँ तक हो सके, जटिल वाक्य-विन्यास से बचना चाहिए। एक वाक्य में एक ही विचार या भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। अनावश्यक वाक्य विस्तार से बचना चाहिए, अन्यथा उसमें (वाक्य में) अस्पष्टता, भद्दापन, भ्रामकता आ

जाती है। छोटे व सुगठित वाक्य ही अधिक सुंदर व प्रभावशाली होते हैं। साहित्यिक रचनाओं में कई बार संयुक्त वाक्यों की जरूरत होती है, लेकिन कुशल लेखक जानते हैं कि कहाँ साधारण व छोटे वाक्यों का प्रयोग करना है। रचना का सौंदर्य अधिकाशंतः यथासाध्य संक्षिप्त व स्पष्ट वाक्यों में अधिक झलकता है। वाक्यों में शब्द-योजना भी समुचित होनी जरूरी है।

सबसे अच्छा वाक्य वही समझा जाता है जिसमें न तो एक भी शब्द घटाने या बढ़ाने की जरूरत पड़े और न ही वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के क्रम को जरा भी बदलने की । यदि शुद्ध और अच्छे वाक्यों में शब्द भी इधर-उधर कर दिया जाए तो उसका आशय ही बदल जाएगा।

6.4.4 शैली

शैली का साधारण अर्थ है ढंग। जिस ढंग से कोई लेखक अपनी बात कहता है, उसी से उसकी विशिष्ट पहचान बनती है। एक ही बात को दो लेखक अलग–अलग ढंग से जब कहते हैं, उस से यह बात निकलती है कि लेखक अपनी शैली से पहचाना जाता है। फैज़ अहमद फैज़ का एक शेर है–

जिस धज से कोई मकतल में गया, वो सान सलामत रहती है

ये जान तो आनी जानी है, इस जाँ की तो कोई बात नहीं।

अर्थात् शहीद मकतल पर अपनी जिस खास धज से जाता है, वही उसकी विशिष्टता बन जाती है। यही चीज लेखन के संबंध में भी सही है, लिखने वाले सैकड़ों– हजारों लेखक होते हैं, लेकिन कुछ ही लेखक ऐसे होते हैं, जो अपनी शैली की विशिष्टता से अलग खड़े नजर आते हैं। साहित्य का तो सारा सौंदर्य ही शैली पर आश्रित है। इसीलिए अंग्रेजी कवि पोप ने कहा है– 'शैली हमारे विचारों की वेशभूषा है'। कारलाइल तो इससे भी आगे जाकर कहते हैं– 'शैली लेखक के विचारों का परिधान नहीं, बल्कि त्वचा है'। शैली में भाषा, अर्थ, भाव, शब्द आदि सभी विहित पक्ष हैं। इसी में छंद व अलंकार प्रयोग भी है। श्रेष्ठ लेखक की शैली सबसे स्वतंत्र होती है और प्रेमचंद जैसे लेखकों की उनकी शैली से भी तुरंत पहचान हो जाती है।

6.4.5 मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग

भाषा में सौंदर्य लाने के लिए, मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग के लिए लेखन में अवसर अक्सर आते रहते हैं और इनका प्रयोग लेखन को प्रभावशाली बनाने में सहायता करता है। हाँ, मुहावरों व लोकोक्तियों के बिना किसी संदर्भ के उपयोग उल्टा असर भी करता है। तब इससे लेखन की प्रभाव क्षमता कम होती है, अतः मुहावरों-लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन में जरूरी तो है, लेकिन औचित्यपूर्ण ढंग से।

6.4.6 अलंकारिकता

लेखक को अपने लेखन में भाषा को प्रसंगानुकूल अलंकारिकता का जामा ओढ़ाना चाहिए। विशेषतः साहित्यिक लेखन में, भाषा में अलंकारिकता विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करती है, किंतु अलंकारिकता का आधिक्य भाषा के सहज प्रवाह को नष्ट करके भाषा की प्रभाव क्षमता बढ़ाने की बजाय कम कर देता है।

6.4.7 व्याकरणिक शुद्धता

प्रभावी लेखन के लिए शब्दों के ज्ञान के साथ-साथ भाषा के व्याकरण का ज्ञान होना भी बहुत जरूरी है। व्याकरण के ज्ञान व लेखन में उसके व्यवहारिक उपयोग से अनेक प्रकार की अशुद्धियों से बचा जा सकता है। जिन लेखकों को भाषा का सहज ज्ञान बहुत

अधिक होता है, उन्हें व्याकरण के ज्ञान की विशेष आवश्यकता नहीं होती, वे सहज रूप से ही शुद्ध व प्रवाहमय भाषा का प्रयोग करते हैं, लेकिन कई लेखक व्याकरण का ज्ञान होने पर भी अशुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं। वास्तव में तो भाषा अभ्यास से ही शुद्ध, सुंदर व मनोहर होती है, व्याकरण का ज्ञान तो अभ्यास में ही थोड़ा सहायक होता है।

6.4.8 अर्थ और भाषा में अन्विति

लेखन में अर्थ और भाषा का अत्यधिक महत्व होता है। अर्थ शब्दों से ग्रहण होता है, अर्थ प्रायः स्पष्ट होता है, लेकिन भाव कुछ गूढ़ होता है। किसी शब्द या वाक्य का साधारण अर्थ समझने में उतनी मुश्किल नहीं होती, जितनी भावार्थ समझने में होती है। अतः प्रभावी लेखन वही होता है, जिसमें वाक्य का अर्थ तो ठीक से समझ आए ही, रचना का भाव भी उचित रूप से पाठक के मन में संप्रेषित होना जरूरी है। अर्थ और भाव में एकन्विति भी होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि शब्दों या वाक्यों से कुछ और अर्थ निकल रहा हो, जबकि लेखक का भाव या आशय बिल्कुल अलग ही प्रकार का हो। अर्थ और भाव सदा भाषा के साथ-साथ चलते हैं, अतः यह भी कहा जा सकता है कि भाषा सदा भावों की अनुगामिनी होती है, लेकिन एक अन्य स्तर पर यह भी कहा जा सकता है कि अर्थ और भाव को भाषा का अनुगमन करना पड़ता है। प्रभावी लेखन के लिए जरूरी है कि वाक्यों या शब्दों से भाव और अर्थ ठीक से संप्रेषित हों। गूढ़ और क्लिष्ट भाषा का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए। एक सफल व प्रभावशाली लेखक वही है, जो अपने लेखन में शब्द, अर्थ, भाव, ध्वनि और संगीत सभी बातों को ध्यान में रखकर लिखता है।

इन मुख्य बातों के अतिरिक्त रचना कौशल या शिल्प में कुछ छोटी छोटी बातों का ध्यान भी रखना चाहिए, जैसे हिज्जों या अक्षरों में अशुद्धियां न हों, संस्कृत या फारसी– अंग्रेजी आदि शब्दों का अशुद्ध रूप न लिखा जाए, बिंदियों (अनुस्वार अक्षरों के नीचे बिंदियाँ इत्यादि) का सही प्रयोग हो, विराम चिह्नों का सही प्रयोग हो, छपने से पहले प्रूफ ठीक से देखे जाएं ताकि छपाई की अशुद्धियाँ न हों। इन सब बातों का ध्यान रखने से लेखक रचना-कौशल से प्रभावी लेखन कर सकता है।

6.5 प्रभावी लेखन : लक्ष्य

प्रभावी लेखन का लक्ष्य क्या है? ज़ाहिर है कि प्रभावी लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य पाठक को प्रभावित करता है। एक ही समय एक भाषा में सैकड़ों, बल्कि हज़ारों लेखक लिख रहे होते हैं, लेकिन उनमें से कुछ ही लेखक ऐसे होते हैं, जो पाठकों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, प्रायः अधिकांश लेखक दस बीस वर्षों में ही काल के गर्त में समा जाते हैं और किसी को उनका नाम तक याद नहीं रहता। लेकिन दूसरी ओर प्रत्येक भाषा में ऐसे भी लेखक हैं, जो सैकड़ों या हजारों वर्ष बीतने पर भी अपनी प्रभाव क्षमता बनाए हुए हैं व आज भी अपनी रचनाओं से पाठक को प्रभावित करते हैं। होमर, शैक्सपियर, बाल्मीकि, कालिदास आदि ऐसे कितने ही प्राचीन लेखक हैं, जो आज भी अर्वाचीन बने हुए हैं। कारण यह है कि इन लेखकों की रचना में कुछ ऐसा है, जिसमें मानवता को कालातीत समय तक प्रभावित करने की क्षमता है। मानव-भावनाओं का ऐसा चित्रण है, जो हर युग में पाठक को निरंतर प्रभावित करता रहता है। ऐसा लक्ष्य इन लेखकों ने कैसे हासिल किया?

कालातीत समय तक वही लेखन प्रभावित कर सकता है, जो ऐसे मानव अनुभव या मूल्य प्रस्तुत करे, जो हर काल में मनुष्य को प्रभावित करें। कुछ मानवीय भावनाएँ या कर्म ऐसे होते हैं, जो प्रत्येक रूप में प्रभावित करते ही रहते हैं, जैसे किसी आदमी का पूर्णतया निस्वार्थ होकर व्यापक मानवता के प्रति समर्पित होना। यह एक ऐसा मानवीय गुण है, जो किसी भी युग में प्रभावित करने की क्षमता रखता है। जो लेखक किसी ऐसे चरित्र को अपने लेखन में प्रस्तुत करता है, जिसमें ऐसे मानवीय गुण हों तो वह लेखन

कालातीत होकर हर काल में प्रभावित करता रहता है। या कुछ ऐसी मानवीय भावनाएँ हैं, जो समय बदलने से रूप भले ही बदल लें, लेकिन अपने मूल तत्व में वैसी ही बनी रहती है। स्त्री-पुरूष, प्रेम, ईर्ष्या, सत्ता के लिए संघर्ष मानव जीवन के कुछ ऐसे पक्ष हैं, जो हर युग में मिलते हैं, होमर या कालिदास आदि लेखक इसीलिए आज भी प्रभावित करते हैं, क्योंकि उनकी रचनाओं में मानव जीवन के ऐसे पक्षों का बड़ा ही हृदयग्राही व मार्मिक चित्रण मिलता है।

लेकिन यदि कालातीत लेखन की बात छोड़ भी दी जाए, अपने ही समकालीन समय में भी लेखन की प्रभावक्षमता महत्व रखती है। समकालीन समाज में भी वही लेखन प्रभावी लेखन बनता है, जिसमें अपने समय के समाज की समस्याओं को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया हो, जिसमें अपने पाठक को अपने परिवेश से, अपने आसपास के पर्यावरण से, उसके अपने आन्तरिक व्यक्तित्व के गहरे तत्व में छुपे चेतन व अर्द्धचेतन मन के रहस्यों से उसे परिचित करवाया गया हो। ये बातें सृजनात्मक लेखन के संबंध में है।

गैर-सृजनात्मक या विचारात्मक लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य भी अपने पाठक को लेखन में प्रस्तुत विषय की अधिकाधिक जानकारी देना होना चाहिए। लेकिन यह जानकारी सरलता, स्पष्टता और गहराई से देने का प्रयास लेखक को करना चाहिए। लेखक को लेखन में ऐसी शैली विकसित करनी चाहिए कि उसके लेखन में अभिव्यक्त विचारों को साधारण से साधारण पाठक से लेकर विशिष्ट ज्ञान-संपन्न उच्च विद्वान तक समझ सकें। जिस लेखन में प्रस्तुत विषय को व्यावहारिक ढंग से समकालीन समस्याओं से जोड़ कर प्रयुक्त किया जाए, वह लेखन भी अक्सर सामान्य लेखन से अधिक प्रभावी लेखन सिद्ध होता है।

इस प्रकार यदि अपने लेखन में लेखक पूरी तरह स्पष्ट है, अपने लेखन विषय पर उसकी गहरी पकड़ है और लेखन में वह क्या कहना चाहता है, यह उसे पूरी तरह स्पष्ट है, यदि उसने अपने लेखन के लिए उपयुक्त रचना–शिल्प या रचना कौशल भी विकसित कर लिया है तो निश्चय ही वह अपने लेखन को अत्यंत प्रभावशाली बना सकने में सफल हो सकेगा।

प्रभावी लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य लेखन में प्रस्तुत विषय-वस्तु, भाव संवेदनाओं से लेकर विचारात्मक लेखन तक को अपने पाठक की भाव–संवेदना का हिस्सा बनाना, अपने विचारों से पाठक को 'कन्विन्स' करना और पाठक के साथ एक स्तर पर लेखन के जरिए संवाद स्थापित करना होता है। जो लेखक, इन उद्देश्यों को सामने रख कर लिखते हैं, उनका लेखन प्रभावी होने की संभावना रखता है।

बोध प्रश्न 2

1) रचना कौशल के प्रमुख पक्ष कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) रचना में वाक्यों की बनावट का महत्व पाँच पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) प्रभावी लेखन के क्या उद्देश्य हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

(क) अर्थ और भाव ..... के साथ चलते हैं।

(ख) मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग ..... ढंग से आवश्यक है।

(ग) शैली हमारे.....की.....है।

(घ) लेखक को.....के..... रूपों की जानकारी आवश्यक हैं।

(ड़) रचना का सौंदर्य.....व.....वाक्यों में अधिक आवश्यकता हैं

6.6 सारांश

इस पाठ्यक्रम की इस छठी इकाई में आपने प्रभावी लेखन की अवधारणा को समझा, प्रभावी लेखन के गुणों को समझने का प्रयास किया। प्रभावी लेखन को अनेक स्तरों पर समझने का प्रयास किया– विषय-वस्तु के स्तर पर व रचना शिल्प के स्तर पर। विषय संबंधी स्पष्ट ज्ञान होकर भी कई बार लेखक रचना कौशल का अभ्यास न करने से प्रभावी लेखन नहीं कर पाता। इसलिए विचार से भी बढ़ कर यहाँ प्रभावी लेखन के लिए शिल्पगत गुणों– भाषा, शब्द योजना, वाक्य विन्यास, मुहावरे, अलंकारों के प्रयोग आदि पर ध्यान आकर्षित किया है, साथ ही लेखक के अपने लक्ष्य या उद्देश्य के प्रति स्पष्ट होने पर भी जोर दिया है।

इस प्रकार इस इकाई में आपने प्रभावी लेखन को उसके बहुविध रूपों में समझने का प्रयास किया है, जिससे आप प्रभावी लेखन के गुणों को रेखांकित कर सकते हैं।

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. प्रभावी लेखन वह लेखन होता है जो पाठक को उस रचना को पढ़ने के बाद जीवन को तथा समस्याओं को नवीन दृष्टि से देखने की दृष्टि प्रदान कर सके। लेखन उसकी बुद्धि और उसके हृदय को भीतर तक प्रभावित कर सके।
2. क. (✓) ख. (×) ग. (✓)
3. साहित्य के संदर्भ में विषय या विषयवस्तु को ही 'प्लॉट' कहा जाता है। अधिक स्पष्टता के लिए देखिए भाग 6.3

बोध प्रश्न 2

1. रचना कौशल के प्रमुख पक्ष निम्नलिखित हैं–

   (i) भाषा पर अधिकार होना।

   (ii) लेखक की शब्दावली समृद्ध होना।

(iii) वाक्य विन्यास तथा शब्द योजना।

(iv) शैली।

(v) मुहावरों एवं लोकाक्तियों का समुचित प्रयोग।

(vi) प्रसंगानुकूल अलंकारों का प्रयोग।

(vii) व्याकरण की शुद्धता।

(viii) अर्थ और भाषा में अन्विति होना आवश्यक।

2. देखिए भाग 6.4.3

3. देखिए भाग 6.5

4. (क) भाषा (ख) औचित्यपूर्ण (ग) विचारों, वेषभूषा

(घ) भाषा, बहुविध (ड.) संक्षिप्त, स्पष्ट।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 रचना (कंपोजीशन) की तैयारी

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 रचना का अध्ययन (नमूना)

7.3 रचना के प्रकार

7.3.1 वर्णनात्मक लेखन

7.3.2 आख्यानपरक लेखन

7.3.3 तार्किक लेखन

7.4 रचना की तैयारी

7.4.1 विषय क्या है?

7.4.2 विषय का सीमा-निर्धारण

7.4.3 विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र करना

7.4.4 विषय की रूपरेखा बनाना

7.5 रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातें

7.5.1 रचना का प्रारंभ

7.5.2 विषय का विस्तार

7.5.3 रचना का अंत

7.6 सारांश

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

रचना करने से पहले विषय सामग्री एकत्रित करने से लेकर लेखन करते समय जिन बिन्दुओं एवं पक्षों का ध्यान रखा जाता है उनका विस्तृत विवेचन इस इकाई में किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- रचना के प्रकारों से परिचित हो सकेंगे,
- रचना के लेखन की तैयारी करते समय उससे संबद्ध विशेष बिन्दुओं की चर्चा कर सकेंगे।
- रचना करते समय जिन बातों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है उनका विवेचन कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इकाई 6 में आपने प्रभावी लेखन के संबंध में जानकारी प्राप्त की। जिस रचना को पढ़ने के बाद पाठक पर अपेक्षित प्रभाव पड़े तथा वे जीवन एवं समस्याओं को एक नयी दृष्टि से देखने को बाध्य हो जाए वह लेखन प्रभावी कहलाता है। किसी भी रचना या लेखन को प्रभावी बनाने के लिए रचनाकार को जिन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है उसकी चर्चा हम इस इकाई में करेंगे।

वस्तुतः रचना या कम्पोज़ीशन वह होती है जिसमें एक ढाँचे के अंतर्गत प्रारंभ से अंत तक विषय का सुसंगठित प्रस्तुतीकरण होता है। यह एक विषय के किसी एक बिन्दु से प्रारंभ होती है और फिर एक बंधे सुसंगठित तरीके से आगे बढ़ती है। विषय का प्रारंभ, विस्तार और अंत बहुत ही सुनियोजित होता है। रचना कोई भी हो सकती है। कविता, संगीत का कोई एक अंश, चित्रकारी, मूर्तिकला आदि भी रचना ही है। इस इकाई में हम रचना के जिस रूप की चर्चा करेंगे वह रचना के लेखन पक्ष से संबंधित है। रचनाकार किसी भी रूप में रचना कर सकता है और अपनी कल्पना और सुनियोजन से उसे एक विशिष्ट रूप दे सकता है।

आपने भी कभी न कभी रचना अवश्य की होगी, जिसमें अपने विचारों का समावेश किया होगा। विद्यालय में आपने अनेक निबंध भी लिखे होंगे। यह भी रचना या कम्पोज़ीशन का एक प्रकार है। निबंध का एक विशिष्ट आकार होता है जिसमें विषय वस्तु का विस्तार किया जाता है। वास्तव में किसी भी रचनाकार को अपने विषय के स्पष्ट और सुनियोजित प्रस्तुतीकरण के लिए उसका अपने विषय पर पूर्ण नियन्त्रण और सही सामग्री का चयन अत्यंत आवश्यक है। यह भी जरूरी है कि रचना का प्रारंभ करने से पहले वह उसका एक संगठित खाका पहले से तैयार कर लें। रचना का विस्तार विषय वस्तु के अनुसार अपने आप ही प्रथम अनुच्छेद के बाद होता है। पहला अनुच्छेद उसके विषय का प्रारंभ होता है। उसके बाद रचना अपने आप आगे बढ़ती है। कई बार जब आप एक अनुच्छेद लिखने बैठते हैं तो उस अनुच्छेद के समाप्त होने के बाद आपको लगता है कि आपको और भी बहुत कुछ कहना है, विषय के बारे में और भी विस्तार से उदाहरण देते हुए बताना है और यहीं से किसी रचना की शुरूआत होती है। अर्थात् कई बार किसी विषय विशेष पर चर्चा करने के लिए केवल एक ही अनुच्छेद उपयुक्त नहीं होता। कम्पोजीशन किसी अनुच्छेद से कहीं अधिक बड़ी और विस्तृत इकाई है। इसमें कई अनुच्छेद हो सकते हैं। इसमें विचारों की श्रृखंला होती है और उनमें तारतम्य होता है।

इस इकाई में हम उन प्रमुख पक्षों पर चर्चा करेंगे जिन्हें किसी रचना को प्रारम्भ करने से पहले, करते समय और उसका समापन करते समय ध्यान रखना आवश्यक है। कुछ ऐसी कठिनाइयाँ जो रचना करते समय लेखक के सामने आती हैं, उनका किस प्रकार निवारण किया जाए, उसका भी सुझाव देने का प्रयत्न करेंगे। इकाई के प्रारंभ में हम रचना का नमूना प्रस्तुत करेंगे और रचना के लेखन से संबंधित बिन्दुओं की चर्चा करते समय इसी रचना के अंशों को उदाहरण के रूप में बताएंगे।

7.2 रचना का अध्ययन (नमूना)

प्रदूषणः एक समस्या

वातावरण एवं वायु-मंडल का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में बड़ी ही तीव्रता से अपना प्रभाव जमाती जा रही है। आज समस्त मानव जाति इस समस्या से आतंकित है, और विश्व के प्रत्येक देश अपने-अपने ढंग से इस समस्या के सम्यक् समाधान में संलग्न है। प्रदूषण एक ऐसी विकट समस्या है, जिसका समुचित समाधान नहीं हो पा रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय रहते यदि तत्काल फैल रहे इस प्रदूषण को सही ढंग से नियंत्रित नहीं किया गया तो आगामी दशकों में सम्पूर्ण धरती किसी भी जीवधारी के रहने योग्य नहीं रहेगी। प्रदूषण का प्रभाव वनस्पतियों पर भी होगा और यह शस्यश्यामला धरती विकृत वनस्पतियों के कारण अपनी सम्पूर्ण सुन्दरता खो देगी।

प्रदूषण विभिन्न प्रकार से हमें प्रभावित कर रहा है। उनमें प्रमुख हैं– जल-प्रदूषण चाहे नदियों, नहरों, तालाबों या पानी के अन्य स्रोतों जहाँ से मानव पेय जल प्राप्त करता है या सागर या महासागरों का तटीय भाग जहाँ से खाद्य सामग्री जैसे – मत्स्य आदि

प्राप्त होते हैं, सभी विष से भर जायेंगे। पेय जल प्रदूषण समस्या आज हमारे सामने चुनौती है जिसका सामना हमें करना है।

वायु-प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल होती जा रही है कि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के बावजूद भी इस पर नियंत्रण पाना असंभव सा ही प्रतीत हो रहा है। वायु में मिली जहरीली गैस, धूल धुआँ से सुन्दर, कलात्मक एवं ऐतिहासिक महत्व के प्राचीन एवं नवीन भवन धीरे-धीरे अपनी सुन्दरता खोते जा रहे हैं। यह विष इतनी धीमी गति से हमारे जन जीवन में घुलता जा रहा है कि इसके दुष्परिणाम तत्काल तो नहीं दिखाई दे रहे हैं पर भविष्य में इनके प्रभाव से बचना कठिन हो जाएगा।

जब हम प्रदूषण के कारणों पर दृष्टि डालते हैं, तो कई तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आते हैं जिन्हें हम प्रदूषण के कारण कह सकते हैं। दिनों दिन बढ़ती औद्योगीकरण की प्रवृति तथा तरह-तरह के आणविक परीक्षण पर्यावरण की विकृति के प्रमुख कारण है। बड़े-बड़े कारखाने, फैक्टरियाँ तथा उनकी धुआँ उगलती बड़ी–बड़ी चिमनियाँ सम्पूर्ण वायुमंडल में व्याप्त प्राण-पोषक तत्वों की क्षति कर, विनाशक तथा विषैला तत्व घोलती जा रही हैं। कारखानों में प्रयुक्त जल अनेकों रासायनिक तत्वों से भरा होता है। जो नदियों से मिलकर पेय जल के पोषक तत्वों का विनाश कर रहा है। दिन-रात सड़क पर दौड़ती बसें, कारें, ट्रकें तथा पेट्रोल और डीज़ल चलने वाली अन्य मशीनों तथा वाहनों से निकला हुआ धुआँ तथा जहरीली गैसों का प्रभाव अत्यन्त व्यापक हैं जिनसे बचना आज संभव नहीं है।

अनेकों प्रकार के आणविक परीक्षण, चाहे वे समुद्र में हों या धरती पर, अपना अलग प्रभाव डाल रहे हैं। इन परीक्षणों से अनेकों नवीन बीमारियों का जन्म हो रहा है जिनसे सारा विश्व आतंकित है। इनका परिणाम बड़ा ही भयानक है।

ध्वनि प्रदूषण का परिणाम बड़ा ही घातक होता है। मानव मात्र में बढ़ता हुआ बहरापन इसी की देन है, जिससे सारा समाज चिंतित है और उसके समाधान में लगा हुआ है।

प्रदूषण के अन्य कई कारण भी हैं। अबाध गति से बढ़ती हुई जनसंख्या जिससे पृथ्वी का प्रत्येक कोना घिरता जा रहा है। खेतों, पेड़ों के निरन्तर और बेरोक-टोक कटाव के कारण हरियाली का अभाव और रेगिस्तानों का बढ़ना प्रदूषण की समस्या वृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं। वृक्ष हमारे सबसे कल्याणकारी एवं शुभचिन्तक मित्र हैं, यह हम भूल गए हैं और क्षणिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अपनी भौतिक भूख के शमन के लिए उन्हें बेदर्दी से काटते जा रहे हैं जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है।

प्रदूषण पर नियंत्रण सभी चाहते हैं। इसी से वैज्ञानिकों ने कई ऐसे उपकरण तैयार किए हैं जिनके प्रयोग से बड़े-बड़े कारखानों और फैक्टरियों में कुछ सीमा तक प्रदूषण को नियंत्रण में लाया जा रहा है। कारखानों तथा फैक्टरियों से निकलने वाले दूषित जल को नदियों या अन्यत्र खुले स्थानों पर न डालकर भूगर्भ में डाला जाए। कारखानों के मलवे को जलाकर या अन्य प्रकार से नष्ट कर उनके मारक प्रभाव से बचा जा सकता है। कारखानों से निरन्तर निकलने वाला धुआँ बस्तियों पर प्रभाव न डाल सके इसके लिए बस्तियाँ उनसे दूर बसाई जा सकती हैं। वृक्षों तथा वनों का कटाव रोककर बहुत कुछ प्रदूषण रोका जा रहा है। प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिए वनों का रखरखाव, वृक्षारोपण तथा हरित पट्टियों के निर्माण में अधिक धन लगाया जा रहा है।

जहाँ तक संभव हो प्रदूषण की विकट समस्या पर शीघ्र ही काबू पाना है। इसमें किसी भी प्रकार की देर हमारी विकसित और विकासशील सभ्यता एवं संस्कृति के लिए घातक हो सकती है। प्रदूषण के विनाश से बचने के लिए जितनी सावधानी हो सकती है, जितने संभव उपाय हो सकते हैं उनका पालन मानव मात्र का प्रथम कर्त्तव्य है। आवश्यकता है हमें सचेत होने की, जागरुक होने की।

7.3 रचना के प्रकार

रचना लेखन पर विस्तार से चर्चा करने से पहले आइए सबसे पहले हम रचना के कुछ प्रमुख प्रकारों के विषय में जानकारी प्राप्त करें। रचना के अलग-अलग प्रकारों का लेखन अलग-अलग तरीके से ही होता है। उसमें पृथक सोच और विषय-वस्तु के व्यवहार की आवश्यकता होती है।

उदाहरण

विषय–1 : साहित्य और समाज

विषय–2 : मेरी लंदन यात्रा

यहाँ उपर्युक्त दोनों विषयों पर एक तरह से नहीं लिखा जा सकता। विषय-1 में साहित्य और समाज के संबंध का सामान्य रूप से वर्णन करना है परन्तु विषय-2 पूरी तरह से व्यक्तिगत है। इसमें अपने व्यक्तिगत अनुभवों को ही अंकित करना है।

कई बार एक ही विषय पर अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखी गई रचना में भी अंतर होता है क्योंकि उनकी शैली और उनके विचार, अलग होते हैं। विषय को देखने और समझने की दृष्टि हर लेखक की पृथक होती है। जैसे हमने उदाहरण के तौर पर जो रचना पढ़ने को दी है – **प्रदू"ण% एक समस्या,** उसके लेखन का ढंग भी कई तरह से हो सकता है। यहाँ उसे एक निबंध की तरह लिखा गया है तथा तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट की गई है। कुछ लेखक उसे व्यंग्य की तरह भी लिख सकते हैं।

रचना के तीन प्रमुख प्रकार हैं– वर्णनात्मक लेखन, आख्यानपरक लेखन और तार्किक लेखन। रचना का हर प्रकार एक अलग तरह की भाषा, शैली और विषय से संबद्ध विशिष्ट सामग्री की मांग करता है। जब आप किसी विषय को रचना के लिए चुनते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि आप साथ ही यह भी निर्णय करें कि रचना के किस प्रकार में उस विषय का विस्तार करेंगे या रचना के कौन से प्रकार को उस विषय के लिए चुनेंगे। ये आवश्यक नहीं कि रचना का कोई भी प्रकार पूरी तरह से अपने में विशिष्ट हो। जब आप अपने विषय के लिए रचना के किसी एक विशिष्ट प्रकार को चुनेंगे तो वहीं यह भी देखेंगे कि अपने विषय के विस्तार में आपको रचना के अन्य प्रकारों की तकनीकों की भी सहायता लेनी पड़ी है।

7.3.1 वर्णनात्मक लेखन

यह रचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। इसमें लेखक किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या दृश्य का वर्णन करता है। किसी व्यक्ति का वर्णन करते समय यह अपेक्षित होता है कि वह उसकी चाल-ढाल, उम्र आदि के साथ-साथ उसके आंतरिक रूप का भी वर्णन करता चले। इसी प्रकार किसी स्थान के वर्णन में उसके वातावरण, वहाँ के लोग, माहौल, वहाँ के विशिष्ट भोजन आदि का भी वर्णन आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार के लेखन के लिए विशिष्ट शब्दावली एवं अभिव्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है।

उदाहरण

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगे अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई । ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराववाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी। परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में पीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

सभंवतः अब उसमें वन तथा स्वजाति का स्मृति संस्कार जगने लगा था। प्रायः सूने मैदान में वह गर्दन ऊँची करके किसी की आहट की प्रतीक्षा में खड़ी रहती। बासंती हवा बहने पर यह मूक प्रतीक्षा और अधिक मार्मिक हो उठती।

(सोना – महादेवी वर्मा)

7.3.2 आख्यानपरक लेखन

आख्यानपरक लेखन में लेखक वास्तविकता या कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं का अंकन करता है। लघुकथाएँ इसी लेखन के अंतर्गत आती है। इसमें लेखक के लिए यह आवश्यक होता है वह घटनाओं का उसी क्रम में वर्णन करे जिस क्रम में वे घटित हुई हैं साथ ही लेखक की अपनी दृष्टि भी उसमें द्रष्टव्य हो।

इस लेखन के उदाहरण के रूप में लघु कथा को लिया जा सकता है।

7.3.3 तार्किक लेखन

तार्किक लेखन का साधारण अर्थ है किसी विषय का वर्णन करना और अपने तर्क से स्पष्ट करना जिससे पाठक लेखक की बात को समझ जाए। यहाँ लेखक अपना उद्देश्य रखता है तथा अपने विचार बिंदुओं और दृष्टि से उसे स्पष्ट करता है।

उदाहरण–

जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है उसका सिर कभी ऊपर न होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतंत्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखें। जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

(आत्म निर्भरता– रामचंद्र शुक्ल)

यहाँ लेखक ने 'जिस पुरूष की दृष्टि सदा नीची रहती है उसका सिर कभी ऊपर न होगा' से अपनी बात कहनी प्रारम्भ की और आगे तर्क से उसे स्पष्ट किया।

7.4 रचना की तैयारी

जैसा कि हमने पहले ही स्पष्ट किया है कि रचना एक सुसंगठित एवं सुनियोजित तरीके से किया गया लेखन है। आइए, अब हम देखें कि किस प्रकार विषय से संबद्ध सामग्री को संगठित करना है। रचना करने से पहले आपको यह जानना आवश्यक है कि आप किसके लिए लेखन करने जा रहे हैं। आपका पाठक कौन होगा, जब आपको इस विषय में पूरी जानकारी होगी तभी आप अपने विशिष्ट पाठक वर्ग की आवश्यकताओं और स्तर को ध्यान में रख सकते हैं। यदि आप बच्चों के लिए लेखन करने जा रहे हैं और उसमें कठिन शब्दों का प्रयोग करें और विषय भी राजनीति या अध्यात्म से संबंधित रखें तो वह बच्चों के स्तर के उपयुक्त नहीं होगा और उनके लिए उपयोगी भी नहीं होगा। अपना लेखन प्रारंभ करने से पहले स्वयं से कुछ प्रश्न पूछें–

- लेखन किसके लिए और क्यों?
- आपका लेखन उन्हें कैसे प्रभावित कर सकता है?
- पाठक को विषय के संबंध में से पहले से कितनी जानकारी होगी?

साथ ही, आपके पास अपने विषय से संबंधित उपयुक्त जानकारी भी होनी आवश्यक है जिससे आप उस विषय पर अनेक अनुच्छेदों में विस्तार से चर्चा कर सकें तथा पाठक तक अपना मंतव्य प्रेषित कर सकें। आपको अपने विषय के बारे में पूरी स्पष्ट जानकारी भी होनी चाहिए जिससे आप विषय को परिभाषित कर सकें, उचित उदाहरणों द्वारा उसे स्पष्ट कर सकें और उसे उचित विस्तार दे सकें। उदाहरण के लिए 'प्रदूषण एक समस्या' विषय पर यदि आप लेखन करने जा रहे हैं तो आपको इन बिन्दुओं की जानकारी होना अत्यावश्यक है–

- प्रदूषण क्या है?
- प्रदूषण हमें कैसे प्रभावित करता है?
- प्रदूषण के कारण
- प्रदूषण की समस्या पर नियन्त्रण के उपाय

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं पर प्रामाणिक जानकारी होने के बाद ही आप एक सफल रचना कर सकते हैं।

7.4.1 विषय क्या है?

किसी भी रचना का प्रारंभ करने से पहले आपको अपने विषय का चयन करना अत्यावश्यक है। विषय चयन करते समय आपको अपने पाठक वर्ग के बारे में जानना जरूरी है। वह पाठक एक बच्चा हो सकता है, एक पढ़ा लिखा वयस्क हो सकता है, जिस विषय पर आप लेखन करने जा रहे हैं उस क्षेत्र का विद्वान या विशेषज्ञ हो सकता है, एक किसान भी हो सकता है, या घरेलू महिला भी हो सकती है। पाठक वर्ग के साथ-साथ आपको अपने विषय के क्षेत्र की भी पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। ऐसा होने पर ही आप अपने विषय के साथ न्याय कर सकेंगे और पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे। आपके विषय चयन के संबंध में हम निम्नलिखित सुझाव दे रहे हैं जिससे कि आपको अपनी रचना के लिए विषय ढूँढने में सहायता मिल सकती है–

1. समाचार पत्र, पत्रिकाएँ पढ़ने तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से भी आपको प्रतिदिन की घटनाओं, समस्याओं आदि की सूचना एवं जानकारी प्राप्त होगी। जो ज्वलंत समस्याएँ एवं घटनाएँ रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करती हैं तथा समय में बदलाव लाने का कारण बनती हैं वे भी आपकी रचना का एक महत्वपूर्ण विषय हो सकती हैं। कारगिल के युद्ध की त्रासदी या बिहार में मानसून के कारण आई बाढ़ से पीड़ित समाज भी रचना का विषय हो सकता है जो हर वक्त बाढ़ के साए में जीते हैं। आपकी रचना पाठक के हृदय को झकझोर भी सकती है। आपके लेखन की भावात्मकता और यथार्थ चित्रण पाठक को उन दुःखद स्थितियों से तादात्म्य स्थापित करा सकते हैं।

2. अपने मित्रों या सहकर्मियों के साथ चर्चा या बातचीत भी आपके मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न कर सकती है। आपको ऐसी चर्चाओं से अलग-अलग दृष्टियों की उपयुक्त जानकारी भी प्राप्त हो सकती है, तथा आप अन्य व्यक्तियों के विचारों एवं दृष्टियों से भी अवगत हो सकते हैं।

3. कुछ विषय ऐसे होते हैं जो विशिष्ट पात्रों एवं विषयों जैसे इतिहास, विज्ञान, खेल साहित्य आदि से संबंद्ध होते हैं। ऐसे विशिष्ट विषयों की जानकारी के लिए आपको लाइब्रेरी, म्यूजियम या विविध संस्थानों का भ्रमण करना आवश्यक है जिससे आप उस विषय की स्पष्ट तथा सही जानकारी दे सकें। साथ ही उन व्यक्तियों से मिलना भी चाहिए जो इस क्षेत्र में कार्य करते हो या जिन के लिए आप लेखन

करने जा रहे हों। उदाहरण के लिए यदि आप बंधुआ मजदूरों या बाल मजदूरों को अपनी रचना का विषय बनाने वाले हों तो आपके लिए यह आवश्यक होगा कि आप ऐसे कुछ मज़दूरों और बच्चों से मिलें तथा उनकी समस्याओं एवं कष्टों की जानकारी प्राप्त करें।

वस्तुतः रचना के लिए विषय ढूँढ़ने की कोई सीमा नहीं है। आप कहीं से भी किसी भी रूप में रचना का विषय खोज सकते हैं। यहाँ हम आपको कुछ सुझाव दे रहे हैं जिससे आपको विषय चुनने में सहायता मिल सके। आप जब विषय की खोज करेंगे तो एक ही क्षेत्र में आपको अनेक विषय मिलेंगे परन्तु उनमें से किसे चुनकर आप अपनी रचना करें इस संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव आपके लिए सहायक हो सकते हैं–

1. सबसे पहले उसी क्षेत्र का चयन करें जो आपकी पसंद का हो तथा जिस पर आप चिन्तन कर सकते हो। ऐसा होने पर ही आप लेखन के साथ न्याय कर पाएँगे और पाठक भी विषय को समझ कर प्रभावित हो सकेगा।

2. वही विषय चुनें जिस पर आपने गंभीरता से अध्ययन किया हो और आपको उस विषय की पूर्ण जानकारी हो।

3. यदि कोई विषय आपकी पसंद का न हो परन्तु उस पर काफी कुछ जानकारी रखते हो तो भी उस विषय पर लेखन न करें क्योंकि आप उस विषय का प्रस्तुतीकरण ठीक से नहीं कर पाएंगे और पाठक भी उसे अधिक पढ़ना पसंद नहीं करेगा क्योंकि आपकी नापसंदगी उसमें कहीं न कही अवश्य झलकेगी। वह विषय आप जिस पर आप खुलकर लिख सकते हो तथा पाठक के समक्ष अपनी बात पूरे विश्वास के साथ रख सकते हो, ऐसा विषय ही अपने लेखन के लिए चुनें।

7.4.2 विषय का सीमा-निर्धारण

कई बार ऐसा देखा जाता है कि जब कोई छात्र रचना के लिए किसी विषय का चुनाव करता है तो वह अत्यंत सामान्य और विस्तार लिए होता है। उसमें अनुभवों और तथ्यों का एक विस्तृत क्षेत्र होता है जिन्हें आसानी से समेटा नहीं जा सकता। यही कारण है कि ऐसी रचनाओं में एक अनपेक्षित फैलाव आ जाता है। वह किसी विषय विशेष की चर्चा करने की बजाय सामान्य चर्चा करने लगते हैं। उस रचना में अनेक ऐसे सामान्य कथन होते हैं जिनमें सभी कथनों का उदाहरण या चित्रों द्वारा समर्थन करना असंभव सा प्रतीत होता है। अतः विषय का चयन करने के पश्चात अगला महत्वपूर्ण कार्य है विषय की सीमा का निर्धारण करना जिससे आप अपने कथनों और प्रमुख बिन्दुओं को उदाहरणों द्वारा भली प्रकार से समझा सकें। जब आप अपनी रचना के लिए विषय का चयन कर लेते हैं तथा उसकी सीमा निर्धारित कर देते हैं तब आपको अनावश्यक बिन्दुओं एवं सामग्री को रचना से निकालने या हटाने में आसानी रहती है।

उदाहरण के लिए यदि आप 'टेलीविजन' पर रचना करना चाहते हैं तो आपको टेलीविजन के हर पहलू को रचना में समाहित करना होगा। टेलीविजन की बनावट, उसकी मशीनरी, उसके अनेक प्रकार, उसके लाभ, हानि, बढ़ते प्रभाव सभी पर आपको लिखना होगा जिससे आपके लेखन में फैलाव आ जाएगा और आप ठीक से अपनी बात नहीं समझा पाएँगे। लेकिन यदि आप अपने विषय को एक परिधि में बांधने के लिए केवल टेलीविजन की लाभ हानियों पर बात करेंगे तो आप स्पष्ट रूप से उसी पक्ष को लेकर चलेंगे और पाठक को अपना मन्तव्य स्पष्ट कर सकेंगे क्योंकि तब आपके विषय की सीमा केवल टेलीविजन के लाभ हानि तक ही सीमित होगी।

अतः जब विषय की सीमा निर्धारित होती है तब उसके पहले अनुच्छेद में विषय की संक्षिप्त चर्चा करके उसके प्रमुख बिन्दु को पूरी रचना में आसानी से विस्तार दिया जा सकता है और आपके समक्ष यह भी स्पष्ट रहता है कि विषय के किस–किस पक्ष को कौन–कौन से अनुच्छेदों में विभाजित करना है।

7.4.3 विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र करना

जब आप अपने विषय की सीमा निर्धारित करते हैं और अनावश्यक सामग्री को छोड़ते हैं तब आप इस कोशिश में एक नई भाषा-शैली का भी निर्माण करते हैं। साथ ही आप पूरे विषय को इस प्रकार नियोजित करते हैं कि वह आपके मंतव्य के निकट आता जाता है। आप जो पाठक को संप्रेषित करना चाहते हैं वह स्पष्ट होता चला जाता है। ऐसा करते हुए आप अपनी सूचनाओं एवं तथ्यों को विविध स्थानों से एकत्र कर उन्हें सुनियोजित करते हैं। जब आप अपने विषय का सीमा निर्धारण करते हैं तो उस समय आपके समक्ष यह स्पष्ट हो जाता है कि आपको कौन-कौन सी रचनाएँ तथा तथ्य इस रचना में समाहित करने हैं। उनका किस प्रकार नियोजन करना है।

खंड 7.4.1 में हमने आपको विषय तथा उससे संबद्ध सूचना एकत्र करने के कुछ स्रोतों के सुझाव दिए थे। इन सुझावों के अतिरिक्त आपको अपनी समझ, चिन्तन और विचारों का अधिकाधिक उपयोग भी करना चाहिए। सूचनाएँ एकत्र करके उसमें नवीन दृष्टि का भी समावेश करना चाहिए। ऐसा करने से ही आपकी रचना विशिष्ट और नवीन होगी। आपकी दृष्टि आपकी रचना को दूसरी रचनाओं से अलग और विशिष्ट करेगी। तभी वह लेखन प्रभावी भी होगा।

इसके लिए आवश्यक है कि सबसे पहले तथ्यों को सुनियोजित किया जाए। जब आप सभी सूचनाओं एवं तथ्यों को सही ढंग से नियोजित कर लेंगे तो देखेंगे कि जो सूचनाएँ, तथ्य, चित्र, विचार दूसरों की राय आदि आपने अपने मस्तिष्क या कागज़ पर एकत्र की है उन्हें लेखन करने से पहले किसी विशेष क्रम में लाना आवश्यक है। ऐसा इसीलिए आवश्यक है क्योंकि–

- जो विचार और तथ्य आपने एकत्र किए हैं, आवश्यक नहीं कि सभी आपके विषय से सीधे संबद्ध हों। उनमें से कुछ अनावश्यक भी हो सकते हैं जिन्हें आप को छोड़ना होगा।

- कुछ ऐसे भी बिन्दु हो सकते हैं जिनके बारे में लिखना आवश्यक नहीं है।

- कुछ ऐसी भी सूचनाएँ हो सकती हैं जिनके बारे में पहले भी बहुत बार चर्चा की जा चुकी है और उनका लेखन अनावश्यक ही हो।

- आपको ऐसा भी प्रतीत हो कि जो सूचनाएँ एवं तथ्य आपने एकत्र किए हैं वे पर्याप्त न हों तथा उनके आधार पर एक अच्छी रचना की ही न जा सके क्योंकि तथ्य और सूचनाएँ ही एक रचना को प्रभावशाली बनाते हैं। अतः आपको और भी अधिक जानकारियों एवं तथ्यों की आवश्यकता पड़ सकती है।

- कुछ ऐसे चिन्तन या विचार हो सकते हैं जिसके बारे में आपकी राय कुछ अलग हो और आप अपनी दृष्टि भी उसमें समाहित करना चाहें।

अब तक जो भी सूचनाएँ एवं तथ्य आपने एकत्र कर लिए हैं उन्हें विषय के अलग-अलग खंडों में बाँटना आवश्यक है। जो भी सूचनाएँ विषय के जिस खंड से संबद्ध हैं उन्हें उन खंडों में विभाजित कर लीजिए। हम कुछ निर्देशों द्वारा बताने जा रहे हैं कि आप एकत्र की गई सूचनाओं एवं तथ्यों को किस प्रकार विविध भागों या खंडों में विभाजित करें। हमें आशा है कि निम्नलिखित बिन्दु आपकी सूचनाओं के लिए एक खाका बनाने में अवश्य सहायता करेंगे जो किसी भी रचना से पहले की तैयारी का अत्यंत आवश्यक पक्ष है।

1. सबसे पहले आपने अपना जो विषय चुना है उसके शीर्षक में से उन शब्दों को रेखांकित करें जिन पर आपको रचना में चर्चा करनी है। उदाहरण के लिए आपने अपनी रचना का शीर्षक चुना– छात्रों में बढ़ता कम्प्यूटर का प्रभाव। यहाँ आप

अपने विषय में कम्प्यूटर के प्रभाव की बात करना चाहते हैं और वह भी विशेषकर छात्रों के संदर्भ में। कई बार विद्यार्थी अपने शीर्षक में दिए गए उन विशेष शब्दों को छोड़ देते हैं जिन पर उनकी रचना निर्भर है। इस तरह उनकी रचना मुख्य धुरी या विषय से भटक जाती है।

2. अपनी रचना के शीर्षक पर ध्यान केन्द्रित करें तथा अपने मन में उठने वाले उसके मुख्य बिन्दुओं तथा विचारों को कागज़ पर लिखते चले जाएँ। कई बार रचना करते समय विचार छूट जाते हैं। अतः जब भी कोई विचार उस शीर्षक से संबद्ध हो उसे तुरन्त लिख लें जिससे कि बाद में रचना करते समय आसानी रहे।

3. वे सारे विचार, तथ्य और सुझाव जो एक दूसरे से मिलते जुलते हों उन्हें एक ही खंड में रखें और बाद में उन्हें सही क्रम से नियोजित कर लें।

4. जब सारे विचार और तथ्य अलग-अलग खंडों में विभाजित हो जाएँ तो उस समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि उन खंडों को भी इस तरह क्रम में व्यवस्थित किया जाए कि वे एक दूसरे से संबद्ध भी हों। इस व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि:

   - वे कालक्रमानुसार विभाजित हों
   - कारण और प्रभाव पर आधारित हों,
   - विषय के लिए एकत्र की गई सामग्री के महत्व के अनुसार ही उन्हें नियोजित किया जाए। उदाहरण के लिए यदि **प्रदूषण : एक समस्या** शीर्षक है तो विषय के अंतर्गत पहले प्रदूषण पर चर्चा करें, फिर कारण पर, और अंत में निदान पर।

अब तक आप अपनी रचना के शीर्षक को भली प्रकार समझकर उससे संबद्ध सामग्री एकत्र कर चुके होंगे तथा उसका उचित रूप से खंडों में विभाजन भी कर चुके होंगे। आपको यह भी पता चल गया होगा कि कहाँ से आप अपनी रचना प्रारंभ करेंगे और किस खंड पर उसका समापन करेंगे। अब तक शायद आपने पहला वाक्य लिख भी लिया होगा। लेकिन अभी आप अपनी रचना का प्रारंभ न करें। अभी तो आपको अपने विषय की रूपरेखा भी बनानी है तभी आप पूरी तरह से रचना का लेखन करने के लिए तैयार हो सकेंगे।

रूपरेखा तैयार करने से पहले आइए एक बार फिर एक उदाहरण द्वारा अपने एकत्रित विचारों, तथ्यों एवं सूचनाओं को खंडों में विभाजित करना समझें।

उदाहरण: हमने जो नमूने के तौर पर आपको खंड 7.2 में रचना दी है– 'प्रदूषण : एक समस्या' आइए उसके मुख्य विचारों को खंडो में विभाजित करते हैं:

खंड 1 प्रदूषण

1. प्रदूषण
2. प्रदूषण का प्रभाव
3. प्रदूषण के प्रकार

खंड 2 प्रदूषण के कारण

1. औद्योगीकरण
2. आणविक परीक्षण

3. ध्वनि प्रदूषण

4. वृक्षों का कटाव

खंड 3 प्रदूषण का समाधान

1. उद्योगों में

2. प्राकृतिक संतुलन में

आपने देखा कि यहाँ एक खंड से दूसरे खंड में विचारों का एक सरल प्रवाह है। कहीं भी उनका क्रम टूटा नहीं है। एक बिंदु दूसरे बिंदु से जुड़ा है और विषय को बढ़ाने में सहायक है। अब आप जान चुके होंगे कि विचारों तथा तथ्यों को समूहों में बाँटने से हमें उन्हें एक दूसरे से संबंद्ध करने में भी आसानी रहती है। हाँ, यह आवश्यक नहीं कि आप प्रत्येक विचार या तथ्य को एक अलग अनुच्छेद में रखें। उन्हें एक बड़े अनुच्छेद के अंतर्गत भी रखा जा सकता है।

7.4.4 विषय की रूपरेखा बनाना

अभी तक आपने अपनी रचना के शीर्षक का चुनाव कर लिया, विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र कर ली है और उन्हें विषय के अनुसार विविध खंडों में विभाजित भी कर लिया है। अब लेखन से पहले के अंतिम चरण अर्थात् विषय की रूपरेखा बनाना, आपके लिए बाकी है।

किसी भी विषय पर रचना करने के लिए उसकी रूपरेखा बनाने से समय की बचत भी होती है तथा आप विषय से इतर भटकने से बच जाते हैं। जिन बिन्दुओं को आपको अपनी रचना में समाहित करना है उन्हें रूपरेखा में इंगित कर देने से रचना करते समय आप अपने मंतव्य को स्पष्ट करने में पूर्ण सफल होते हैं। आपको पता रहता है कि रचना को कितने अनुच्छेदों में बांटना है और कौन-कौन से क्षेत्रों को उन अनुच्छेदों में समेटना है।

यदि आप अपने विषय की स्पष्ट और सटीक रूपरेखा तैयार करेंगे तो आपको अपनी रचना को बार-बार पढ़कर उसके बिन्दुओं को बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही आप शीर्षक में उठाए गए मुख्य बिन्दुओं से भटकेंगे नहीं और अपने विषय को सही दिशा दे सकेंगे। यदि आपने अच्छी रूपरेखा तैयार की है तो आप अपने विचारों एवं सूचनाओं को दोहराने से भी बच जाएँगे क्योंकि आपको रचना में अपने विषय से संबंधित अनेक सूचनाएँ एवं तथ्य पाठक को बताने हैं न कि एक सूचना या तथ्य का बार-बार दोहराव करना है। यदि रचना जटिल हो तो उसके लिए रूपरेखा बनाना अत्यावश्यक है क्योंकि इससे आपको भी स्पष्ट हो जाएगा कि जिस विषय पर आप चर्चा करना चाहते हैं उसके मुख्य बिंदु कौन-कौन से होने चाहिए और उसे कहाँ से प्रारंभ करना है, उसका विस्तार कैसे करना है और उसका समापन कैसे करना है।

बोध प्रश्न 1

1. रचना के प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2. किसी भी रचना के लिए विषय का चयन करते समय किन बातों को जानना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. रचना का विषय चयन करने के लिए कहाँ–कहाँ से सहायता ली जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

4. हाँ या ना में उत्तर दीजिए:

(क) विषय की सीमा का निर्धारण उसमें अनावश्यक फैलाव को बचाता है। ( )

(ख) विषय की रूपरेखा बनाने से समय की बचत होती है तथा विचारों एवं सूचनाओं को दोहराव नहीं होता। ( )

(ग) सारे विचार, तथ्य एवं सूचनाएँ और सुझाव, जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हों उन्हें एक ही खंड में लिखना चाहिए। ( )

(घ) कुछ ऐसी सूचनाएँ जिनके बारे में अन्यत्र चर्चा की जा चुकी हो, का लेखन भी आवश्यक है। ( )

7.5 रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातें

रचना प्रभावी तभी हो सकती है जब उसकी तैयारी पूरी सावधानी से और उसका संगठन सुनियोजित तरीके से किया गया हो। उसका शीर्षक पूरी रचना के विषय को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता हो और रचनाकार अपने मंतव्य में सफल हुआ हो। एक रचना में लेखक द्वारा किया गया अनुच्छेदों का बँटवारा भी रचना को प्रभावी बनाता है। रचना में अनुच्छेदों का क्या महत्व होता है इस विषय पर हम निम्नलिखित बिन्दुओं में चर्चा करेंगे जो आपके लेखन के लिए सहायक हो सकते हैं–

- रचना के प्रत्येक अनुच्छेद से एक नया विचार प्रकट होता है जो शीर्षक से पूरी तरह संबद्ध होता है और विषय के विस्तार में सहायक होता है।
- एक अनुच्छेद उतना ही बड़ा हो जितने में उस रचना के शीर्षक से संबद्ध किसी तथ्य, सूचना या चिन्तन की चर्चा की गई हो। जहाँ कहीं भी दूसरी सूचना या तथ्य का प्रारंभ हो या विषय से संबद्ध किसी नवीन चिन्तन की चर्चा करनी हो वहीं से दूसरा अनुच्छेद प्रारंभ कर देना चाहिए।

- जैसा कि हमने पहले भी संकेत किया है कि प्रत्येक अनुच्छेद के बीच में एक सूत्र अवश्य हो। ऐसा न हो कि आपने एक अनुच्छेद समाप्त किया और नया अनुच्छेद बिल्कुल ही नयी सूचना से प्रारंभ किया दोनों अनुच्छेदों को सूत्र वाक्य से जोड़कर ही नया तथ्य या सूचना सामने रखें।

आइए अब देखें कि इस पूरी तैयारी के बाद रचना करते समय और कौन-कौन सी बातें हैं जिन्हें ध्यान देना आवश्यक है। किसी भी रचना का लेखन करते समय मुख्यतः तीन बातों का ध्यान देना आवश्यक है – प्रारंभ, विस्तार एवं अंत या निष्कर्ष। हाँ, एक बात और! किसी भी रचना का प्रारंभ करने से पहले उसके शीर्षक का चुनाव अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। शीर्षक छोटा, विषय के बारे में जानकारी देने वाला और स्पष्ट होना चाहिए, जिससे कि पाठक को शीर्षक के माध्यम से ही रचना के मुख्य विषय की जानकारी मिल सके। शीर्षक ऐसा हो कि जिसे पढ़कर पाठक के मन में उस विषय को जानने की जिज्ञासा और रचना को पढ़ने की में लालसा पैदा हो सके।

7.5.1 रचना का प्रारंभ

किसी भी रचना का प्रारंभ प्रस्तावना से किया जाता है। यह रचना में निहित मुख्य विषय का परिचय देता है। एक तरह से भूमिका का कार्य करता है। किसी भी रचना की भूमिका या प्रारंभ आवश्यक नहीं कि एक ही अनुच्छेद तक सीमित हो। यह एक दो पंक्तियों का भी हो सकता है और एक दो अनुच्छेदों का भी। वस्तुतः प्रस्तावना या भूमिका की लंबाई उस रचना या विषय की लंबाई पर निर्भर करती है। कई बार विषय को किसी भूमिका की आवश्यकता नहीं होती तो उसे बिना किसी प्रारंभिक अनुच्छेद या पंक्ति के सीधे ही प्रारंभ कर सकते हैं। आइए अब हम रचना की प्रस्तावना या भूमिका या उसके पहले अनुच्छेद की चर्चा करें जो पाठक को विषय से परिचित कराता है।

वस्तुतः रचना का प्रथम अनुच्छेद विषय की भूमिका या प्रस्तावना का कार्य करता है अतः यह आवश्यक है कि उसमें विषय के मुख्य विचार का अंकन हो तथा पाठक को यह जानकारी प्राप्त हो सके कि लेखक इस रचना में विषय के किस पक्ष पर चर्चा करने जा रहा है। ऐसा अनेक प्रकार से किया जा सकता है। इसमें विचारों का वर्णन हो सकता है, तर्क हो सकते हैं या विवरण हो सकता है। उदाहरण :

> **वातावरण एवं वायुमंडल का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण की समस्या संपूर्ण विश्व में बड़ी ही तीव्रता से अपना प्रभाव जमाती जा रही है। आज समस्त मानव जाति इस समस्या से आतंकित है और विश्व के प्रत्येक देश अपने-अपने ढंग से इस समस्या के सम्यक समाधान में संलग्न हैं। प्रदूषण एक ऐसी विकट समस्या है जिसका समाधान नहीं हो पा रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय रहते यदि तत्काल फैल रहे इस प्रदूषण को सही ढंग से नियंत्रित नहीं किया गया तो आगामी दशकों में संपूर्ण धरती किसी भी जीवधारी के रहने योग्य नहीं रहेगी।**

इस भूमिका से न केवल रचना का मूल विषय स्पष्ट हो गया है बल्कि लेखक के मंतव्य की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई है। यह भी पता चल गया है कि लेखक रचना में प्रदूषण की समस्या और समाधान पर विचार प्रकट करने वाला है।

7.5.2 विषय का विस्तार

अब तक आपके पहले अनुच्छेद में विषय की जानकारी दी, उसकी सीमा निर्धारित की और पाठक के मन में विषय के प्रति जिज्ञासा को बढ़ाया। उसके मन में उस रचना को पढ़ने की इच्छा जाग्रत की। अब आपको रचना में अपने विषय का विस्तार करना है। और ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करना है जो आपके विचारों एवं मंतव्य को स्पष्ट रूप से प्रकट कर सके। ऐसा सब होने के बाद ही पाठक रचना में निहित विषय से संबद्ध

विचारों एवं चिंतन को समझ सकेगा और विषय के बारे में आपकी सोच से परिचित हो सकेगा।

किसी भी रचना में विषय के विस्तार के लिए उदाहरणों का विस्तृत वर्णन तथा परिभाषाओं आदि का प्रयोग किया जाता है। किसी भी विषय के विस्तार का सबसे आसान तरीका उदाहरणों द्वारा अपनी बात की पुष्टि करना है। जब कोई लेखक अपनी रचना में उदाहरणों का प्रयोग करता है तब वह कठिन से कठिन विषय के प्रति पाठक में रुचि भी पैदा करता है उदाहरण–

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़ चित्त मनुष्य हो गए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चंद्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आईं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही थी–

चंद्र टरें, सूरज टरें, टरें जगत् व्यवहार।

पै दृढ़ श्री हरिश्चंद्र को, टरे न सत्य विचार।।

महाराणा प्रतापसिंह जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परंतु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा जितनी अपने को हो सकती है उतनी दूसरे को नहीं।

(आत्म-निर्भरता, रामचंद्र शुक्ल)

यहाँ लेखक ने अपनी रचना में दृढ़ चित्त मनुष्यों की बात की जिन्होंने सत्य को नहीं छोड़ा और आत्मा के विरूद्ध कार्य नहीं किया और अपनी बात को दो उदाहरणों, राजा हरिश्चंद्र एवं महाराणा प्रतापसिंह के माध्यम से आगे बढ़ाया। रचना में विस्तृत वर्णनों के द्वारा भी विषय का विस्तार करने में सहायता मिलती है। आप व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदतों या किसी भी परिस्थिति का वर्णन कर सकते हैं। यदि किसी दुर्घटना के विषय में लिखना है तो उसका पूरा वर्णन करना अपेक्षित होता है। वर्णन करने में उस स्थिति या व्यक्ति, स्थान आदि की पूरी ठीक-ठीक जानकारी अपेक्षित होती है। उदाहरण :

पड़ती हुई बर्फ का दृश्य बड़ा मोहक होता है। जो बादल हरिद्वार और दिल्ली में पानी की बूँदें बरसाते हैं, वे ही बहुत ठंड पड़ने पर डेढ़-दो हजार मीटर ऊपर की जगहों में बर्फ बनकर गिरने लगते हैं। मसूरी में भी आकाश का तापमान जब तक शून्य डिग्री (से.) से नीचे नहीं होता, बादल जलवृष्टि के ही रूप में उतरता है। आकाश का तापमान यदि हिमबिन्दु से नीचे हो, लेकिन पृथ्वी का तापमान उतना नीचा न हो तो बर्फ के छोटे-छोटे कण पृथ्वी पर पहुँचते ही विलीन होकर जल बन जाते हैं। मसूरी में जलवृष्टि के निम्न तापमान में बजरी (नरम छोटे-छोटे ओलों) का रूप लेती है; और भी अधिक शीतलता होने पर हिम रूई के फाहों का रूप लेती है। हल्की-सी हवा चल रही हो तो ये फाहे हवा में तैरते हुए तिरछे चलकर पृथ्वी पर उतरते हैं। चाँदनी रात में हिम वृष्टि हो तो दृश्य और भी सुंदर होता है। चाँदनी में हिमकणों या फाहों का स्वरूप और रंग निखर आता है।

(हिमपात, राहुल सांकृत्यायन)

यहाँ लेखक ने मसूरी में पड़ने वाली बर्फ के विषय में जानकारी दी है और ताजी पड़ने वाली बर्फ के सौन्दर्य का वर्णन किया है जो हमारी जानकारी बढ़ाता है।

7.5.3 रचना का अंत

अब तक आपने अपने विषय का पूरा विस्तार अपनी रचना में कर लिया है। जो आपका मंतव्य था उसकी आप पूरे विस्तार के साथ चर्चा कर चुके हैं। अब आप अपनी रचना को समाप्त करना चाहते हैं। लेकिन किसी भी रचना का समापन या अंत अचानक नहीं किया जा सकता। रचना का अंत करने से पहले निष्कर्ष या सारांश का अनुच्छेद लिखना आवश्यक है। क्योंकि किसी भी प्रभावी रचना के लिए पहला और अंतिम अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण होता है। प्रथम अनुच्छेद विषय को प्रारंभ करता है और अंतिम अनुच्छेद निष्कर्ष होता है। कुछ बिन्दु या पक्ष ऐसे होते हैं जिन्हें आप समझते हैं कि आप के पाठक को याद रहे। इन पक्षों या बिन्दुओं को आप अंतिम अनुच्छेद में अंकित कर सकते हैं। इस अनुच्छेद में आप कुछ विचारों, तथ्यों, सूचनाओं, सुझावों, राय, निर्णय आदि का समावेश कर सकते हैं।

रचना का प्रारंभ जहाँ पाठक को विषय के प्रति जानकारी देता है और उसकी जिज्ञासा बढ़ाता है वहीं रचना का अंत सभी मुख्य विचारों और सूचनाओं का संक्षेपण होता है।

किसी भी वर्णनात्मक आख्यानपरक रचना में अंत किसी भी वर्णन या आख्यान के बाद स्वयं ही आ जाता है। जैसे यदि हिमपात होने का वर्णन कर रहे हैं तो जब हिमपात हो चुका हो तो वहाँ आपकी रचना का भी अंत हो जाएगा। उसी प्रकार यदि कोई कहानी लिख रहे हैं तो उसका अपना एक विशेष अंत होगा उसमें आपको अपनी तरफ से सारांश या निष्कर्ष बताने की आवश्यकता नहीं होगी। उदाहरण–

> **कुम्हार को लगा कि इन लोगों का कहना भी ठीक है। वह गधे की पीठ से उतरा। बेटे को भी उतार दिया। इसके बाद उसने थोड़ी सी रूई जेब से निकाली। दोनों कानों में रूई ठूँस ली। उसके बाद गधे को अपने कंधे पर उठाकर चलने लगा। रास्ते में जो मिलता हँसता। कुम्हार को कुछ भी सुनाई नहीं देता था। "वह मन ही मन कह रहा था," सब ठीक कहते हैं। सबकी सलाह अच्छी है। पर मैं वही करूँगा जो मुझे अच्छा लगे। लोगों को क्या वे तो कुछ न कुछ कहेंगे।**

यह तो आख्यानक रचना का उदाहरण है अतः इसका निष्कर्ष बताने की आवश्यकता नहीं परन्तु यदि आप तार्किक या वर्णनात्मक लेखन कर रहे हैं तो रचना के अंत में अपने सुझाव या राय भी दी जा सकती है जो पाठक के मन में नयी संभावनाओं को जगा सके और वह एक निर्णय पर पहुँच सके। उदाहरण :

> **जहाँ तक संभव हो सके प्रदूषण की विकट समस्या पर शीघ्र ही काबू पाना है। इसमें किसी भी प्रकार की देर हमारी विकसित और विकासशील सभ्यता एवं संस्कृति के लिए घातक हो सकता है। प्रदूषण के विनाश से बचने के लिए सावधानी हो सकती है, जितने संभव उपाय हो सकते हैं, उनका पालन मानव मात्र का प्रथम कर्त्तव्य है। आवश्यकता है हमें सचेत होने की, जागरुक होने की।**

अपनी रचना के अंत में कुछ शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करने से बचे जैसे– सारांश में, अच्छा अब मैं यह कहते हुए अंत करता/करती हूँ, अंत में कहती/कहता हूँ कि आदि।

रचना के अंतिम अनुच्छेद में किसी भी नवीन विषय को शामिल न करें। रचना का अंत वही होना चाहिए जो आपके उन विचारों को दृढ़ करे जिन्हें आपने अपनी रचना में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न 2

1. किसी भी रचना में प्रस्तावना का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

2. रचना में विषय का विस्तार किन-किन तरीकों से किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्दों द्वारा कीजिए।

(क) रचना का प्रारंभ पाठक की विषय के प्रति.....बढ़ाता है।

(ख) किसी भी प्रभावी रचना के लिए ..... और अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण होता है।

(ग) रचना में..... का प्रयोग कठिन से कठिन विषय को आसान बना देता है।

(घ) किसी भी व्यक्ति, रचना, दृश्यादि का वर्णन करने के लिए उसकी पूरी..... अपेक्षित है।

4. किसी भी रचना के शीर्षक में कौन से गुण होने चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान गए होंगे कि:

- रचना के कितने प्रकार होते हैं तथा उनमें क्या अन्तर हैं,
- किसी भी रचना का लेखन करने से पहले उसके विषय का चयन उसी क्षेत्र में करना चाहिए जिस विषय क्षेत्र में आपको अच्छी और यथेष्ट जानकारी हो।

- रचना में विषय का विस्तार करने के लिए उदाहरणों एवं परिभाषाओं आदि की सहायता ली जा सकती है।
- अपने पाठक वर्ग की जानकारी होनी अपेक्षित है तभी आप उसकी आवश्यकता को समझ सकते हैं और उसके अनुसार अपनी रचना को सही दिशा दे सकते हैं।
- विषय को इस प्रकार अनुच्छेदों में विभाजित करें कि रचना के सभी अनुच्छेदों की लंबाई लगभग एक जैसी ही हो।
- रचना का अंत निष्कर्ष या सारांश से करना चाहिए तथा उसमें विचारों, तथ्यों सूचनाओं, सुझावों निर्णय आदि का यथोचित समावेश किया जा सकता है।

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. रचना के प्रमुख तीन प्रकार हैं– वर्णनात्मक लेखन, आख्यानपरक लेखन और तार्किक लेखन। वर्णनात्मक लेखन में किसी स्थान, व्यक्ति, वस्तु, दृश्य आदि का वर्णन किया जाता है, आख्यानपरक लेखन में वास्तविकता या कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं का आकलन होता है और तार्किक लेखन में विषय के प्रमुख बिन्दुओं को तर्क द्वारा स्पष्ट किया जाता है।
2. किसी भी रचना के लिए विषय का चयन करते समय अपने विषय के क्षेत्र की पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। यह पता होना चाहिए कि हम जिनके लिए लेखन करने जा रहे हैं वह पाठक वर्ग कौन सा है।
3. देखिए 7.4.1
4. क) हाँ ख) हाँ ग) हाँ घ) नहीं

बोध प्रश्न 2

1. प्रस्तावना वस्तुतः रचना के मुख्य विषय का परिचय देती है। एक तरह से उसकी भूमि का कार्य करती है। यह एक या दो पंक्तियों की भी हो सकती है और एक अनुच्छेद की भी।
2. किसी भी रचना में विषय का विस्तार निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है–
   - उदाहरणों द्वारा
   - विस्तृत वर्णनों द्वारा
   - परिभाषाओं द्वारा
3. क) जिज्ञासा ख) पहला, अंतिम ग) उदाहरणों घ) जानकारी
4. रचना का शीर्षक छोटा और विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए। शीर्षक में स्पष्टता हो सकती है, पाठक के मन में विषय को पढ़ने की जिज्ञासा भी उत्पन्न करने वाला हो।

इकाई 8 पुनर्रचना (संक्षेपण, भाव पल्लवन आदि)

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 नोट्स लेखन

8.3 सार लेखन

8.4 रिपोर्ट लेखन

8.5 भाव पल्लवन

8.6 सारांश

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

पुनःरचना या पुनर्लेखन लेखन का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। कई बार हमें किसी लेख को पढ़कर या भाषण को सुनकर उसका विवरण प्रस्तुत करना होता है। कई बार किसी घटना या किन्हीं तथ्यों के संबंध में रिपोर्ट या प्रतिवेदन तैयार करना होता है या परीक्षा की तैयारी के लिए पाठ्यसामग्री का अध्ययन करके उसमें से महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखना होता है ताकि उनके आधार पर परीक्षा में आए प्रश्नों के उत्तर के लिए सामग्री का संकलन कार्य कर सकें। उक्त सभी प्रकार के लेखन के लिए आधार रूप में हमें नोट्स लेने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसे हम महत्वपूर्ण बिंदुओं/तथ्यों को निकालना भी कह सकते हैं। यही 'नोट्स' कई प्रकार के पुनर्लेखन का आधार बनते हैं। लिखित या मौखिक सामग्री के 'नोट्स' के आधार पर हम पुनःरचना के विभिन्न प्रकारों का लेखन कर सकते हैं। इन्हीं 'नोट्स' के आधार पर मूल पाठ का सार प्रस्तुत किया जा सकता है या किसी घटना या तथ्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की जा सकती है या कोई शोध लेख लिखा जा सकता है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे किः

- लिखित या मौखिक सामग्री के नोट्स कैसे लिये जा सकते हैं।
- लिए गए 'नोट्स' को सारलेखन या संक्षेपण में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है।
- नोट्स के आधार पर रिपोर्ट या प्रतिवेदन लेखन कैसे किया जा सकता है एवं इस प्रकार के पुनर्लेखन के क्या नियम हैं।
- भाव पल्लवन के द्वारा किसी सूक्ति के भाव का विस्तार कैसे किया जा सकता है।

आपको कुछ गद्यांशों के उदाहरण देते हुए पुनर्लेखन के विभिन्न रूपों को स्पष्ट किया जाएगा तथा विभिन्न स्वमूल्यांकन अध्ययनों के माध्यम से इस प्रकार के लेखन का अभ्यास कराया जाएगा।

8.1 प्रस्तावना

प्रत्येक प्रकार के संप्रेषण में – चाहे लिखित हो या मौखिक-लेखक या वक्ता विशिष्ट सूचनाओं को संप्रेषित करता है। दूसरे शब्दों में, यह सूचना-संप्रेषण भाषाई आवरण में लिपटा होता है। अपने संप्रेष्य भाव को सीधे-सपाट शब्दों में न प्रकट कर उसको संप्रेष्य बनाने के लिए, श्रोता या पाठक तक पहुँचाने के लिए कुछ ऐसी रीतियाँ अपनाता है जिससे उसका संप्रेषण सहज, बोधगम्य एवं रोचक बन सके। इसके लिए उसे अपनी बात की कई प्रकार से पुनरावृत्ति करनी पड़ सकती है या अधिक स्पष्ट करने के लिए उदाहरण या रोचक घटनाएँ प्रस्तुत करनी पड़ सकती हैं।

पाठक या श्रोता के रूप में हमें मूल कथ्य तक पहुँचना होता है। उसे समझकर अपने शब्दों में, विभिन्न रूपों में लिखना होता है। हम किसी परीक्षापयोगी सामग्री का अध्ययन कर उसके महत्वपूर्ण बिंदुओं के नोट्स ले सकते हैं और फिर परीक्षा के दौरान प्रश्नों का उत्तर लिख सकते हैं या मौखिक परीक्षा या साक्षात्कार के दौरान प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। किसी पाठ्य या श्रुत सामग्री के आधार पर सारलेखन कर सकते हैं अथवा संकलित बिंदुओं के आधार पर प्रतिवेदन लिख सकते हैं। अब हम इकाई के विभिन्न भागों में नोट्स लेखन, सारलेखन, रिपोर्ट लेखन तथा भाव पल्लवन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे तथा उनके लेखन का अभ्यास करेंगे।

8.2 नोट्स लेखन

पुनर्रचना या पुनर्लेखन के विभिन्न प्रकारों – सार लेखन, रिपोर्ट लेखन आदि में लिखित सामग्री के आधार पर लिए गए नोट्स का महत्व सर्वविदित है। वास्तव में, यह पुनर्लेखन का आधार है। 'नोट्स' के आधार पर हम किसी लेख या भाषण या पत्राचार आदि के महत्वपूर्ण बिंदुओं को निकाल सकते हैं और फिर उन्हें पुनर्लेखन के भिन्न-भिन्न प्रकारों में परिवर्तित कर सकते हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा सकता है कि नोट्स लिखित या मौखिक सामग्री दोनों के आधार पर लिए जा सकते हैं, किंतु इन दोनों विधाओं के नोट्स लेने में पर्याप्त अंतर होता है। लिखित सामग्री के 'नोट्स' लेते समय नोट्स लेखक अपनी गति से कार्य करता है, आवश्यकता पड़ने पर सहायक या संदर्भ सामग्री से सहायता भी ले सकता है। इस प्रकार के नोट्स परीक्षा की तैयारी या शोध लेख लिखने में सहायक होते हैं। मौखिक भाषा के आधार पर नोट्स लेने के लिए एक विशेष प्रकार की तैयारी की आवश्यकता होती है। किसी भाषण या व्याख्यान के नोट्स लेते समय 'नोट्स लेखक' को वक्ता की गति के अनुसार चलना पड़ता है। श्रव्य सामग्री के नोट्स लेने के पहले व्याख्यान के शीर्षक तथा संबद्ध विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करनी होती है तथा व्याख्यान के दौरान मानसिक रूप से जाग्रत रहने की आवश्यकता होती है।

लिखित या मौखिक माध्यम के नोट्स लेते समय प्रत्येक वाक्य या शब्द को लिखने की आवश्यकता नहीं होती। यह जानने और पहचानने की आवश्यकता है कि लेखक या वक्ता अपनी बात को कैसे व्यक्त करता है, कितनी पुनरावृत्ति के स्थलों को छोड़ा जा सकता है। वह अपने संप्रेषण में कुछ ऐसी भाषिक उक्तियों का प्रयोग करता है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए पुनरावृत्ति या दोहराव का सहारा ले रहा है। इन उक्तियों पर ध्यान दीजिएः

- आपको ध्यान होगा कि –
- पहले हम इस संबंध में बता चुके हैं कि –
- हमने पहले यह कहा था कि –

ऐसी उक्तियों के साथ दी गई सूचना के नोट्स लेने की आवश्यकता नहीं होती।

प्रत्येक लेख या भाषण के तीन भाग होते हैं– प्रस्तावना, मुख्य भाव तथा निष्कर्ष। लेखक या वक्ता अपने संप्रेषण में मुख्य बिंदुओं के साथ कुछ गौण बिंदुओं की भी प्रस्तुति करता है। ऐसे कई भाषिक प्रयोग हमें लेखक या वक्ता के मुख्य बिंदु की ओर संकेत करते हैं जैसे–

- यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि
- यह ध्यान रखने की जरूरत है कि
- इस बात पर विशेष बल देने की आवश्यकता है कि

कई बार वक्ता अपने भाषण के मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखता चलता है। ऐसे बिंदुओं को 'नोट्स लेखन' में सम्मिलित किया जा सकता है। इसी प्रकार गौण बिंदुओं के संकेत भी कुछ उक्ति प्रकारों से मिल जाते हैं, जैसे–

- मैं कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा
- मैं यह भी जोड़ना/कहना चाहूँगा
- मैंने यह बताने/स्पष्ट करने की चेष्टा की है

कुछ वक्ता अपने लेख या भाषण को रोचक बनाने के लिए इधर–उधर की बातें करते हैं। कई बार ऐसी बातों का लेख या भाषण के मुख्य विषय से सीधा संबंध नहीं होता। ऐसे स्थलों के नोट्स लेने की भी आवश्यकता नहीं होती।

इस गद्यांश को पढ़िए –

आधुनिक जीवन शैली और गलत खान-पान के तौर-तरीकों के कारण आज हृदयरोग केवल प्रौढ़ों तथा अधेड़ों का रोग नहीं रह गया है, बल्कि नौजवान भी बड़ी संख्या में इस रोग का शिकार हो रहे हैं। हृदयरोग या दिल के दौरे के कारण लाखों लोग प्रति वर्ष मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। इसका मुख्य कारण रक्त धमनियों में रक्त की रुकावट होती है और समय रहते इसका पता नहीं चल पाता। रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाने की तकनीक के विकास से इस रोग पर अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अब नौजवान भी इस रोग का शिकार हो रहे हैं, अब 35–44 वर्ष के आयु वर्ग के लोग इसके चंगुल में आने लगे हैं। 55 वर्ष से अधिक के लोगों के लिए तो यह रोग मृत्यु का पर्याय बन जाता है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हृदयरोग कम होते हैं लेकिन रजोनिवृत्ति के बाद शरीर में हारमोन परिवर्तन के कारण महिलाएँ भी पुरुषों के समान इस रोग का शिकार होने लगी हैं।

अब निम्नलिखित बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए तथा अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

बोध प्रश्न 1

1. हृदय रोग का मुख्य कारण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2. हृदय रोग को कैसे रोका जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. क्या पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हृदय रोग कम होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4. उपर्युक्त गद्यांश में 'पुनरावृत्ति' को निकालकर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अब इस गद्यांश को पढ़िए–

''हृदय रोग के प्रमुख कारणों में धूम्रपान, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, तनावपूर्ण जीवन तथा आनुवंशिक कारणों को लिया जा सकता है। आमतौर पर दिल के दौरे अचानक पड़ते हैं। रोगी की रक्त धमनियों में रुकावट आने या रक्त के थक्के बन जाने के कारण धमनी में अवरोध पैदा हो जाता है जो दिल के दौरे का कारण बनता है। अभी तक धमनी में रुकावट का पता लगाने के लिए 'ई. सी.जी.', 'इलैक्ट्रोग्राफी थैलियम जाँच' और 'कोरोनरी ऐंजियोग्राफी' का प्रयोग किया जाता है। इनमें से केवल 'कोरोनरी ऐंजियोग्राफी' से ही धमनी की रूकावट का पता चल सकता है। इस तकनीक के लिए रोगी को अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है और इस पर खर्च पर भी ज्यादा आता है।

ऐंजियोग्राफी की इन कमियों को ध्यान में रखकर अब एक नई तकनीक का विकास किया गया है जिससे केवल दस मिनट में ही धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है। इसमें रोगी को केवल सुई लगाते जितना दर्द होता है और इस पर खर्च भी बहुत अधिक नहीं होता। इस तकनीक का नाम है– मैट्रो कोरोनी स्क्रीनिंग। इसके अंतर्गत रोगी के हाथ में उस जगह से रक्त

धमनियों में अत्यंत पतला कैथेटर प्रवेश कराया जाता है जहाँ से सामान्यतया रक्त लेते हैं और कोलेस्ट्रॉल का पता लगाते हैं''

बोध प्रश्न 2

मौखिक सामग्री के नोट्स लेने के अध्ययन के रूप में उपर्युक्त गद्यांश को किसी की आवाज़ में सुनिए। सुनने से पहले निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ लीजिए। उपर्युक्त सामग्री को सुनने के दौरान प्रश्नों का उत्तर नोट करते चलिए।

1. निम्नलिखित कथनों पर सही (√) या गलत (×) का निशान लगाइए।

   (i) केवल आनुवंशिक कारणों से ही हृदय होता है। ( )

   (ii) रक्त थक्के बन जाने के कारण रक्त–धमनियों में अवरोध पैदा होता है। ( )

   (iii) 'कोरोनरी एंजियोग्राफी' से ही केवल रक्त–धमनियों की रुकावट का पता चलता है। ( )

   (iv) 'कोरोनरी एंजियोग्राफी'में बहुत कम खर्च आता है। ( )

   (v) 'मैट्रो कोरानरी स्क्रीनिंग' एक अपेक्षाकृत सस्ती तकनीक है जिससे धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है। ( )

   (vi) ई.सी.जी. से दिल के दौरे का कारण पता चलता है। ( )

2. उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर कॉलम 'क' तथा कॉलम 'ख' की सूचना का सही मिलान कीजिए।

	कॉलम 'क'		कॉलम 'ख'
1.	उच्च रक्तचाप व तनावपूर्ण जीवन से	(i)	अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है।
2.	कोरोनरी एंजियोग्राफी के लिए	(ii)	धमनी में अवरोध पैदा होता है।
3.	रक्त में थक्के बनने के कारण	(iii)	हृदय रोग की संभावना बढ़ जाती है।
4.	मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग में	(iv)	नई तकनीक का विकास हुआ है।
5.	हृदय रोग का पता लगाने के लिए अब	(v)	रक्त धमनियों में पतला कैथेटर डाला जाता है।

बोध प्रश्न 3

उपर्युक्त दोनों गद्यांशों के आधार पर 'नोट्स' लीजिए जिनमें हृदय रोग के प्रमुख कारणों तथा उसका पता लगाने संबंधी विभिन्न तकनीकों का पता चल सके। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभी तक हमने 'नोट्स लेखन' का अभ्यास किया। अब नोट्स लेखन से पुनर्लेखन में कैसे सहायता प्राप्त हो सकती है इसके बारे में हम इसी इकाई के अगले भागों में पढ़ेंगे और सारलेखन तथा रिपोर्ट लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। इकाई के अंत में

किसी सूक्ति या उक्ति के भाव का विस्तार कैसे किया जा सकता है इसके बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

8.3 सार लेखन

सार लेखन या संक्षेपण का उद्‌देश्य किसी वस्तु या पाठ के मूल भावों को संक्षिप्त रुप में प्रकट करना होता है। कुछ विद्वान सारलेखन तथा संक्षेपण में अंतर मानते हैं। उनके अनुसार संक्षेपण में किसी पाठ की प्रमुख बातों को संक्षेप में दिया जाता है और सारलेखन में पाठ के केंद्रीय भाव को थोड़े शब्दों में प्रकट किया जाता है। हम यहाँ सारलेखन तथा संक्षेपण में कोई विशिष्ट अंतर न मानते हुए दोनों को एक ही मानकर चल रहे हैं।

सार लेखन का प्रयोग शिक्षा, कार्यालय, वाणिज्य, विधि, पत्रकारिता आदि विभिन्न क्षेत्रों में किया जात है। इसके लिए कुछ नियमों को हृदयंगम करना सहायक होगा।

- किसी पाठ का सारलेखन करने से पूर्व, उसे दो–तीन बार पढ़ना चाहिए और उसमें व्यक्त मूल या केन्द्रीय भाव को समझना चाहिए।
- पाठ के मुख्य भावों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
- रेखांकित मुख्य भावों को अपने शब्दों में लिख लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में पाठ के आधार पर 'नोट्स ले लेने चाहिए।
- सारलेखन के बाद पाठ का शीर्षक देना चाहिए।
- आकार की दृष्टि से सारलेखन मूल पाठ का एक तिहाई होना चाहिए।
- सारलेखन के बाद उसे दो बार पढ़ लेना चाहिए ताकि उसमें किसी प्रकार का दोष न रह जाए।

सारलेखन के विभिन्न प्रकारों में– प्रवाहपूर्ण सार, तारीखवार सार, क्रमिक सार, तालिकाबद्ध सार आदि की चर्चा की जाती है। लेखों, प्रलेखों, भाषणों, बैठकों, कार्यवृत्त या रिपोर्ट के आधार पर तैयार किए गए सार को 'प्रवाहपूर्ण सार' की संज्ञा दी जाती है।

अब इस गद्यांश को पढ़िए।

हमारे जीवन तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग अब बढ़ता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी में विकसित श्रव्य, दृश्य–श्रव्य तथा कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का प्रभाव सर्वाधिक है।

मनुष्य ने जब से गणना करना सीखा, तभी से उसने अधिक सुगमता से गणना करने वाले यंत्रों के विकास के लिए खोज शुरू कर दी। इसके फलस्वरूप 'अबेकस' (Abacus) तथा कई प्रकार के कैलकुलेटरों का विकास हुआ। अबेकस का विकास आज से कोई पाँच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। इस गणना यंत्र को एक प्रकार का कंप्यूटर कहा जा सकता है। बीसवीं शताब्दी में आधुनिक कंप्यूटरों का विकास भी इसी विकास यात्रा की शृंखला की एक कड़ी है।

कंप्यूटर विकास को हम पाँच पीढ़ियों में विभाजित कर सकते हैं। **पहली पीढ़ी** के कंप्यूटरों में यंत्र सामग्री के अंतर्गत वैक्यूम ट्यूब का प्रयोग होता था, जिससे उनका आकार बहुत बड़ा होता था। इन कंप्यूटरों में प्रोग्रामिंग भाषा के तौर पर मशीनी भाषा का प्रयोग किया जाता था और कंप्यूटर प्रोग्राम बाइनरी कोड में बनाए जाते थे। दूसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों में वैक्यूम ट्यूब के स्थान पर ट्रांजिस्टरों का प्रयोग होने लगा। इससे

मशीन के आकार में कमी आई और ऊर्जा की भी बचत होने लगी। इसी दौरान आपरेटिंग सिस्टम और प्रोग्रामिंग भाषाओं का भी विकास हुआ। **तीसरी पीढ़ी** के कंप्यूटरों में ट्राजिस्टर का स्थान 'इंटेग्रेटिड चिप' ने ले लिया। विभिन्न आपरेटिंग सिस्टमों तथा स्मृति क्षमता का विकास हुआ। **चौथी पीढ़ी** के कंप्यूटरों में माइक्रो प्रोसेसर तथा नेटवर्किंग का विकास हुआ जिसके फलस्वरूप इंटरनेट का विकास संभव हो पाया। इस समय हम पांचवी पीढ़ी के कंप्यूटरों का प्रयोग कर रहे हैं। कंप्यूटर की **पाँचवीं पीढ़ी** महत्वपूर्ण की प्रोद्योगिकी के रूप में देखी जा सकती है। कंप्यूटर मानव आवाज को सुनकर उसे पाठ के रूप में बदल सकता है। यांत्रिक बुद्धिमता के प्रयोग से सूचना संसाधन की क्षमता बहुत अधिक बढ़ रही है।

उपर्युक्त गद्यांश में कंप्यूटर के विकास के संबंध में निम्नलिखित मुख्य बातें कही गइ हैं–

1. कंप्यूटर का विकास बीसवीं शताब्दी की मुख्य घटना है।
2. हज़ारों वर्षों पूर्व अबेकस जैसे गणना यंत्र का विकास।
3. कंप्यूटर विकास की पाँच पीढ़ियाँ– यंत्र सामग्री एवं प्रोग्रामिंग भाषाओं के विकास से यह सब संभव हुआ है।
4. भावी कंप्यूटर मनुष्य की आवाज़ को समझ सकेंगे और सूचना संसाधन की क्षमता का विकास हो जाएगा।

शीर्षक –कंप्यूटर का विकास

उपर्युक्त मुख्य बिंदुओं के आधार पर सार लेखन इस प्रकार किया जा सकता है।

कंप्यूटर का विकास

कंप्यूटर का विकास आधुनिक शताब्दी की एक प्रमुख घटना है। कंप्यूटर विकास को पाँच पीढ़ियों में बाँटा जा सकता है। यह विकास कंप्यूटर के प्रोसेसर में, वैक्यूम टयूब से ट्रांजिस्टर, ट्रांजिस्टर से इंटेग्रेटिड चिप तथा माइक्रो प्रोसेसर के विकास एवे प्रयोग से संभव हुआ है। पाँचवी पीढ़ी के कंप्यूटरों में यांत्रिक बुद्धिमता के प्रयोग से कंप्यूटर मानव की आवाज़ को समझने योग्य हो गए हैं और उनकी सूचना संसाधन क्षमता बहुत अधिक बढ़ गई है।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर सारलेखन कीजिए तथा अपने उत्तर का मिलान पाठ के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

गांधी जी और अहिंसा एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। विश्व के इतिहास में किसी भी राजनेता ने अहिंसा को इतनी उत्कृष्टता से अपने जीवन का ध्येय नहीं बनाया है। यही कारण है कि सामाजिक और आर्थिक संघर्षों के समाधान के लिए गांधी जी ने अहिंसा का ही रास्त बताया। समाज को उनका यह अनोखा योगदान माना जाता है।

गांधी जी का संपूर्ण दर्शन अहिंसा पर आधारित है। उन्होंने लिखा है– ''अहिंसा मेरी आस्था का प्रथम अनुच्छेद है, यही मेरी आस्था का अंतिम अनुच्छेद भी है।'' गांधी जी अहिंसा को मानव जाति की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि मनुष्य ने अपने कौशल से संहार के कितने ही अस्त्र बनाए हैं, फिर भी अहिंसा उन सबसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। गांधी जी का संपूर्ण जीवन, उनकी तमाम गतिविधियाँ अहिंसा पर केंद्रित रहीं।

गांधी दर्शन में अहिंसा के कई पक्ष मिलते हैं। यह साधन भी है और साध्य भी। साध्य के रूप में वे ऐसे अहिंसक व्यक्तियों की कल्पना करते हैं जो अहिंसक समाज, अहिंसक

राष्ट्र और अहिंसक विश्व का निर्माण करेंगे। गांधी जी अहिंसा को सत्य और ईश्वर मानते थे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 रिपोर्ट लेखन

रिपोर्ट या प्रतिवेदन लेखन पुनर्लेखन का एक प्रमुख प्रकार है जिसके द्वारा किसी कार्य या घटना का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जाता है। किसी घटना, समारोह, उद्घाटन, सभा, जुलूस या ऐसी किसी स्थिति के बारे में प्रतिवेदन लिखे जाते हैं।

रिपोर्ट लेखन का प्रयोग सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में किया जाता है। सरकारी क्षेत्र में कार्यालयों में कार्य निपटान के बारे में साप्ताहिक, मासिक तथा वार्षिक विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं तथा उनके आधार पर निष्कर्ष, सुझाव और संस्तुतियाँ भी दी जाती हैं। ऐसे प्रतिवेदनों की श्रेणी में निम्नलिखित स्थितियों में लिए गए प्रतिवेदन भी आते हैं।

- किसी मंत्रालय, कार्यालय या संस्था की गतिविधियों का वार्षिक विवरण।
- किसी कंपनी के संचालकों या निदेशक मंडल का प्रतिवेदन।

प्रतिवेदन लेखन के विभिन्न चरण

औपचारिक प्रतिवेदनों के लिए प्रतिवेदक को पूरी योजना बनाकर काम करना होता है। चूँकि ऐसे प्रतिवेदन किसी विषय का सम्यक विश्लेषण तथा तथ्यों का संकलन होते हैं, अतः सबसे पहले विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी एकत्रित की जाती है।

संबद्ध फाइलों, नियमों, प्रपत्रों आदेशों आदि से सूचनाएँ एकत्रित की जाती है। एकत्रित सूचनाओं का वर्गीकरण, सारणीकरण और विश्लेषण किया जाता है। निष्कर्षों एवं सुझावों की रूपरेखा तैयार की जाती है।

फिर प्रतिवेदन का मसौदा तैयार किया जाता है। मसौदे को आयोग/समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों के सामने परस्पर विचार–विमर्श के लिए रखा जाता है और उसमें आवश्यक संशोधन–परिवर्तन किए जाते हैं।

प्रतिवेदन स्वतःपूर्ण एवं स्वतःस्पष्ट होने चाहिए। इनमें संक्षिप्तता का विशेष ध्यान रखा जाता है। केवल महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाता है। तथ्यों को क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत रूप में देना चाहिए, आवश्यक होने पर उन्हें आँकड़ों एवं तालिकाओं के साथ भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

अंत में ऐसे प्रतिवेदनों पर समिति/आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों के हस्ताक्षर किए जाते हैं।

प्रतिवेदन के स्वरूप के बारे में निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है–

- प्रतिवेदन के आरंभ में शीर्षक देना चाहिए। यह शीर्षक प्रतिवेदन के विषय से सुसंबद्ध होना चाहिए।

- यदि प्रतिवेदन काफी बड़ा हो तो उसे अध्यायों में विभाजित कर देना चाहिए। रेल दुर्घटना आदि के प्रतिवेदन विभिन्न अध्यायों में प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रारंभ में विभिन्न अध्यायों की विषयसूची भी दी जानी चाहिए।

- यदि प्रतिवेदन का संबंध किसी विषय के अन्वेषण या शोध से हो तो उसके तैयार करने के लिए प्रयुक्त उपयोगी संदर्भ सामग्री की सूची भी अंत में दे दी जानी चाहिए।

- प्रतिवेदन यदि काफी बड़ा हो तो उसका सारांश भी आवश्यक सुझावों के साथ दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार हमने देखा कि प्रतिवेदन संदर्भ, स्थिति या विषय के अनुसार लिखे जाते हैं। जब किसी दुर्घटना का प्रतिवेदन लिखा जाता है तब उस दुर्घटना का स्थान, समय, मारे गए लोगों की सूचना, दुर्घटना का कारण आदि सभी विवरण देने आवश्यक होते हैं। इसी प्रकार किसी सभा, बैठक या उद्घाटन के प्रतिवेदन में सभा/ बैठक के स्थान, समय, कार्यसूची का संक्षिप्त विवरण देना अपेक्षित होगा। ऐसे प्रतिवेदनों में न केवल अंतिम निर्णयों को दिया जाता है बल्कि विभिन्न वक्ताओं के दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करना अभीष्ट होता है। किसी भाषण की रिपोर्ट में वक्ता का सामान्य परिचय तथा विषय का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए व्यक्त विचारों का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

किसी सर्वेक्षण की रिपोर्ट लिखने के लिए पहले सर्वेक्षण की विधि, उसका कार्यक्षेत्र, सूचकों का चयन, सूचना एकत्र करने की विधि– व्यक्तिगत प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सरकारी रिकार्ड आदि का चुनाव करना होता है। फिर उसे व्यवस्थित रूप से समिति/ आयोग की रिपोर्ट की तरह प्रस्तुत किया जाता है।

आइए हम लोग प्रतिवेदन का एक नमूना देखते हैं:–

विषयः बैंक धोखाधड़ी की बढ़ती समस्या।

आजकल के समाचार-पत्र और समाचार पोर्टल बैंक धोखाधड़ी के समाचारों से भरे पड़े हैं। ऑनलाइन बैंकिंग के बढ़ते प्रचलन के समय में ग्राहकों द्वारा की गई सामान्य सी असावधानी भी उनकी वित्तीय संपदा पर भारी पड़ रही है। ग्राहकों की पहुंच से बहुत दूर बैठे ठग विभिन्न प्रलोभनों के माध्यम से ग्राहक की ऑनलाइन बैंकिंग संबंधी गोपनीय जानकारियां हासिल कर लेते हैं। इन जानकारियों की सहायता से वे ग्राहक के बैंक खाते में जमा धनराशि को छद्म नाम से खोले गए अपने अवैध बैंक खातों में हस्तांतरित कर लेते हैं। आजकल यह गोरखधंधा खूब फल–फूल रहा है।

सार्वजनिक क्षेत्र के देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने हाल ही में एक जानकारी देते हुए स्पष्ट किया है कि चालू वित्तीय वर्ष के शुरूआती नौ महीनों (अप्रैल–सितंबर, 2019) के दौरान कुल 7951.29 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के मामले सामने आये हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2017–2018 के दौरान गंभीर बैंक फ्रॉड के करीब 1027 मामले दर्ज किए गए। रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि अधिकांश मामलों में बैंक धोखाधड़ी के शिकार ग्राहक को पूरा नुकसान सहना पड़ता है। इस संबंध में बैंक अपनी जिम्मेदारियों से बचते हुए नजर आते रहे हैं। हालांकि बैंकों द्वारा ऑनलाइन लेन–देन को सुरक्षित और मजबूत बनाने के प्रति उदासीनता दिखाने

और ग्राहकों के नुकसान से अपना पल्ला झाड़ने की प्रवृत्ति पर भारतीय रिजर्व बैंक ने सख्ती दिखाई है।

आर.बी.आई. की नई गाइड लाइन के अनुसार अगर ग्राहक अपने स्तर से कोई निजी सूचना लीक नहीं करता है और समय से बैंक को सूचित करता है तो बैंक को 10 दिन के भीतर उसके नुकसान की भरपाई करनी होगी। आर.बी.आई और विभिन्न बैंकों की तरफ से जारी गाइडलाइन में ग्राहकों से यह अपील की गई है कि वे अपने बैंक खाते, क्रेडिट–डेबिट कार्ड इत्यादि से संबंधित कोई भी सूचना किसी अन्य व्यक्ति से साझा न करें। बैंक खाते से संबंधित किसी भी गैर–अधिकृत फोन कॉल से मांगी गई किसी भी तरह की निजी जानकारी देने की बजाय तुरंत बैंक अधिकारी या पुलिस को सूचित करें।

बोध प्रश्न 5

अपने क्षेत्र के किसी सरकारी अस्पताल की स्थिति के बारे में संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार कीजिए। रिपोर्ट के लिए निम्नलिखित तथ्यों से सहायता ले सकते हैं:

- आसपास के कई गाँवों के लिए अस्पताल
- दो डाक्टर और दो नर्स
- मरीजों की भीड़
- दवाइयों का अभाव
- जिलाधिकारी व जनप्रतिनिधियों को कई बार कहा जा चुका है लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं होता

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 भाव पल्लवन

भाव पल्लवन से अभिप्राय किसी सुगठित तथा अति संक्षिप्त गुंफित विचार को विस्तार से प्रस्तुत करना होता है। अक्सर महान **लेखक** अपनी बात को सूक्ति के रूप में कह जाते हैं जिसे सामान्य व्यक्ति के लिए समझना कठिन हो जाता है। ऐसे भाव को विस्तार से समझाने को भाव पल्लवन कहा जाता है। ऐसे **सुगठित** भावों को स्पष्ट करने तथा समझाने के लिए व्याख्या करने की आवश्यकता होती है।

हिंदी में अनेक सूक्तियाँ तथा कहावतें मिलती हैं जिनके अर्थ आसानी से समझ नहीं आते। उनका अर्थ विस्तार या भाव पल्लवन करके लेखक का मंतव्य समझाया जा सकता है।

पल्लवन के नियम

- मूल उक्ति या सूक्ति को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और उस पर चिंतन करना चाहिए ताकि मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
- मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य गौण भावों पर भी विचार करना चाहिए। उन्हें एक पृष्ठ पर लिख लेना चाहिए।
- मूल भाव का विस्तार करते समय आवश्यकता पड़ने पर उदाहरण या तथ्य भी दिए जा सकते हैं।
- भाव पल्लवन की भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिए।
- अप्रासंगिक या अनावश्यक बातों को नहीं देना चाहिए, केवल मूल भाव के लिए सटीक और उपयुक्त बातों को ही लेना चाहिए।
- मूल भाव की न तो आलोचना करनी चाहिए और न ही अपनी ओर से टिप्पणी करनी चाहिए। केवल मूल भाव का विवेचन या विश्लेषण किया जाता है।
- पल्लवन को लिखने के बाद एक–दो बार पढ़ लेना चाहिए ताकि भाषा विषयक कोई दोष न रह जाए।

भाव पल्लवन का उदाहरणः

''हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उससे भी बुरी है''।

यह सत्य है कि हिंसा नहीं करनी चाहिए। किसी को भी दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं है। प्राचीन काल से ही मनीषियों ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। गांधी जी ने भी हिंसा का विरोध किया और उसे बुरा बताया।

दासता या गुलामी को और भी बुरा माना गया है। कोई दास जीवित रहते हुए भी मरे हुए के समान है। वास्तव में दासता का जीवन जीना हिंसा से भी बदतर होता है। इसीलिए दासता के बंधन से मुक्त होने के लिए यदि हिंसा का सहारा लेना पड़े तो वह क्षमा योग्य है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महान नेताओं ने दासता की श्रृंखलाओं को तोड़ने का आह्वान किया था।

यह सही है कि अहिंसा अच्छी चीज़ है और हिंसा बुरी, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए कि अहिंसक को अपने अधीन या दास बनाया जाए तो वह कुछ न बोले। इस कथन से यह भी प्रकट होता है कि यदि दासता से मुक्ति पाने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना पड़े तो भी उसमें दोष नहीं हैं।

बोध प्रश्न 6

''जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।''

इस सूक्ति का भाव पल्लवन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 सारांश

इस इकाई में आपने नोट्स लिखने, किसी पाठ का सारांश तैयार करने तथा रिपोर्ट लिखने के बारे में सीखा। आपने यह भी सीखा कि सारलेखन, रिपोर्ट लेखन पुनर्रचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है और इसके लेखन में नोट्स लेखन से कैसे सहायता ली जा सकती है। साथ ही किसी सूक्ति या उक्ति के भाव पल्लवन के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. हृदय रोग का मुख्य कारण रक्त धमनियों में रुकावट पैदा होना होता है।
2. रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाकर हृदय रोग को रोका जा सकता है।
3. जी हाँ, पुरूषों की तुलना में महिलाओं में हृदय रोग कम होता है लेकिन महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद इस रोग की संभावना पुरुषों के समान हो जाती है।
4. ''जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अब नौजवान भी इस रोग का शिकार हो रहे हैं'' पुनरावृत्ति का उदाहरण है।

बोध प्रश्न 2

1. i. (गलत) ii. (सही) iii. (गलत) iv. (गलत) v. (सही) vi. (गलत)
2. 1 (iii) 2 (i) 3 (ii) 4 (v) 5 (iv)

बोध प्रश्न 3

- हृदय रोग के प्रमुख कारणों में रक्त धमनियों में रुकावट पैदा होना है।
- आधुनिक जीवन शैली, गलत खान-पान, तनावपूर्ण जीवन, धूम्रपान, मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा आनुवांशिक कारणों से हृदय रोग होते हैं।
- अभी तक धमनी में रूकावट का पता लगाने के लिए ई.सी.जी., इलक्ट्रोग्राफ़ी थैलियम जाँच, करोरोनरी एंजियाग्राफी का प्रयोग किया जाता था। ये जाँच की तकनीकें काफी खर्चीली हैं।
- अब एक नई तकनीक का विकास हुआ है– यह तकनीक है– मैट्रो कोरोनरी स्क्रीनिंग। इस तकनीक से रक्त धमनियों में रुकावट का पता लगाया जा सकता है। इस पर खर्च भी कम होता है और जाँच के लिए केवल दस मिनट का समय लगता है।

बोध प्रश्न 4

शीर्षक – गांधी जी और अहिंसा

गांधी जी ने अहिंसा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। अहिंसा के माध्यम से वे सभी सामाजिक और आर्थिक संघर्षों का समाधान करते थे। गांधी जी अहिंसा में पूरी आस्था थी। उनके जीवन के सभी क्रिया-कलाप अहिंसा पर ही केन्द्रित रहे। वे अहिंसा को साधन और साध्य दोनों मानते थे। साध्य के रूप में अहिंसा के माध्यम से अहिंसक विश्व का निर्माण करना चाहते थे।

बोध प्रश्न 5

हमारे क्षेत्र में एक सरकारी अस्पताल है जिसमें आसपास के कई गाँवों के मरीज़ आते हैं। अस्पताल में दो डॉक्टर और दो नर्सें हैं। गाँव के लोगों के रहन-सहन में सफाई की ओर ध्यान न देने से कई बीमारियों का प्रकोप अक्सर होता रहता है। सुबह-सुबह अस्पताल के बाहर काफी भीड़ जमा रहती है। दो डॉक्टरों के द्वारा कई गाँवों के मरीज़ों का इलाज करना संभव नहीं हैं।

अस्पताल में दवाइयों का भी अभाव है– सरकारी खर्च पर मिलने वाली दवाइयाँ न जाने कहाँ चली जाती हैं। इस संबंध में जिलाधिकारियों को कई बार शिकायतें भेजी जा चुकी हैं। जनप्रतिनिधि भी इस ओर कोई ध्यान नहीं देते, केवल आश्वासन देकर चले जाते हैं।

बोध प्रश्न 6

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो विवेकशील है। वह केवल वर्तमान की नहीं सोचना बल्कि भविष्य के बारे में भी विचार कर सकता है। उसमें उचित और अनुचित का ज्ञान कराने वाली बुद्धि है। बुद्धि के दो पक्ष हैं– सुबुद्धि और दुर्बुद्धि। सुबुद्धि सुमति का पर्याय है और कुमति दुर्बुद्धि का। जब मनुष्य में सुमति रहती है तो वह अच्छे कार्यों में लगता है और उसी से वह अच्छे बुरे का विवेक भी करता है। जब सुमति से हटकर कुमति के अंतर्गत काम करता है तब उसे कठिनाइयों, विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। सुमति से संपत्ति, सुख की प्राप्ति होती है और कुमति से अंहकार, घंमड, दंभ, क्रोध आदि दुर्गुणों का विकास होता है जो आगे चलकर व्यक्ति को और कठिनाइयों और उलझनों में फँसाती हैं। दूसरी ओर नम्रतापूर्वक आचरण करना, बड़ों का आदर करना, उदार बनना सुमति के लक्षण हैं। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने ही कहा है–

'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।''

इकाई 9 वर्णनात्मक लेखन

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 व्यक्ति का वर्णन

9.3 स्थान, दृश्य या वस्तु का वर्णन

9.4 स्थिति या दशा का वर्णन

9.5 कार्य प्रणाली या प्रक्रिया का वर्णन

9.6 सारांश

9.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

वर्णनात्मक लेखन रचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। अक्सर हमें किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या दृश्य का वर्णन करना होता है। ऐसे में, हम उस व्यक्ति, स्थान या वस्तु के बाह्य पक्ष को देखते हैं और उसके बारे में बताते हैं। किसी व्यक्ति के वर्णन में उसका बाह्य रंग-रूप एवं कद, उसकी उम्र आदि के साथ–साथ आंतरिक रूप चालढाल, पंसद, नापसंद, आदतों आदि का वर्णन भी आवश्यक हो जाता है। इसी प्रकार, किसी स्थान के वर्णन में उसके वातावरण या माहौल का भी वर्णन अपेक्षित होता है। किसी वस्तु का परिचय देते हुए, उसकी विशेषताओं के साथ–साथ उसकी कार्य प्रणाली को बताया या समझाना अभीष्ट होता है। इस प्रकार के वर्णन के लिए हमें विशिष्ट प्रकार की शब्दावली एवं अभिव्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है।

इस इकाई में हम छोटे–छोटे गद्यांशों के माध्यम से आपको किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान, स्थिति, कार्य प्रणाली आदि का वर्णन करना सिखाएँगे। विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से आप वर्णनात्मक शब्दों एवं अभिव्यक्तियों का सही–सही प्रयोग भी सीखेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- यह सीख जाएँगें कि किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु की विशेषता बनाने वाली शब्दावली किस प्रकार की होती है।
- किसी यंत्र (टेप रिकार्डर), टी.वी, वी.सी.आर. कम्प्यूटर आदि को चलाने के लिए निर्देश देने के लिए किस प्रकार की भाषा का उपयोग करेंगे।
- किसी पद के लिए आवेदन भेजने या संपादक के नाम पत्र लिखकर किसी स्थान की सामान्य स्थिति या दशा में सुधार लाने के लिए किस प्रकार वर्णन करेंगे।
- विशिष्ट वर्णनात्मक विशेषणों, अभिव्यक्तियों, क्रियाओं एवं वाक्य संरचनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

जब हम किसी व्यक्ति का वर्णन करते हैं तो हम पहले उसके बाह्य रूप– आकार, रंग, आयु वजन आदि पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि हमें किसी व्यक्ति का चयन, किसी

पद के लिए, करना हो तो हमें उसके व्यक्तित्व विवरण के साथ-साथ उसकी शैक्षिक योग्यताओं तथा उनके कार्यानुभव को भी ध्यान में रखना होगा। कभी आपके आस–पड़ोस में चोरी हो जाए और चोर आपके सामने से भागता हुआ निकल जाए तो पुलिस में रिपोर्ट लिखाने के लिए आपको उस चोर का हुलिया बताना पड़ सकता है– इसके लिए उस चोर का बाह्य रूप एवं आकार तथा वेशभूषा कैसी थी, यह बताने की जरूरत पड़ सकती है। आपकी दृष्टि जितनी पैनी होगी, उतना ही आपका वर्णन सटीक होगा।

किसी पद के लिए आवेदन प्रपत्र भरने या पासपोर्ट बनवाने के लिए आपको कुछ आवश्यक सूचनाएँ भरनी होती हैं– यह भी एक प्रकार का वर्णन है।

इसी प्रकार किसी कार्य को करने की विधि या किसी यंत्र को चलाने या स्थापित करने की प्रणाली या किसी प्रकार का भोजन बनाने की विधि समझाने के लिए आपको इस प्रकार की वर्णनात्मक रचना का सहारा लेना पड़ सकता है। इस इकाई में हम इस प्रकार के वर्णात्मक लेखन पर विस्तार से विचार करेंगे।

9.2 व्यक्ति का वर्णन

इस गद्यांश को पढ़िए:

रमेश सत्रह वर्ष का दुबला पतला और लंबा लड़का है। लोग उसे लंबू कहकर चिढ़ाते हैं। उसका कद छह फुट से कुछ अधिक है। चेहरा पीला, जैसे टी.बी. का मरीज़ हो। लगता है कि उसे ठीक तरह से खाने–पीने को नहीं मिलता। कुपोषण उसके चेहरे से झलकता है।

उपर्युक्त अंश में– दुबला पतला, लंबा शारीरिक गठन को व्यक्त करने वाले शब्द हैं। छह फुट लंबा– कद को व्यक्त करने वाली अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार लंबा, ठिगना, छोटा, नाटा, मोटा, पतला कमज़ोर, हट्टा-कट्टा आदि शारीरिक गठन को व्यक्त करने वाले विशेषण शब्द हैं– सत्रह वर्ष, जवान, बूढ़ा, प्रौढ़ आदि शब्द आयु का अथवा आयु का अनुमान व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार छोटा, ठिगना, छह फुट, 160 से.मी आदि कद को व्यक्त करते हैं।

अभ्यास 1

1. इस अंश को पढ़िए:

   जब मोहन पंद्रह वर्ष का था तब उसका कद साढ़े पाँच फुट और वजन 80 किलो था। सब उसको मोटू कहकर चिढ़ाते थे। उसका शरीर थुलथुला था। हर वक्त कुछ न कुछ खाता रहता था।

   बीस वर्ष का होते होते, उसका कद छह फुट हो गया। उसने व्यायाम करना शुरू कर दिया। कुछ ही महीनों के बाद उसका वजन 80 किलो से घटकर 65 किलो हो गया। शरीर में कसावट आ गई और वह एक सुंदर स्वस्थ और आकर्षक युवक बन गया।

   मोहन की आयु, कद, वजन, शारीरिक गठन तथा रंगरूप के बारे में निम्नलिखित सारणी को भरिए।

आयु	पंद्रह वर्ष	बीस वर्ष
कद		

वजन		
शारीरिक गठन		
रंग रूप		

अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए उत्तर से कीजिए।

उपर्युक्त गद्यांश में आपने बाह्य वर्णन करना सीखा। किसी पद के चयन के लिए साक्षात्कार में व्यक्तिगत विवरण के अतिरिक्त क्रम अन्य सूचनाओं की भी आवश्यकता होती है।

निम्नलिखित साक्षात्कार को ध्यान से पढ़िए। इसमें डॉ. अनुपम सिन्हा नाम के एक प्रत्याशी साक्षात्कार समिति के सम्मुख उपस्थित हैं। वे साक्षात्कार समिति के समक्ष अपने व्यक्तिगत विवरण और शैक्षिक उपलब्धियों के बारे में उत्तर दे रहे हैं। साक्षात्कार प्रक्रिया का यह इस प्रसंग इस प्रकार है:

साक्षात्कार समिति के एक सदस्य (डॉ. अनुपम सिन्हा से)	-	आइए अनुपम जी, बैठिए।
डॉ. अनुपम	-	(बैठते हुए) धन्यवाद सर
सदस्य	-	अनुपम जी अपनी अकादमिक योग्यता के बारे में बताइये।
डॉ. अनुपम	-	सर, मैंने समाजशास्त्र में एम.ए किया है और इसी विषय में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।
सदस्य	-	आपने किस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है?
डॉ. अनुपम	-	सर, मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है।
सदस्य	-	अनुपम जी आपने इससे पहले कहीं शिक्षण कार्य किया है?
डॉ. अनुपम	-	जी सर, मैं वर्तमान में डी.ए.वी कॉलेज में तदर्थ प्राध्यापक हूँ।
सदस्य	-	आप कितने वर्षों से शिक्षण कार्य कर रहे हैं?
डॉ. अनुपम	-	सर, मैं लगभग चार वर्षों से शिक्षण कार्य कर रहा हूँ।
सदस्य	-	बहुत अच्छा, लगभग चार वर्षों से, आप कितने वर्ष के हैं?
डॉ. अनुपम	-	जी, मैं 30 वर्ष का हूँ
सदस्य	-	लेकिन, आप दिखने में तो चौबीस–पच्चीस से अधिक के नहीं लगते। क्या आप विवाहित हैं?

डॉ. अनुपम	-	जी सर, पिछले वर्ष ही मेरा विवाह हुआ है।
सदस्य	-	अनुपम जी, अपनी अभिरुचियों के बारे में कुछ बताइए।
डॉ. अनुपम	-	सर, पढ़ना और संगीत सुनना मेरी मुख्य अभिरुचियाँ हैं।
सदस्य	-	अच्छा, ठीक है अब आप जा सकते हैं।
डॉ. अनुपम	-	धन्यवाद सर, नमस्कार!

अभ्यास 2

आप किसी पद के लिए आवेदन करना चाहते हैं। अपने व्यक्तिगत विवरण के साथ-साथ शैक्षिक विवरण, कार्य अनुभव, अभिरुचियों के बारे में बताते हुए अपना 'बायो डेटा' तैयार कीजिए। इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

किसी व्यक्ति के चेहरे तथा उस पर उभरने वाले भावों से आप उस व्यक्ति के चरित्र के बारे में पता लगा सकते हैं। उसके हाव भाव व चाल से भी उसकी चारित्रिक विशेषताओं का पता चलता है।

इस गद्यांश को पढ़िए–

मोहन बाबू लगभग साठ वर्ष के होंगे। चौड़ा माथा, पके हुए बाल, माथे पर उभरी हुई सिलवटें, धँसी हुई आँखें, आँखों के नीचे काले धब्बे, पिचके हुए गाल, इससे मोहन बाबू की परेशानियाँ जरूर प्रकट होती हैं। बात बात पर बिगड़ने लगते हैं। उनका चिड़चिड़ापन इधर कुछ अधिक बढ़ गया है क्योंकि वे अगले वर्ष रिटायर होने वाले हैं और उनकी दो बेटियाँ अभी तक अविवाहित हैं। आर्थिक तंगी उनकी चिंता का विशेष कारण है और उनके चिड़चिड़े स्वभाव का आधार भी।

पहले मोहन बाबू ऐसे न थे। वे बहुत ही हँसमुख, मिलनसार तथा सहयोगी स्वभाव के थे। शरीर से भी ठीक ठाक थे। मस्त मौला, जैसे कोई चिंता उन्हें छू तक न गई हो लेकिन समय बदलते देर नहीं लगती। अब तो वे चिंता की प्रतिमूर्ति ही कहे जा सकते हैं।

अभ्यास 3

1. उपर्यक्त गद्यांश के आधार पर विशेषण तथा उनसे संबद्ध विशेषक शब्दों को छाँटिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. नीचे कालम 'क' में कुछ विशेषण दिए गए हैं, कालम 'ख' में उनसे संबद्ध संज्ञाएँ। कॉलम 'क' और 'ख' से शब्दों को चुनकर सही जोड़े बनाइए। जैसे – चौड़ा माथा

	क		ख
1.	अधपके	क.	नाक
2.	पिचके हुए	ख.	रंग
3.	झुर्रीदार	ग.	व्यक्तिगत
4.	दरमियाना	घ.	लड़की
5.	चपटी	ड.	बाल
6.	थुलथुला	च.	उमर
7.	गोरा	छ.	चेहरा
8.	जवान	ज.	कद
9.	अधेड़	झ.	गाल
10.	आकर्षक	ट.	शरीर

1..... 6.....

2..... 7.....

3..... 8.....

4..... 9.....

5..... 10.....

9.3 स्थान, दृश्य या वस्तु का वर्णन

अभी तक आपने व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक रूप के बारे में वर्णन करना सीखा है। अब आप किसी स्थान या दृश्य से संबंधित वर्णन के नमूने देखेगें/देखेंगी। इस प्रकार का वर्णन हमें जीवन की विभिन्न व्यवहारपरक स्थितियों में करना पड़ता है। आप किसी आकर्षक या मनोरम स्थान का वर्णन किसी मित्र से करते हैं या किसी रोचक घटना की जानकारी प्रस्तुत करते हैं। किसी स्थान के वर्णन में हमें आसपास के माहौल का भी वर्णन करना होता है।

इस गद्यांश को पढ़िए–

मेरे चाचाजी का लाजपत नगर में एक छोटा सा एक मंजिला मकान है। वे इसी मकान में पिछले तीस वर्षों से रह रहे हैं। अब गली में सभी मकान दो या बहुमंजिले बन गए हैं।

इसमें एक बैठक(ड्राइंग रूम) और दो शयन कक्ष (बैडरूम) हैं। कमरों का आकार 12 फुट लंबा और 10 फुट चौड़ा है। बैठक शायद 18×12 की होगी। बैठक में ही टी.वी., फ्रिज और खाने की मेज है। सोफा काफी पुराना है लेकिन आज भी अच्छी स्थिति में है। पीछे आँगन है, जिसमें सुबह अच्छी धूप आती है। सर्दियों में धूप सेवन का खूब मजा रहता है। घर के सामने बरामदा है– जिसमें पहले चाचा जी का स्कूटर खड़ा रहता था, क्योंकि वे बस से आना जाना ज्यादा पंसद करते थे। अब उन्होंने कार ले ली है जो अक्सर बरामदे में ही खड़ी रहती है। उनके मोहल्ले में हर शनिवार को बाज़ार लगता है जिसमें सारा जरूरत का सामान काफी सस्ते दामों पर मिल जाता है। उनकी गली में ही आर्य समाज मंदिर और केनरा बैंक है। उन्हें प्रवचन सुनने में बड़ा आनंद आता है।

मेरे चाचाजी के दो लड़के और एक लड़की है। सब की शादियाँ हो चुकी हैं और वे दूसरे शहरों में अपने-अपने परिवार के साथ रहते हैं। कभी-कभी वे अपने माता पिता से मिलने आते हैं। तब घर में बहुत रौनक रहती है। मेरे चाचाजी बहुत ही संतोषी और धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। वे अक्सर कहते भी हैं– जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान।

उपर्युक्त गद्यांश में –

- लाजपत नगर गली, शनि बाजार, घर, ड्राइंग रूम, बैडरूम, आँगन, बरामदा– स्थान सूचक शब्द हैं।
- फुट लंबा और 10 फुट चौड़ा 18 x 12 फुट, छोटा सा, एक मंजिला, दो या बहुत मंजिले आदि आकार सूचक पदबंध हैं।
- गली में शनि बाजार का लगना, पिछले आँगन में सर्दियों में धूप का आनंद लेना, प्रवचन सुनने का आनंद– बच्चों के आने से घर में रौनक आना आदि दृश्यों का वर्णन करने वाली अभिव्यक्तियाँ हैं।
- 'जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान' संतोषी मन को अभिव्यक्ति करती है– जब किसी को संतोष रूपी धन मिल जाता है तो अन्य सभी प्रकार के धन धूल के समान लगने लगते हैं।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए–

एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी श्रावस्ती पधारे। कोशल के राजा प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध से कहा – ''भगवन् अंगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा बहुत परेशान है, मैं क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता''। भगवान बुद्ध ने राजा को धीरज बंधाया और कहा, ''महाराज, आप चिंता न करें, आपकी यह चिंता शीघ्र ही दूर हो जाएगी।'' श्रावस्ती से महात्मा बुद्ध सीधे उस जंगल की ओर गए जहाँ अंगुलिमाल रहता था। दोपहर का समय था। भगवान बुद्ध चलते चलते थक गए थे। लेकिन वे चलते जा रहे थे, वे रुके नहीं। अचानक उन्हें एक कठोर और भारी आवाज सुनाई पड़ी – 'ठहर जा'। वे नहीं ठहरे। वे चलते ही रहे।

वही भयानक आवाज फिर सुनाई पड़ी ''ठहर जा''। वे ठहर गए। उन्होंने आगे–पीछे, चारों ओर देखा। उन्हें काफी दूर सामने से एक भयानक शक्ल आती हुई दिखाई पड़ी। ऊँचा कद, काला शरीर, बिखरे हुए बाल, लाल लाल आँखें, बड़ी बड़ी मूँछे, चौड़ा सीना, हाथ में कटार और सीने पर उंगलियों की माला– ये सब देखते ही महात्मा बुद्ध समझ गए कि यही अंगुलिमाल है।

महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल से मुस्कराते हुए प्रेमपूर्वक पूछा– ''मैं तो ठहर गया– तू कब ठहरेगा?'' अंगुलिमाल चकित हो गया। उसके सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। लोग उसे देखकर थरथर काँपते थे। भगवान बुद्ध ने फिर प्यार से पूछा ''कब ठहरेगा तू?''

अंगुलिमाल पर भगवान बुद्ध के प्रेम भरे शब्दों का असर होने लगा। अंगुलिमाल भगवान बुद्ध के आगे नतमस्तक हो गया। वह कहने लगा– ''महात्म्न– आपने मुझे राह दिखाई है। मेरी आँखे खोल दी हैं।'' उसने उंगलियों की माला तोड़ कर फेंक दी। कटार दूर फेंक दी और भगवान बुद्ध का शिष्य बन गया।

अभ्यास 4

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर–

1. वर्णात्मक शब्दों और पदबंधों को छाँटिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. अंगुलिमाल के रूप वर्णन के दृश्य का प्रभाव सामान्य व्यक्तियों पर क्या पड़ता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. अंगुलिमाल भगवान बुद्ध के सम्मुख नतमस्तक कैसे हुआ?

.....

.....

.....

.....

.....

4. ''मैं तो ठहर गया– तू कब ठहरेगा?'' इसमें ठहरना क्रिया से कौन-कौन से अर्थ ध्वनित होते हैं– वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

किसी दृश्य या घटना का वर्णन करते समय, हमे उसमें मौजूद वस्तुओं, लोगों तथा रोचक घटनाओं का वर्णन करना होता है। इसके लिए पैनी दृष्टि तथा सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता का विकास आवश्यक है।

इस गद्यांश को पढ़िए–

मुझे पिताजी का पत्र मिला और माँ की बीमारी का पता चला। मैंने तुरंत माँ से मिलने के लिए जबलपुर का कार्यक्रम बनाया। जल्दी जल्दी सामान तैयार किया और नई दिल्ली स्टेशन के लिए आटो लिया। रेलवे स्टेशन मेरे घर से कोई 12 किलोमीटर दूर है लेकिन कभी-कभी भीड़ के कारण, स्टेशन पहुँचने में एक घंटा भी लग जाता है। सौभाग्य से इस बार आधा घंटा ही लगा।

जबलपुर का टिकट खरीदने के लिए मैं टिकट घर पहुँचा– वहाँ का दृश्य देखकर तो मैं धक रह गया। सभी खिड़कियों पर लंबी लंबी लाइनें थी। एक लाइन में मैं लग गया। मेरे आगे कोई पंद्रह-बीस लोग थे। गाड़ी छूटने में केवल आधा घंटा शेष था। खिड़की तक पहुँचते-पहुँचते मुझे बीस मिनट लग गए। मैंने दूसरे दर्जे का टिकट खरीदा और सामान लेकर जल्दी जल्दी प्लेटफार्म पर पहुँचा। प्लेटफार्म पर काफी भीड़ थी। 'अनारक्षित डिब्बा सबसे पीछे लगते हैं' – मुझे एक कुली ने बताया। अब गाड़ी छूटने में केवल चार-पाँच मिनट ही रह गए थे। पीछे से दूसरे डिब्बे में चढ़ने के लिए लाइन लगी थी और एक सिपाही लाइन को नियंत्रित कर रहा था। डिब्बे में मुझे बैठने की जगह मिल गई । मैंने साथ वाले यात्री से पूछा–– आप कहाँ तक जाएँगे? 'जबलपुर' उसने उत्तर दिया। मैंने मन ही मन सोचा चलो अच्छा हुआ, जबलपुर तक साथ रहेगा।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए–

अभ्यास 5

1. लेखक की घर से स्टेशन तक की यात्रा का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. टिकट घर पर टिकट खरीदने के दृश्य का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. लेखक को गाड़ी के डिब्बे में कैसे स्थान मिला?

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 स्थिति या दशा का वर्णन

अभी तक आपने किसी व्यक्ति, स्थान, घटना या दृश्य का वर्णन करना सीखा है। इस खंड में हम आपको वस्तु स्थिति अथवा दशा का वर्णन करना सिखाएँगे। इस प्रकार का वर्णन हमें किसी सार्वजनिक कार्यक्रम, कालोनी में अस्वास्थपरक रहन–सहन या यातायात की समस्या या अन्य कठिनाइयों के लिए स्थानीय प्रशासन का ध्यान केंद्रित करने के लिए समाचार पत्र में संपादक को लिखना पड़ सकता है।

इस गद्यांश को ध्यान से पढ़िए

दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.) ने विभिन्न स्थानों पर कृषि भूमि का अधिग्रहण करके कई प्रकार के बहुमंजिला फ्लैटों का निर्माण किया है। साथ ही भवन निर्माण हेतु प्लाटों का भी विकास किया है। दिल्ली की आवास समस्या को सुधारने में डी.डी.ए का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पश्चिमी दिल्ली में जनकपुरी, एक समय में, एशिया की सबसे बड़ी कालोनी कहलाती थी। इस कालोनी के बीचों बीच कई गाँव पड़ते थे जिनके चारों तरफ डी.डी.ए ने प्लाटों या फ्लैटों का विकास किया। गाँवों की जमीन को लाल डोरा के अंतर्गत माना जाता है और उसमें निर्माण कार्य के लिए कोई नक्शा पास कराने की आवश्यकता नहीं होती। फिर क्या था इन गाँवों में अंधाधुंध निर्माण होने लगा। गाँव के चारों तरफ छोटी-छोटी दुकानें बनती गई। जगह-जगह कूड़ेदान बने/ गाँवों के अंदर छोटी छोटी कोठरियाँ बनाकर उन्हें किराए पर उठाया जाने लगा। गाँवों के अंदर गंदगी, बरसात के मौसम में कीचड़ और बदबू से अक्सर महामारी फैलने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। गाँवों की छोटी छोटी कोठरियों में कई कई बच्चों वाले परिवार का रहना– गाँवों की नालियों में कूड़ा फैंकना, गंदगी फैलाना– यहाँ के जीवन को नारकीय बना देता है। ऐसा माहौल स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

उपर्युक्त अंश में आपने गाँवों के अंदर की दशा और उनमें रहने वालों के नारकीय जीवन के बारे में पढ़ा।

अभ्यास 6

1. उपर्युक्त गद्यांश को आधार बनाकर आप समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए जिसमें गांवों में रहने वाले निम्नवर्गीय लोगों के जीवन को सुधारने के लिए प्रयासों का उल्लेख कीजिए। इसमें आप निम्नलिखित अभिव्यक्तियों का उपयोग कर सकते हैं–
   - गड्ढों में पानी भरना और मच्छरों का पलना
   - छोटे बच्चों को खुली नालियों में पेशाब/शौच के लिए बैठाना
   - गलियों में परिवारों का भोजन करना एवं जीना
   - गलियों में कुत्तों की दुर्गंध

- गाय–भैसों के गोबर की दुर्गंध
- कीचड़–गंदगी के कारण तंग गलियों में से निकलने में कठिनाई
- कूड़ा गलियों में फेंकना।

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 कार्य प्रणाली या प्रक्रिया का वर्णन

किसी यंत्र को कैसे स्थापित किया जाता है या खाना कैसे बनाया जाता है, इस प्रकार के वर्णन करने के लिए हमें कई अवसरों पर आवश्यकता पड़ती है।

निम्नलिखित संवाद को पढ़िए:

पूर्णिमा - **सुगंधि, तुम्हारी इडली तो बहुत ही स्वादिष्ट बनी है। कैसे बनाती हो ऐसी स्वादिष्ट इडलियाँ?**

सुंगधि - **इडली बनाना बहुत ही आसान है।**

पूर्णिमा - **जरा बताओ तो।**

सुंगधि - **200 ग्राम चावल लो और अच्छी तरह साफ कर लो। चार पाँच घंटे चावल को पानी में भिगो कर रख दो। फिर मिक्सी में चावल को पीस कर पेस्ट बना लो।**

पूर्णिमा - **फिर.....**

सुंगधि - **फिर प्रेशर कुकर में थोड़ा पानी डालकर इडली स्टैंड में थोड़ा घी या तेल लगाकर चावल का पेस्ट डालकर कुकर बंद कर दो। कुकर की सीटी न लगाओ। थोड़ी देर में भाप से इडलियाँ तैयार हो जाएँगी। अब कुकर खोल कर इडलियाँ निकाल लो। बस, इडलियाँ तैयार हैं। सांबर या नारियल की चटनी तैयार करके खाई जा सकती है।**

पूर्णिमा - **200 ग्राम चावल से कितनी इडलियाँ बन जाएँगी।**

सुंगधि - **लगभग 20। वैसे आजकल 'इडली मिक्स' पाउडर भी मिलता है जिसे पानी में मिलाकर सीधे इडलियाँ बनाई जा सकती हैं। सूजी से भी इडलियाँ बनाई जा सकती हैं।**

पूर्णिमा - **अब मैं भी, इस रविवार को, घर में नाश्ते के लिए इडलियाँ तैयार करूँगी।**

ध्यान दीजिए– इस प्रकार की प्रक्रिया समझाने या वर्णन करने के लिए विशिष्ट प्रकार के वाक्य साँचों का प्रयोग किया जाता है। आदेशात्मक क्रिया रूप का प्रयोग दृष्टव्य है, जैसे–

1. चावल का आटा लो/लीजिए।
2. पानी में भिगो दो/दीजिए।
3. कुकर में थोड़ा पानी डालो/डालिए।

इसी प्रकार के वर्णन के लिए– कर्म वाच्य का प्रयोग भी किया जा सकता है। जैसे–

1. स्वाद के अनुसार नमक मिलाया जाता है।
2. प्रेशर कुकर की सीटी हटा दी जाती है।
3. धीमी आँच पर पकाया जाता है।

किसी प्रक्रिया के वर्णन में– नित्य वर्तमान वाली वाक्य संरचना का प्रयोग भी किया जा सकता है–

1. पहले थोड़ा चावल लेते है।
2. इसे तीन चार घंटे पानी में भिगोकर रखते हैं।
3. फिर मिक्सी में उसका 'पेस्ट' बनाते हैं।
4. फिर तवे पर थोड़ा तेल लगाते हैं और पेस्ट को तवे पर फैला देते हैं।
5. इस प्रकार 'डोसा' तैयार करते हैं।

अभ्यास 7

1. आप अपने किसी मित्र को डोसा बनाने की प्रक्रिया समझाने का वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदन

निम्नलिखित संवाद को पढ़िए–

सुरेश – रमेश तुम्हें मालूम है कि मुझे अमेरिका में एक कंपनी में, नौकरी मिल रही है

रमेश – यह तो बड़ी खुशी की बात है। तो हो जाए पार्टी।

सुरेश – पार्टी तो होगी ही। पर, अभी बहुत-सी औपचारिकताएँ पूरी करनी हैं। पासपोर्ट बनवाना है। तभी मुझे नियुक्ति-पत्र मिलेगा।

रमेश – तो, पासपोर्ट बनवाने में क्या समस्या है। अब तो पासपोर्ट बनवाना बहुत सरल हो गया है।

सुरेश – तुमने भी तो, हाल ही में, पासपोर्ट बनवाया है, जरा मुझे भी तो बताओ, मुझे क्या करना होगा।

रमेश – सबसे पहले क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में फार्म भरकर जमा कर दो या ऑनलाइन आवेदन कर दो। छह फोटो खिंचवा लो, फार्म भर कर पासपोर्ट फीस के साथ जमा कर दो। एक महीने में पासपोर्ट घर आ जाएगा।

सुरेश – फार्म में क्या क्या भरना होगा।

रमेश – अपना व्यक्तिगत विवरण– नाम, पिता का नाम, माता का नाम, कद, आयु वजन, जन्म तिथि, जन्म स्थान, पिछले दो वर्षों में रहने वाले स्थान का विवरण, बस यही सब देना है। और फिर विदेश जाने का कारण लिखना होगा। इसके लिए तुम नौकरी के पत्र की प्रति लगा सकते हो। फार्म भर कर तुम्हें अपना फार्म किसी सरकारी अधिकारी या प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट से साक्ष्यांकित कराना होगा।

सुरेश – क्या इसके लिए पुलिस जाँच भी होती है?

रमेश – हाँ, स्थानीय पुलिस थाने से कोई घर पर आएगा, उसे आवास का प्रमाण पत्र, राशन कार्ड की नकल या चुनाव पहचान पत्र की प्रति दे देना।

सुरेश – और कुछ?

रमेश – तुम्हें अपने मोहल्ले के दो ऐसे व्यक्तियों का विवरण भी देना होगा जो तुम्हें अच्छी तरह से जानते हों।

सुरेश – यह तो सब हो जाएगा।

रमेश – तब तो पासपोर्ट बहुत जल्दी बन जाएगा। अगर किसी उच्च सरकारी अधिकारी का परिचय पत्र आवेदन पत्र के साथ लगा दो तो बिना पुलिस जाँच के भी पासपोर्ट बन सकता है।

सुरेश – बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आज ही फार्म लेने जाता हूँ।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए।

अभ्यास 8

आपका मित्र गाड़ी चलाने का लाइसेंस बनवाना चाहता है। उसे इस संबंध में आवश्यक निर्देश देते हुए लाइसेंस बनवाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 सारांश

इस इकाई में आपने निम्नलिखित प्रकार के वर्णनात्मक लेखन का अध्ययन किया–

- किसी व्यक्ति के बाह्य रूप तथा उसकी आदतों, पसंद, नापसंद, अभिरूचियों आदि का वर्णन
- किसी स्थान दृश्य या वस्तु का वर्णन
- किसी प्रकार के भोजन को बनाने की विधि तथा
- पासपोर्ट/लाइसेंस बनवाने की विधि

9.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1

आयु	पंद्रह वर्ष	बीस वर्ष
कद	साढ़े पाँच फुट	छह फुट
वजन	80 किलो	65 किलो
शारीरिक गठन	थुलथुला	कसा हुआ
रंग रूप	मोटा	स्वस्थ, सुंदर

अभ्यास 2

बायो डाटा

नाम	:	रमेश
पिता का नाम	:	राकेश मोहन
जन्म तिथि	:	20 अक्तूबर, 1986
वर्तमान आयु	:	30 वर्ष
कद	:	5 फुट 8 इंच
वजन	:	71 किलो
पता (घर)	:	बी–1/438, जनकपुरी, नई दिल्ली
पता (कार्यालय)	:	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली –110066
दूरभाष	:	5598929

शैक्षिक योग्यताएँ :

डिग्री	वर्ष	विश्वविद्यालय	श्रेणी	विषय
बी.काम	2006	दिल्ली	प्रथम	वाणिज्य व अर्थशास्त्र
एम.ए	2008	दिल्ली	प्रथम	वाणिज्य

अनुभव : सात वर्ष

संस्था	वर्ष
केंद्रीय हिंदी निदेशालय	2009 से अब तक

अभिरुचियाँ : संगीत सुनना, बैडमिंटन खेलना

(हस्ताक्षर)
रमेश मोहन

दिनांकः 29.06.2017

अभ्यास 3

1.

चौड़ा	माथा
पके हुए	बाल
माथे पर	उभरी हुई सिलवटें
काले	धब्बे
पिचके हुए	गाल
अगले	वर्ष
आर्थिक	तंगी
चिड़चिड़ा	स्वभाव
हँसमुख	
मिलनसार	
सहयोगी	

2. 1(ङ.) 2(झ) 3(छ) 4(ज) 5(क) 6(ञ) 7(ख) 8(घ) 9(च) 10(ग)

अभ्यास 4

1. महात्मा, कोशल की, दोपहर का, कठोर, भारी, भयानक, ऊँचा, काला, बिखरे हुए, लाल लाल, बड़ी-बड़ी, चौड़ा, हाथ में, सीने पर, उंगलियों की
2. अंगुलिमाल को देखकर सामान्य व्यक्ति डर से काँपते थे। उसके सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी।
3. भगवान बुद्ध के मुस्कराते हुए प्रेम पूर्वक बोलने का अंगुलिमाल के मन पर असर हुआ। उसमें आत्मविश्लेषण की अनुभूति हुई और वह महात्मा बुद्ध के आगे नतमस्तक हो गया।
4. यहाँ 'ठहरना' क्रिया के दो अर्थ हैं -सामान्य अर्थ में 'रुकना' चलना का विलोम 'ठहरना' है। दूसरे अर्थ में 'ठहरना' का अर्थ है किसी कार्य को करना बंद करना। अंगुलिमाल को हत्याएँ करने से रोकने के अर्थ में महात्मा बुद्ध ने 'ठहरना' क्रिया का प्रयोग किया है।

अभ्यास 5

1. लेखक ने घर से स्टेशन की यात्रा आटो से की। वैसे स्टेशन पहुँचने में एक घंटा तक लग जाता था। लेकिन इस बार उसे आधा घंटा ही लगा।

2. टिकट घर पर टिकट खरीदने वालों की काफी भीड़ थी। प्रत्येक खिड़की पर लम्बी लम्बी कतारें थी। लेखक को टिकट खरीदने में बीस मिनट लग गए।

3. गाड़ी के डिब्बे में चढ़ने के लिए यात्रियों की लाइन लगी हुई थी और एक पुलिस का सिपाही उसे नियंत्रित कर रहा था। लेखक को डिब्बे में बैठने का स्थान मिल गया।

अभ्यास 6

संपादक
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली

मान्यवर,

मैं आपके समाचार पत्र के माध्यम से स्थानीय प्रशासन का ध्यान हमारी कालोनी की शोचनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं पश्चिमी दिल्ली के असालतपुर गाँव में रहता हूँ। इधर असालत पुर गाँव के चारों ओर डी.डी.ए की कालोनी का विकास हुआ है। जिसमें सुंदर इमारतें, साफ सुथरी सड़कें और स्वस्थ माहौल के दर्शन होते हैं।

असालत पुर गाँव में घुसते ही ऊबड़-खाबड़ सड़कें, गंदी तंग गलियां और उनमें आवारा कुत्तों का साम्राज्य, गलियों में चारपाई से चारपाई सटी हुई, हर घर के बाहर कूड़ा सड़ांध बदबू, गंदगी से उफनती नालियों के दर्शन होते हैं। बरसात के मौसम में जगह जगह पानी भर जाना तो आम बात है। गाँव में मलेरिया के काफी मामले प्रकाश में आ चुके हैं।

गाँव में छोटी छोटी कोठरियों को, आसपास काम करने वाली महिलाओं तथा फैक्टिरियों में काम करने वाले मजदूरों को, किराए पर उठाया जाता है। इनमें बड़े परिवार रहते हैं। गली में ही खाना बनाते हैं, वहीं खाते हैं, बच्चों को नहलाते हैं और नालियों में बच्चे टट्टी पेशाब करते हैं। गाँव वालों की गाय भैंसों के गोबर की सड़ांध, ये सब यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं।

आपके समाचार पत्र के माध्यम से स्थानीय प्रशासन से अनुरोध है कि वे गाँव की सफाई की ओर ध्यान दें– नालियों की सफाई करें तथा गलियों में गंदगी फैलाने से लोगों को रोकें। नहीं तो, गाँव में महामारी फैलने की आशंका हो सकती है।

सधन्यवाद!

भवदीय
(राधे श्याम)

दिनांकः 24 जून 2018

अभ्यास 7

गीता : डोसा बनाने की विधि क्या है?

सुरेखा : पहले 100 ग्राम चावल और 50 ग्राम उड़द की दाल लो। दोनों को अच्छी तरह साफ कर लो। फिर तीन चार घंटे पानी में भिगोकर रख दो। थोड़ी इमली और लाल मिर्च को पीस लो। अब चावल दाल और

इमली– लाल मिर्च को मिक्सी में मिलाकर, पीसकर 'पेस्ट' बना लो।

गीता : फिर.....

सुरेखा : अब तवा गरम करो– उस पर थोड़ा तेल या घी लगाओ और पेस्ट को तवे पर पतला-पतला फैलाओ, एकाध मिनट ढक्कन से ढक दो और जब डोसा पक जाए तो उसे पलट दो। इसमें सूखी सब्जी भी भरी जा सकती है और मसाला डोसा बन जाता है। दोनों तरफ भूने जाने के बाद, डोसा उतार लो।

गीता : 100 ग्राम चावल से कितने डोसे बनेंगे

सुरेखा : 12 तो बन ही जाएँगे।

अभ्यास 8

1. पहले अपने इलाके के यातायात प्राधिकरण से गाड़ी चलाने के लिए लाइसेंस बनवाने का आवेदन पत्र भर लो। उसमें अपेक्षित सभी विवरण भर लो। अपनी आयु के प्रमाण पत्र, डाक्टरी प्रमाण पत्र तथा लाइसेंस शुल्क जमा कर दो।

   फिर लाइसेंस अधिकारी के पास जाना होगा वह आपसे यातायात संकेतों के बारे में कुछ प्रश्न पूछेगा, उनका उत्तर देने के बाद 'प्रशिक्षुक लाइसेंस' बना दिया जाएगा। यह छह महीने तक लागू रहेगा।

   इस अवधि में गाड़ी चलाने की परीक्षा देकर, सफल होने की स्थिति में स्थायी लाइसेंस बना दिया जाता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 10 आख्यानपरक लेखन

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 आख्यानपरक लेखन

- 10.2.1 सरलता
- 10.2.2 प्रत्यक्ष वार्तालाप शैली
- 10.2.3 तथ्यपरकता
- 10.2.4 वैयक्तिकता
- 10..2.5 शैली

10.3 आख्यानपरक रचना का लेखन

- 10.3.1 विचार
- 10.3.2 विषय का चुनाव
- 10.3.3 विषय का विकास
- 10.3.4 विषय-सामग्री की खोज़

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

आख्यानपरक लेखन के बारे में जानकारी देना इस इकाई का उद्देश्य है। इस इकाई में आपको आख्यानपरक लेखन के लिए विषय का चुनाव और इसके समुचित निर्वाह की पद्धति का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा, जिससे आप अच्छे से अच्छे आख्यान लिखने में समर्थ होंगे।

10.1 प्रस्तावना

जब आप किसी मशहूर कलाकार का गायन सुनते हैं अथवा बैडमिंटन, क्रिकेट या हॉकी आदि खेल देखते हैं तो आपके मन में यह इच्छा उत्पन्न होती है कि काश आप भी वैसा ही गा अथवा खेल सकते। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, गायक अथवा खिलाड़ी दिन प्रतिदिन अपनी कला का अभ्यास करता है और तब जाकर वह इस लायक बन पाता है कि लोगों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन कर सके। यह पूरी तरह अभ्यास से ही संभव हो पाता है। लेखन इसका अपवाद नहीं है। अगर आप अच्छा लिखना चाहते हैं तो आपको इसका निरंतर अभ्यास करते रहना पड़ेगा। अच्छा लेखन प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के जरूरी भी है। इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य आपके विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति का अभ्यास कराना है। आम तौर से व्यक्ति दो वर्ष की उम्र में बोलना और पाँच–छः वर्ष की उम्र में लिखना सीख ही जाता है। कुछ विद्यार्थी स्नातक स्तर पर पहुँचकर इस दिशा में गंभीर प्रयास शुरू करते हैं और वह भी तभी संभव है जब वे अपने दिमाग को रचनात्मक दिशा में मोड़ सकें। किसी विशेष अवसर पर की गई रचना अथवा पत्र वास्तव में आख्यानपरक लेखन को गंभीरता प्रदान नहीं कर पाते, विशेष रूप से तब, जब प्रायः व्यक्ति के मन में यह बात स्पष्ट नहीं होती कि वह अपने विचारों को किस तरह प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करे।

इस स्तर पर व्यक्ति स्वयं को आख्यान लेखन के लिए सक्षम अनुभव नहीं कर पाता। इसलिए लेखन प्रविधि को सीखने का एक मात्र उपाय लेखन का अभ्यास करना ही रह जाता है, जैसे तैरने की कला बिना पानी में गए नहीं आ सकती। लेखन की कला सीखने के लिए दो बातों की विशेष आवश्यकता पड़ती है– पहली शर्त है साक्षरता और दूसरी अभिव्यक्ति की क्षमता या कौशल। इस तरह, आख्यानपरक लेखन के लिए आवश्यक है कि –व्यक्ति में शब्दों और वाक्य संरचना की मौलिक या बुनियादी क्षमता होनी चाहिए जो आम तौर पर स्वीकृत मानदण्डों के अनुरूप हो, उसमें आख्यान की क्षमता हो, घटनाओं में सही संगति बैठाने की कला आती हो और विचार एवं भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भाषा का उपयोग करने की योग्यता रखता हो। लेखन सभी के लिए एक कठिन कार्य है। इसलिए लेखन का निरंतर अभ्यास ही व्यक्ति को कुशल लेखक बनने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

10.2 आख्यानपरक लेखन

अपनी संवेदना, अनुभूति और भावों को व्यक्त करने के लिए ही मनुष्य ने सबसे पहले भाषा और लिपि का आविष्कार किया। कुछ प्रौढ़ता आने पर उसने अभिव्यक्ति के नए–नए तरीके भी ढूँढ निकाले। आख्यान भी मनुष्य की लेखन-कला का एक माध्यम है। वैयक्तिक लेखन, आख्यानपरक लेखन मनुष्य की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं।

वैयक्तिक लेखन में जहाँ व्यक्तिपरकता पर विशेष बल दिया जाता है वही आख्यानपरक लेखन में व्यक्तिपरकता के साथ-साथ वस्तुनिष्ठता भी झलकती है। आख्यानपरक लेखन में भावों और विचारों को लेखक चरित्रों के माध्यम से व्यक्त करता है और बीच-बीच में सीधे-सीधे अपनी बात कहने लगता है जबकि वैयक्तिक लेखन में लेखक की अनुभूति और विचारों के बीच चरित्रों के लिए कोई जगह नहीं होती। इसमें तो लेखक अपनी स्मृति के आधार पर ही घटनाओं या व्यक्तियों का वर्णन करता चलता है।

आख्यानपरक लेखन में चरित्रों के विकास और स्थितियों का वर्णन करते समय लेखक सच्चाई को दिखाता चलता है। यह सच्चाई उस घटना विशेष या व्यक्ति विशेष की भी हो सकती है और पूरे समाज की भी। इस तरह आख्यान में व्यक्ति और घटनाओं के साथ सामाजिक सत्य का भी उद्‌घाटन होता है। जबकि व्यक्तिपरक लेखन में ऐसा होना कोई जरूरी नहीं है। इसमें लेखक ज्यादातर अपने बारे में ही बात करता है अर्थात् उसके जीवन में पहले जो घटनाएँ घट चुकी हैं, जिन व्यक्तियों से उसका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उनके बारे में ही वह अधिकतर बातें करता है। इस प्रकार वैयक्तिक लेखन में जहाँ लेखक के निजी जीवन की अनुभूति प्रधान होती है, वहीं आख्यान में निजी जीवन के साथ समाज की व्यापक जिंदगी के चित्र भी अंकित होते हैं।

10.2.1 सरलता

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, सरलता उसका आवश्यक गुण है। सरल भाषा के प्रयोग से पाठक को समझने में कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि ऐसी भाषा में कल्पना का सहारा नहीं लिया जाता। इस तरह पाठक ऐसे आख्यान को पढ़ने या समझने की दिमागी कसरत करने से बच जाता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

भारत में नदियां संकट में हैं। यह संकट वैसे तो पूरी दुनिया में है, किंतु भारत का संकट इसलिए मायने रखता है कि यहां छह ऋतुएं होती हैं। प्रकृति का भाव समभाव है। भारत में नदियों के किनारे सभ्यतायें विकसित हुईं। जीवन में बदलाव आया। अगर इतिहास के स्रोतों की पड़ताल करें, तो इसके संकेत हमें वेदों से प्राप्त होते हैं। वेदों में जल देवता हैं और पंच तत्व के रूप में जल तत्व की परिकल्पना की गई है।

(कादम्बिनी, जून 2017, आवरण कथा)

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट है कि लेखक भारत में नदियों पर मंडरा रहे संकट के बारे में बताना चाहता है। नदियां भारत की जीवन रेखा मानी जाती हैं। हमारी विभिन्न सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है। यह ध्यान देने योग्य है कि इस उदाहरण में कहीं कोई उलझाव नहीं है और लेखक जो कहना चाहता है, वह पाठक तक सहजता से सम्प्रेषित हो रहा है। उपर्युक्त लेख से ही एक और उदाहरण देखें:

आने वाले समय में जल संकट विश्वयुद्ध का सबब बनने वाला है, यह सबको पता है। अमेरिका जैसे देश अपनी नदियों पर से बांधों को हटा रहे हैं। उन मूल जल स्रोतों को बचा रहे हैं, जहां से पानी आ रहा है। हमें समझना चाहिए कि यदि नदियां नहीं बचेंगी; जल नहीं बचेगा, तो यह जीवन भी नहीं बचेगा। जिन तत्वों से यह शरीर बना है, उनमें सबसे प्रमुख जल तत्व है और जिन तत्वों से देश बना है, उनमें सबसे प्रमुख नदियां हैं।

(वही) पृ. 12

इस उद्धरण में भी लेखक ने बिना किसी उलझाव के सहज–सरल भाषा में अपनी बात कह दी है। शब्दों का प्रयोग भी सावधानी पूर्वक किया गया है, ताकि पाठक को आशय समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। एक और उदाहरण देखिए:–

भारत ने इजरायल को 17 सितंबर, 1950 को औपचारिक रूप से मान्यता दी थी, पर दोनों देशों के बीच कूटनीतिक रिश्ते 1992 में शुरू हुए। तब से शीर्ष स्तर के कई दौरे हो चुके हैं। मगर यह पहला मौका था, जब हमारे किसी प्रधानमंत्री ने इजरायल का दौरा किया। इससे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा स्वाभाविक तौर पर दोनों मुल्कों के संबंधों में मील का पत्थर बन गई ।

(हिन्दुस्तान, 7 जुलाई, 2017)

यह उद्धरण भी सरलता का उत्कृष्ट उदाहरण है। भारत के प्रधानमंत्री के इजरायल दौरे पर केन्द्रित संपादकीय आलेख का यह अंश बिना किसी बनावट और शब्दाडंबर के सरल–सहज शब्दों में पाठकों तक अपना संदेश संप्रेषित करने में समर्थ है। आख्यानपरक लेखन में इस तरह की भाषिक सरलता अपेक्षित होती है।

10.2.2 प्रत्यक्ष वार्तालाप शैली

इस शैली के अन्तर्गत लेखक की कोशिश यह होती है कि वह पाठक से सीधे बातचीत करते हुए दिखाई दे। इसी क्रम में वह (लेखक) पाठक के सामने अपना दृष्टिकोण भी प्रकट करने का प्रयत्न करता है। आख्यान की यह शैली आम तौर से प्रयोग में नहीं देखी जाती है। उदाहरण के लिए–

एक मध्यम वर्गीय भारतीय परिवार में माँ-बाप का एक मात्र, छोटा-मोटा सा या बड़ा सपना यही तो रहता है कि बच्चे पढ़-लिख लें, ठीक-ठाक डिग्री ले लें और किसी नौकरी में रम जम जाएँ। बँधा–बँधाया वेतन, फिर दहेज, फिर बहू– फिर बच्चे, नाती-पोतों की घिचपिच। सँकरी-सी ट्रेक पर भागते सपने। एक निरंतर बाधा दौड़। एक छोटा सा सपना और वह भी अधूरा-सा ही, साकार हो जाए, तो क्या कहने। कितनी बाधाएँ सपनों की टाँगों में उलझती हैं और कितने सपने लहूलुहान होकर दौड़ से ही बाहर हो जाया करते हैं।

x x x x x

परिवार बस टूटे हुए सपनों का मलबा बन कर रह गया है। घर के हर कोने में स्वप्न टूटे-फूटे पड़े हैं। वे, जिन्हें बड़े प्यार से सहेजा गया था कभी अब धूल खा रहे हैं। इन स्वप्नों में सबसे ज्यादा स्वप्न वे हैं, जो जिज्जी ने कभी गुच्चन, लल्ला आदि के लिए देखे और सहेजे थे।

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों में एक परिवार की ध्वस्त होती इच्छाओं को चित्रित करने का प्रयास दिखाई देता है।

परन्तु लेखक ने उस परिवार के टूटते सपनों को इस तरह बयान किया है जिससे लगता है कि वह सामने बैठे किसी व्यक्ति से बातें कर रहा हो। यहाँ उसकी आख्यान शैली बहुत प्रभावशाली रूप में उभरकर सामने आ गई है।

शिक्षा की बात आई है तो इस एक वर्ष में परिवार के शैक्षणिक विकास की बात भी कर ली जाए। 'विकास' शब्द पर आपको उज्र हो तो 'पतन' कह लीजिए। यूँ भी विकास और पतन मात्र सापेक्ष मूल्य हैं। जैसे 'स्कूल से निकाल दिया जाना' आपकी संकुचित दृष्टि में पतन हो सकता है, परन्तु वही घटना लल्ला की दृष्टि में विकास की राह में उठा उनका एक लम्बा कदम है।

इस कथन में आपको हल्का सा व्यंग्य का आभास भी आएगा। मानो लेखक लल्ला और उनके जैसे नौजवानों की समूची पीढ़ी पर किसी के सामने अपना मंतव्य प्रकट कर रहा हो। यहाँ लेखक का मंतव्य भी स्पष्ट है।

पुलिया से उठते हुए अपने-अपने घर की दिशा में प्रस्थान करने से पूर्व लल्ला और फिरंगी की बीच तय हुआ कि जैसे ही कुछ पैसों का जुगाड़ हुआ, कारतूस खरीदे जाएँगे और पास के जंगल में जाकर निशानेबाजी का अभ्यास किया जाएगा। दोनों के चले जाने के बाद खाली पड़ी पुलिया देर तक अकेलापन महसूस करती रही।

इस उदाहरण से हमें दो व्यक्तियों के बीच आपसी बातचीत का आभास मिल जाता है। इसके अलावा इस बातचीत में जो महत्वपूर्ण फैसले लिए गए, उसकी भी झलक मिल जाती है।

10.2.3 तथ्यपरकता

आख्यानपरक लेखन में तथ्यपरकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्थान, समय और गतिविधियों के वर्णन से आख्यान को न केवल विकसित किया जा सकता है बल्कि उससे एक हद तक विश्वसनीयता भी आती है। 'कादम्बिनी' के जून 2017 अंक से एक उद्धरण–

पश्चिम बंगाल स्थित सुंदरबन, दुनिया का सबसे विशाल डेल्टा है। बेशुमार खनिज और पोषक तत्वों की उपस्थिति वाली लाल और लाल-पीली लेटराइट मिट्टी युक्त होने के कारण सुंदरबन दुनिया के सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में से भी एक है। हल्दिया, कोलकाता, मोंगला और चिन्तागोंग– जैसे प्रसिद्ध समुद्री पोत अड्डे सुंदरबन डेल्टा के किनारे ही हैं। नद्य ब्रह्मपुत्र, नदी मेघना, हुगली और बंगाल की खाड़ी ने मिलकर इसे त्रिभुजी कमान का रूप दिया है। इस नाते सुंदरबन डेल्टा को गंगा– ब्रह्मपुत्र डेल्टा भी कहते हैं।

उपर्युक्त अंश से हमें सुंदरवन डेल्टा के बारे में तथ्यपरक जानकारी प्राप्त होती है। लेखक ने शब्द-चयन और वर्णन शैली इस तरह की प्रयुक्त की है, जिससे सुंदरवन की संरचना का दृश्य हमारे सामने जीवंत हो उठता है। सुंदरवन की भौगोलिक संरचना के वर्णन के साथ-साथ खनिज और पोषक तत्वों से भरपूर उसकी उपजाऊ मिट्टी का

उल्लेख डेल्टा क्षेत्रों में सुंदरबन के महत्व को दर्शाने के लिए किया गया है। यह अंश तथ्यपरक लेखन का एक सटीक उदाहरण है। 'जनसत्ता' के 7 जुलाई, 2017 अंक से एक उदाहरण देखिए:

> **हालांकि पिछले वर्ष मानसून की अच्छी बारिश ने कई प्राकृतिक जल स्रोतों को पानी से लबालब कर के लोगों को बड़ी परेशानी से बचाया है, वरना तो मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान, झारखंड, ओड़िसा, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल के बड़े हिस्से में सूखे की मार ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया था। महाराष्ट्र के लातूर में जल संकट के कारण पानी की सप्लाई करने वाले टैंकरों के आसपास परस्पर संघर्ष को रोकने के लिए वहां के कलेक्टर को धारा-144 लगानी पड़ी थी। नांदेड में पानी की कमी के कारण अस्पताल प्रशासन ने मरीजों के जरूरी आपरेशन तक टाल दिए।**

इस उदाहरण में भारत के कुछ राज्यों में हुई अच्छी वर्षा का सन्दर्भ लेते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सूखे की समस्या पर विचार किया गया है। इसका गहराई से विवेचन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सूखे की समस्या अब इक्का–दुक्का राज्यों तक सीमित न रहकर पूरे देश में व्याप्त हो रही है। इसमें लेखक पहले एक प्रसन्नता की बात को उठाता है फिर उसे पुराने संदर्भों से जोड़कर इसके पीछे की स्थितियों को स्पष्ट करता है। जल हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकता है, किन्तु प्रदूषण और प्राकृतिक असंतुलन के कारण वर्षा के कम होते स्तर ने इसे भीषण समस्या के रूप में हमारे सामने ला खड़ा किया है। इस तरह इस उदाहरण में देखना चाहिए कि लेखक ने तथ्यात्मकता का सहारा लेकर एक छोटी सी सूचना को समाचार में परिवर्तित कर दिया है। एक और उदाहरण देखिए–

> **'औद्योगिक' विकास के कारण संसार व्यापी प्राकृतिक सम्पदा का जो क्षय हुआ है, उससे पर्यावरण-प्रदूषण की जो समस्या उत्पन्न हुई है, उसके कारण अनेक जैवी एवं वानस्पतिक प्रजातियाँ नष्ट होती जा रही है। पर मनुष्य स्वयं भी अपनी प्रजाति के अतिरिक्त अन्य प्रजातियों को, अपने मजहब के अतिरिक्त अन्य मजहबों के अनुयायियों को, अपनी विचारधारा के अतिरिक्त अन्य विचारधाराओं के मानने वालों को, अपनी सभ्यता के अतिरिक्त अन्य सभ्यताओं को येन-केन प्रकारेण नष्ट करने पर तुला हुआ है।**

उपर्युक्त उद्धरण में अनेक मानवीय चिंताओं को व्यक्त किया गया है। पर्यावरण–प्रदूषण से लेकर धर्म, विचारधारा और सभ्यता पर मंडराते संकट के केन्द्र में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति को उत्तरदायी ठहराया गया है। यह एक घटना मात्र नहीं है बल्कि निरंतर होती जाने वाली घटनाओं पर लेखक की टिप्पणी है। इस टिप्पणी में लेखक की निजी भावानुभूति व्यक्त हुई है। भाव आख्यान परक लेखक की प्रमुख विशेषता होते हैं।

10.2.4 वैयक्तिकता

वैयक्तिकता आख्यानपरक लेखन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इस शैली के प्रयोग से लेखक या वक्ता का व्यक्तिगत चरित्र उभर–कर सामने आ जाता है। इसमें इतने भारी और गंभीर शब्दों का प्रयोग होता है कि उससे हास्य बिखरने लगता है। जहाँ एक वैयक्तिकता का सवाल है, यह प्रत्येक लेखक की बिल्कुल निजी शैली होती है। उदाहरण के लिए ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास 'बारामासी' का एक टुकड़ा उधृत है–

> **इधर गुच्चन समझ नहीं पा रहे थे कि लोग इंटर कैसे पास कर लेते हैं। इन पाँच वर्षों में उन्होंने देखा कि एक से एक खतियल लुच्चे-लफंगे लड़के तक इंटर करके निकल गए। कैसे किया जाता है इंटर पास? क्यों**

नहीं हो पाते? पाँच वर्षों में वे कितनी बार कितने विषयों में फेल हुए हैं, इसका हिसाब लगाने बैठते तो हिसाब के इस गणित में भी वे फेल ही होते। किले की ऊंची दीवार-सा सामने आ गया था इंटर और किले के भारी फाटक पर खतरनाक अनजाने प्रश्नों के अस्त्रों से लैस न जाने कितने विषय पहरा दे रहे थे। वे किस-किस से जूझते? वे अकेले और किले पर ऐसी भारी कुमुक। वे इधर एक विषय से भिड़ते, उसके गरदनिया देकर जमीन पर दचकते कि उधर पाँच विषय उन पर पीछे से चढ़ बैठते।

इसमें लेखक की हास्य-व्यंग्य शैली का स्पष्ट संकेत मिलता है। देशज भाषा के शब्दों का प्रयोग करके लेखक जहाँ व्यंग्य की धार को पैना बनाया है वहीं अनजाने ही हास्य की छटा बिखरने लगती है। इसी तरह का एक और उदाहरण इसी पुस्तक से प्रस्तुत है–

बूढ़ा जो बातें कर रहा था, वह बुंदेलखंड का मन बोल रहा था। यहाँ इज्जत के अपने मापदंड थे। यहाँ मर्डर अपराध नहीं था बल्कि बैरी से बदला लेकर जन्म सफल करने का साधन मात्र था। बुंदेलखंड में अपराध की अपनी निराली दुनिया और फिलॉसफी थी। हर अपराध के पीछे घनघोर आत्मसम्मान का भाव भी था। छुपकर चोट्टों की तरह अपराध करने को यहाँ घटियापन माना जाता था। यह भी कोई बात हुई कि चोरी-चोरी गए, और चोरी करके, चोरी-चोरी ही, चोरों की तरह ही वापस आ गए। यहाँ के चोर जब भी चोरी करने किसी के घर घुसे तो बिना गृहस्वामी के साथ माकूल मारपीट किए कभी बाहर नहीं निकले। चोरी करने निकले हैं तो क्या किसी के बाप का कर्जा काढ़ा है कि चले जा रहे हैं छुप-छुपकर। अपराध को डंके की चोट पर करने पर जोर है। कायरोंवाला काम नहीं। डकैती डाली और जाते जाते छाती ठोककर कहते गए कि थाने में अपने बाप से कह देना कि रामपुर के ध्यान सिंह ने वारदात करी है– उखाड़ ले, जो उखाड़ सके। यहाँ जनश्रुतियों और लोककथाओं के नायक वे ईमानदार तथा दिलेर डाकू रहे हैं, जो तिथि तथा समय की पूर्व चेतावनी देकर डाका डालते थे और सौ पुलिस वालों को भी चकमा देकर साफ निकल जाते थे।

उपर्युक्त अंश में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वे गंभीर तथा भारी इस अर्थ में लग सकते हैं कि उनको सीधे लोक-समाज से लिया गया है। ये पूरी तरह साहित्यिक नहीं हैं फिर भी इनके प्रयोग से न केवल उस स्थान विशेष के सामाजिक वातावरण का पता चलता है बल्कि ये लेखक की लोकरुचि और समाज से गहरे जुड़ाव का भी संकेत देते हैं। इसी बिन्दु पर हमें लेखक की निजता भी झलकती है और चरित्रों की मानसिकता उजागर हो जाती है। इस तरह वैयक्तिकता किसी भी लेखक की अपनी खास भाषा शैली होती है जिसमें वह हास्य, व्यंग्य और करुणा आदि भावों को व्यक्त करता है।

10.2.5 शैली

शैली का लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान होता है। वैसे तो शैली को परिभाषित करना कठिन है फिर भी कुछ विद्वानों ने इसके विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं। स्विफ्ट के अनुसार – ''समुचित स्थान पर सही शब्दों का प्रयोग ही शैली की सच्ची परिभाषा हो सकती है।'' बफन के अनुसार– ''मनुष्य अपने आप में शैली है''। चेस्टफील्ड ने लिखा है कि, ''शैली विचारों का परिधान (पहनावा) है''। ह्वाइटहेड का कहना है कि ''शैली मन की नैतिकता है।''

इस तरह स्विफ्ट की परिभाषा जहाँ बहुत उपयोगी और स्पष्ट प्रतीत होती है वहीं बफन यह कहना चाहते हैं कि जो कुछ हम लिखते हैं उससे हमारी अंतरात्मा का थोड़ा बहुत

हिस्सा अवश्य प्रकट होता है। ह्वाइटहेड की परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि शैली और लेखक के मन के बीच एक अटूट रिश्ता होता है। इस प्रकार शैली पाठक को लेखक के करीब लाने में सहायक होती है। यह व्यक्ति की मौलिक सूझ-बूझ से अलग चीज नहीं होती। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का लेखन बहुत खराब है तो इसका मतलब यह होता है कि उसके लिखने का तरीका पाठक के मन पर कोई ठोस प्रभाव डालने में सक्षम नहीं है। लेखक शब्दों, ध्वनियों और व्याकरण को व्यवस्थित रूप देने के लिए हमेशा अभ्यास करता है ताकि उसके लेखन का अभिप्राय स्पष्ट हो सके। इस तरह हम कह सकते हैं कि शैली के माध्यम से एक लेखक अपने कौशल में निरंतर निखार लाने की कोशिश करता है।

बोध प्रश्न 1

1. आख्यानपरक लेखन से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. आख्यानपरक लेखन सरल क्यों होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूति कीजिएः

   (क) शैली..... को..... के करीब लाने में सहायक है।

   (ख) .....शैली आख्यानपरक लेखन में आम तौर से प्रयोग में कम लाई जाती है।

   (ग) .....शैली के प्रयोग से लेखक का व्यक्तिगत चरित्र उभर आता है।

10.3 आख्यानपरक रचना का लेखन

सभी तरह की रचनाएँ इसी बात को उजागर करती हैं कि हम किसी व्यक्ति, स्थान और घटना के बारे में क्या सोचते हैं? घटनाएँ तो हमारे चारों तरफ घटती रहती हैं और व्यक्ति कहीं न कहीं उनमें हिस्सेदार भी होता है। लेकिन हम अपने लेखन के लिए उनमें से कुछ ही घटनाओं का चुनाव क्यों करते हैं? क्योंकि हम जिनके बारे में सोचते हैं, उनको ही लेखन के लिए चुनते हैं। एक लेखक किसी आख्यान को लिखने से पहले

अपने दिमाग में उसके बारे में स्पष्ट रूपरेखा बना लेता है। इस तरह आख्यान किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के बारे में लेखक की सोच को प्रकट करता है जबकि वर्णन में लेखक किसी घटना का हूबहू वर्णन कर देता है।

10.3.1 विचार

हम केवल उसी चीज के बारे में लिख सकते हैं जिसका हमें अनुभव हो, जिसे हमने देखा हो और जिसके बारे में हमने कुछ सोचा हो। दूसरों के अनुभवों और विचार के बारे में जब हम बात करते हैं तो वह हमारा निजी विचार नहीं होता। दूसरों से लिया गया विचार उसी तरह हमारा अपना नहीं हो सकता जैसे किसी दूसरे व्यक्ति का कपड़ा हमारी देह पर सज नहीं पाता। रुचिकर कहानी या आख्यान वही हो सकता है जिसे स्वयं लेखक ने निजी तौर पर अनुभव किया हो अथवा उसके बारे में सोचा हो। इसलिए आख्यान में मौलिकता आवश्यक और महत्वपूर्ण होती है। आख्यान के प्रमुख स्त्रोत हैं–

(i) **स्मृति**– इसमें अनेक बातें शामिल हैं। मसलन किन व्यक्तियों या स्थानों को आप स्पष्ट रूप से याद कर सकते हैं? किन दिनों को आप याद करते हैं? इनमें वह दिन भी हो सकता है जिस दिन आपको बेहद खुशी का अनुभव हुआ हो अथवा किसी दुख या पीड़ा से गुजरना पड़ा हो। इसमें उस दिन को याद करते हैं जब आपके परिवार, पड़ोसी या मुहल्ले में कोई अप्रिय घटना घट गई हो।

(ii) **मित्र और प्रिय स्थान**– इसमें आप देखते हैं कि किस व्यक्ति को आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं? अथवा किसने आपको बेहद प्रभावित किया है? अथवा वह कौन-सा स्थान है जहाँ आप लौटकर दुबारा जाना चाहते हैं? तो इस तरह कोई प्रिय व्यक्ति या स्थान आख्यान का विषय बन सकता है क्योंकि लेखक इनको बहुत करीब से जानता है और उनके बारे में सोच सकता है।

(iii) **घटनाएँ**– वे घटनाएँ जिन्होंने आपके जीवन को झकझोर कर रख दिया हो, अथवा जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि या निराशा भी आख्यान का विषय बन सकती है। इसमें वह व्यक्ति भी शामिल हो सकता है जिसकी सुंदरता, भलमनसाहत या शक्ति ने आपको प्रभावित किया हो।

(iv) **कल्पना और इच्छाएँ** – इनमें व्यक्ति से जुड़ी वे इच्छाएँ और कल्पनाएँ शामिल होती हैं जिनमें वह किसी व्यक्ति से मिलने के बेहद आतुर दिखाई देता है या वह किसी स्थान या देश में रहने के लिए लालायित रहता है।

इस प्रकार आख्यानपरक लेखन में व्यक्ति की इच्छा-आकांक्षाओं और अनुभवों का विशेष महत्व होता है।

उदाहरण

जिनको हम समझते हैं, व्यतीत हो गया; वह वास्तव में समाप्त नहीं हुआ। वह हमारे साथ जी रहा है। काव्य में भी यही है कि उसमें किसी देश की संस्कृति, उसकी धरती बोलती है, उसका आकाश बोलता है।

(चिंतन के क्षण– महादेवी वर्मा) से उद्धत

उपर्युक्त अंश में महादेवी ने कविता के बारे में अपना विचार व्यक्त किया है। चूँकि महादेवी हिन्दी की महत्वपूर्ण कवयित्री हैं इसलिए कविता के विषय में उनके द्वारा व्यक्त विचारों में मौलिकता आना स्वाभाविक है।

(i) **उस समय यह देखा मैंने कि साम्प्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थी; बुंदेलखण्ड की आती थी; वे बुंदेली में बोलती थी। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिन्दी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परन्तु आपस में हम अपनी भाषा ही**

बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

(चिंतन के क्षण– महादेवी वर्मा)

यहाँ लेखिका स्मृति के सहारे अतीत के उन क्षणों को याद करती है जो अनेकता में एकता का आदर्श प्रस्तुत करते थे। इस अंश में सामाजिक-राजनीतिक बदलाव की प्रवृत्तियों की भी झलक मिलती है।

(ii) **अरैल जाने के दो मार्ग थे– एक बाँध के नीचे किले के पास पहुँचकर नाव से यमुना पार करनी पड़ती थी और दूसरे में यमुना पुल पार कर नैनी होते हुए जाना पड़ता था। नैनी के मार्ग में पहले कुछ मुस्लिम बस्ती थी फिर मल्लाहों के घर थे और फिर पंडों के। मैं इसी स्थल मार्ग से जाती थी, क्योंकि उसमें सब प्रकार के व्यक्तियों से सहज सम्पर्क था''**

(चिंतन के क्षण – महादेवी वर्मा)

उपर्युक्त उदाहरण में महादेवी वर्मा की जन साधारण से आत्मीय लगाव की झलक मिलती है। साथ ही उस स्थान के प्रति उनके मन का आकर्षण भी उजागर हो जाता है।

(iii) **लाठी–फरसे लिए हुए कई मल्लाह ताँगे के पास आ गए थे, पर करमू मियाँ तब भी शांत बैठे हुए थे। लगता था मानो मृत्यु से साक्षात्कार भी उनके लिए नित्य की सामान्य घटना थी। जब आक्रमणकारियों से कहा गया कि उस बूढ़े निहत्थे व्यक्ति ने उन्हीं के बीमार बच्चों तक दवा, पथ्य आदि पहुँचाने के लिए यह खतरा मोल लिया है, तब उनमें से कई संकुचित हो गए। सामान उन्हीं को सौंपकर हम उस दिन स्तब्ध स्थिति में घर लौटे।**

उक्त अंश में जिस घटना का वर्णन किया है उसमें करमू मियाँ की भलमनसाहत स्पष्ट उजागर हो गई है।

(iv) **''वातावरण'' ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया शायद। वह सपना खो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।''**

(चिंतन के क्षण – महादेवी वर्मा)

यहाँ लेखिका ने बचपन की स्मृतियों के बहाने मेल-मिलाप की संस्कृति के प्रति मन का प्रेम व्यक्त किया है। बचपन का वातावरण उसकी इच्छा में अब भी उतरता है और एक सुन्दर भविष्य का निर्माण करना चाहता है।

एक अन्य उदाहरण, जिसमें महादेवी वर्मा के कवि हृदय और उन्मुक्त चेतना का परिचय मिलता है–

सवेरे के पुलक पंखी वैतालिक एक लयवती उड़ान में अपने-अपने नीड़ों की ओर लौट रहे थे। विरल बादलों के अंतराल से उन पर चलाए हुए सूर्य के सोने से शब्दभेधी वाण उनकी उन्मद गति में ही उलझकर लक्ष्य–भ्रष्ट हो रहे थे।

(चिंतन के क्षण – महादेवी वर्मा)

10.3.2 विषय का चुनाव

जो चीजें निजी अनुभव, विचार और पर्यवेक्षण का हिस्सा होती हैं, उन्हीं को आख्यान का विषय बनाया जा सकता है। जिनके बारे में हमें थोड़ी बहुत जानकारी होती है उनको आधार बनाकर किया गया लेखन ही वास्तव में रोचक और प्रभावशाली हो सकता है। क्योंकि उनके बारे में लेखक खुद का विचार भी व्यक्त करता है।

10.3.3 विषय का विकास

जब हम किसी विषय का चुनाव कर लेते हैं तब हमारे सामने दूसरी समस्या यह होती है कि हम उस विषय के साथ एक लेखक के रूप में व्यवहार कैसे करें। जब एक बार हम इसका निश्चय कर लेते हैं। तब हमें उस विषय के अनुरूप सामग्री जुटाना आसान हो जाता है। किसी विषय के साथ लेखक के व्यवहार का मतलब है उस विषय के विकास से सम्बन्धित योजना तैयार करना क्योंकि बिना योजना के कोई लेखन संभव नहीं होता। प्रत्येक आख्यान एक तरह से पाठक से संवाद होता है और संवाद के लिए जरूरी है कि वह विचार, भावना और तथ्य पर आधारित हो। कोई भी आख्यान लिखने से पहले लेखक के दिमाग में एक विचार कौंधता है जिसे वह बाद में विकसित करता है।

10.3.4 विषय-सामग्री की खोज

विषय का चयन और उसके विकास की दशा निश्चित कर लेने के बाद लेखक को उस सामग्री की खोज करनी पड़ती है जो उसके लेखन को पुष्ट कर सके। वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ अथवा अवैयक्तिक एवं वस्तुनिष्ठ– ये दो मुख्य स्रोत हैं, जिनके आधार पर आख्यान को विकसित और पुष्ट किया जा सकता है। व्यक्तिपरकता लेखन में मानवीय संवेदना का संचार करती है। साथ ही इससे पाठक का ध्यान आकृष्ट करने में भी आसानी होती है। सच तो यह है कि बहुत बड़ी संख्या में तथ्यों का संकलन कर भी लिया जाए तो भी वह व्यक्ति के विचार और कल्पना की बराबरी नहीं कर सकता है क्योंकि तथ्यों में निजीपन की अनुभूति कराने की क्षमता नहीं होती, जो एक आख्यान के लिए आवश्यक होता है।

इसके अलावा इसमें लेखक का पर्यवेक्षण भी महत्वपूर्ण होता है। इससे हम न केवल दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के बीच अंतर कर पाते हैं, बल्कि पर्यवेक्षण व्यक्ति या वस्तु की चारित्रिक पहचान करने की दृष्टि भी देता है। इसलिए आख्यान के लिए सूक्ष्म पर्यवेक्षण बहुत ही आवश्यक है।

उदाहरण के लिए राम दरश मिश्र की आत्मकथा 'सहचर है समय' का एक अंश–

> **एक कवि थे चंचरीक। ये गोरखपुर के थे। ये लोक-कवि थे। गोरखपुर में इनका नाम सुन रखा था। एक दिन किसी कवि-सम्मेलन में भेंट हो गई। उन दिनों मेरी एक कविता 'आँखे' बहुत प्रसिद्ध हुई थी– 'इनका संसार निराला है, उनकी अनजान कहानी है' पंक्ति बहुतों की जुबान पर उतर आई थी। चंचरीक जी ने यह कविता सुनी। मुझसे बातचीत की और पता नोट किया। एक दिन छात्रावास में आ गए। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वे 'अप्सरा' नाम की एक पत्रिका निकालते थे, उसके लिए उन्होंने मेरी 'आँखें' कविता माँगी। मेरे लिए इससे अधिक खुशी की बात क्या होती? अप्सरा के दो एक अंक निकल चुके थे, बहुत भव्य अंक थे। चंचरीक जी बहुत जीवट व्यक्ति थे। वे अप्सरा के लिए वेश्याओं से पैसे उगाहते थे और उनकी समस्या सम्बन्धी सामग्री भी उसमें देते थे। वे निस्संकोच भाव से उनके कोठे पर जाते थे, उनका दुःख –दर्द सुनते थे। संभ्रांत साहित्यकारों के समाज में उनका आना जाना कम था, जनता के बीच ही वे आते-जाते थे। लोक कवि थे, लोक-कविताएँ एकत्र करते थे। वे गोरखपुर के एक निर्धन**

परिवार के थे, जाति से भी बहुत ऊँचे नहीं थे, इसलिए उनमें बड़प्पन का कोई छद्म नहीं था। उनसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती थी।

उपर्युक्त आख्यान में लेखक ने स्मृति के सहारे व्यक्ति के व्यक्तित्व को गहराई से उतारने की कोशिश की है। यहाँ हम देखते हैं कि लेखक ने कवि चंचरीक से भेंट होने और उनके द्वारा मनोयोग पूर्वक पत्रिका निकालने की प्रशंसा करते हुए उनकी खुशी भी जाहिर की है। यह खुशी और प्रशंसात्मक टिप्पणी लेखक के निजी भावों का उद्‌गार है। आख्यानपरक लेखक में इस शैली का बहुत महत्व है। इसमें लेखक ने कवि चंचरीक के मानवीय पक्ष को बहुत ही संवेदना के साथ उभारने की कोशिश की है। इसलिए वर्णित व्यक्ति का समूचा व्यक्तित्व हमें प्रभावित भी करता है।

एक और उदाहरण अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' से प्रस्तुत है–

कुछ घटनाएँ बहुत ही थोड़े समय के बाद रचना का अंग बन जाती हैं, पर कुछ घटनाओं को कलम तक पहुँचने के लिए बरसों का फासला तय करना पड़ता है। पहली तरह की घटनाओं में मुझे एक याद है जब मैं 1960 में नेपाल गई थी। लगभग पाँच दिन तक रोज शाम के समय किसी न किसी बैठक में कवि सम्मेलन होता था, जहाँ कुछ नेपाली कवि रोज मिल जाते थे। उनमें एक कवि थे चढ़ती जवानी में, किंतु बहुत ही गंभीर स्वभाव के। मैंने केवल इतना ही जाना था कि वह रोज धीरे से मेरी एक खास कविता की फरमाइश अवश्य करते थे, इससे ज्यादा कुछ नहीं। पर जिस दिन वापस दिल्ली आना, और कई कवियों के साथ वह एयरपोर्ट आए थे, और संयोग था कि उस दिन प्लेन एक घंटे लेट था, प्रतीक्षा के सारे समय में वह मेरा भारी गर्म कोट उठाए रहे। फिर प्लेन के आने पर जब मैं उनसे कोट लेने लगी, तो उन्होंने धीरे से कहा– 'यह जो भार दिखाई देता है यह तो आप लीजिए, जो नहीं दिखाई देता वह मैं लिए रहूँगा।' और मैं बस चौंक-सी गई थी। दिल्ली पहुँचकर एक कहानी लिखी 'हुंकारा' – उनके बारे में नहीं, पर यह वाक्य अनायास ही उस कहानी में आ गया।

उपर्युक्त अंश में लेखिका ने उस नेपाली कवि का ऐसा आख्यान प्रस्तुत किया है जिसमें उनका व्यक्तित्व झलकने लगता है। नेपाली कवि के मन में लेखिका के प्रति प्रेम का जो अंकुर फूटा था उसे बहुत ही ईमानदारी और सहानुभूति के साथ चित्रित किया गया है। इसलिए हमें यह कहने में कोई कठिनाई नहीं महसूस होनी चाहिए कि आख्यान परक लेखन किसी व्यक्ति या वस्तु के बाह्य रूप का रेखाकंन नहीं है बल्कि यह उसके आंतरिक गुणों या विशेषताओं का अनुभूतिपरक वर्णन है। अमृता प्रीतम के उपर्युक्त शब्द हमें इसका प्रमाण देते हैं। लेखिका ने नेपाली कवि के भावोच्छ्वास पर स्तब्ध होते हुए उनका ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जिससे उस नेपाली कवि के बारे में पाठक के मन में कोई विकार या बुरा भाव प्रकट नहीं होता बल्कि वह (पाठक) उस भावोद्‌गार को एक संवेदनशील सौन्दर्य प्रेमी व्यक्ति के सहज आकर्षण का परिणाम मान लेता है।

एक जीवन–प्रसंग 'नवनीत' अक्तूबर 1999 से–

एक दिसम्बर 1985 को बाथम ने अपनी पद यात्रा पूरी कर ली। उसने तब अटलांटिक महासागर में कूदकर यह संकेत दिया कि वह ब्रिटेन की लम्बाई के बराबर दूरी तय कर चुका है तथा इसके आगे कोई भूखण्ड नहीं रह गया है। वह कोई 10 मिनट तक समुद्र की छाती पर तैरता रहा। वहाँ उसके हजारों प्रशंसकों ने उसका तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्वागत किया।

x x x x x x x x x x x x x

वह मुस्कराकर बोला था– इस पद यात्रा से सिर्फ धन ही नहीं जुटा उनके लिए। मैंने अपने देश के लोगों को, उन उपेक्षितों के प्रति उनका दायित्व क्या है, यह भी बतलाने में कुछ सफलता अर्जित की। उनकी समस्याएँ सिर्फ धन या साधन जुटाने मात्र से नहीं, उन्हें भरपूर स्नेह और अपनत्व देकर ही पूरी की जा सकती है। मेरी यह पदयात्रा इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उठाया गया कदम था''

(विवेक भारती)

इस उदाहरण के पहले खण्ड में लेखक ने बाथम के चरित्र का वस्तुपरक वर्णन करते हुए उसके साहस की प्रशंसा की है जबकि दूसरे खण्ड में उसका वर्णन आत्मपरक हो गया है जिसमें मानवीय संवेदना का स्पर्श प्रबल हैं। यह चित्रण पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में इसलिए भी सफल होगा क्योंकि इसमें एक साहसी व्यक्ति की यात्रा का सार्थक एवं सोद्देश्य वर्णन किया गया है जो पाठक के मन को छूने और उसमें प्रेरणा जगाने में भी सक्षम है ।

बोध प्रश्न 2

1. आख्यान के प्रमुख स्रोत कौन–कौन से हैं?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. निम्नलिखित के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिएः

   (क) निजी अनुभवों एवं विचारों को ही आख्यान का विषय बनाया जा सकता है। ( )

   (ख) लेखक का पर्यवेक्षण किसी व्यक्ति या वस्तु की चारित्रिक पहचान करने की दृष्टि देता है। ( )

   (ग) हम जिनके बारे में सोचते हैं, उन्हें लेखन के लिए कभी नहीं चुनते ( )

10.4 सारांश

आख्यानपरक लेखन के बारे में अब तक जो विवेचन किया गया है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि आख्यान किसी वस्तु या व्यक्ति या घटना का हूबहू वर्णन नहीं है बल्कि इसमें वस्तु, व्यक्ति या घटना के विषय में लेखक की भावना भी प्रकट होती है। इसलिए आख्यानपरक लेखन में एक तरह की निजता का भाव निहित होता है। इसमें व्यक्ति या घटना से सम्बन्धित स्मृतियाँ, कल्पना और इच्छाएँ अभिव्यक्त होती हैं। मान लीजिए, हम किसी व्यक्ति को देखकर कहते हैं कि यह व्यक्ति बदसूरत और लम्बी नाम वाला है लेकिन बहुत भला है। यहाँ उसकी सूरत और लम्बी नाक तो उस व्यक्ति के बारे में यथास्थिति की जानकारी देते हैं लेकिन भला होना उसके चेहरे पर कहीं नहीं लिखा है फिर भी लेखक उसे भला कहता है। जिसका आधार उस लेखक का सूक्ष्म पर्यवेक्षण है जिसके माध्यम से उसने व्यक्ति के बाहरी और भीतरी सौन्दर्य को परखने

की कोशिश की। यह कहना गलत नहीं होगा कि व्यक्ति की भलमनसाहत ने ही लेखक का ध्यान उसकी ओर खींचा होगा और आख्यान लिखने की ओर प्रेरित किया होगा। इसी तरह दैनिक जीवन में घटने वाली अनेक घटनाओं में से लेखक कोई खास घटना ही चुनता है। निश्चित रूप से इस घटना से उसने कोई लगाव महसूस किया होगा। लेखक हमेशा ज्ञात व्यक्तियों या घटनाओं को आख्यान का विषय बनाता है क्योंकि इनके बारे में अपनी भावना को व्यक्त करना उसके लिए आसान होता है। आख्यान परक लेखन में सीधी, सरल और आत्मीय भाषा– शैली का प्रयोग किया जाता है। जीवनी, आत्मकथा और उपन्यासों के अलावा समाचार पत्रों में ऐसी ही भाषा का प्रयोग आम तौर से किया जाता है।

10.5 शब्दावली

पर्यवेक्षण – किसी वस्तु को गहराई से देखना

अभिव्यक्ति – भावों या विचारों को प्रकट करना

जीवट – साहस

भावोद्‌गार – भाव को प्रकट करना

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. आख्यानपरक लेखन में लेखक चरित्रों के विकास और स्थितियों का वर्णन करते समय सच्चाई को भी उद्‌घाटित करता चलता है। इस लेखन में निज़ी जिन्दगी के साथ समाज की व्यापक ज़िन्दगी के चित्र भी अंकित होते हैं।

2. सरलता आख्यानपरक लेखन का आवश्यक गुण है। इससे पाठक विषय को बिना किसी उलझन के समझ सकता है। लेखक को भी अपना मंतव्य स्पष्ट करने के लिए कल्पना या बनावट का सहारा नहीं लेना पड़ता।

3. क) पाठक, लेखक ख) प्रत्यक्ष वार्तालाप ग) वैयक्तिक

बोध प्रश्न 2

1. (i) स्मृति

   (ii) मित्र और प्रिय स्थान

   (iii) जीवन को प्रभावित करने वाली घटनाएँ

   (iv) व्यक्ति से जुड़ी कल्पना एवं इच्छाएँ। अधिक जानकारी के लिए देखिए 10.3.1।

2. (क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं

इकाई 11 तार्किक लेखन

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 तार्किक लेखन का तात्पर्य

11.3 तार्किक लेखन की प्रक्रिया

- 11.3.1 प्रक्रिया की व्याख्याः कार्य-कारण संबंध
- 11.3.2 कथन के समर्थन में तर्क
- 11.3.3 उदाहरणों का महत्व

11.4 तुलना और अंतर

11.5 वर्गीकरण

11.6 पुनर्कथन

11.7 विश्लेषण

11.8 सारांश

11.9 शब्दावली

11.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको लेखन की तार्किकता से परिचित कराना हैः

- तार्किक लेखन अन्य लेखन से किस प्रकार से भिन्न है;
- तार्किक लेखन की प्रकृति किस तरह से शास्त्र के अनुसार बदलती है;
- तार्किक लेखन की प्रक्रिया को किस प्रकार क्रमशः विकसित होना चाहिए ;
- तर्क को विकसित करने की प्रक्रिया में कार्य– कारण संबंध, कथन के समर्थन में तर्क, उदाहरणों के प्रयोग, तुलना और अंतर का प्रयोग कैसे किया जाता है;
- गहराई से समझने के लिए वर्गीकरण एक आवश्यक पहलू हो जाता है;
- किसी बात को बार–बार दुहराकर पक्षों को किस तरह से मजबूत किया जाता है; और
- इन सभी बिन्दुओं पर चर्चा करना, व्याख्या करना और उदाहरण के माध्यम से समझाना हमारा उद्देश्य है।

11.1 प्रस्तावना

तार्किक लेखन इस पाठ्यक्रम की ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में लेखन को कार्य–कारण संबंधों के द्वारा समझने की कोशिश की गई है। तार्किकता से हमारा तात्पर्य कार्य–कारण संबंध से है। तार्किकता के इस तात्पर्य को जब हम प्रक्रिया में प्रस्तुत करते

हैं तब कुछ गुत्थी को खोल पाते हैं। तर्क एक ऐसी रचनात्मक प्रक्रिया है जिसकी आवश्यकता हमें किसी बात को स्पष्ट करने के लिए होती है। इस स्पष्टीकरण के संदर्भ में हम प्रक्रिया की व्याख्या करते हैं। तार्किक लेखन का प्राथमिक उद्देश्य मात्र वर्णन करना, विवरण देना और समझना ही नहीं है, अपितु उन तथ्यों, विचारों और विश्वासों को क्या? क्यों? और कैसे? के माध्यम से समझाना भी है। तार्किकता हमें एक ठोस आधार देती है, अपनी बातों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए। इस पूरी इकाई में हम तर्क की वैज्ञानिक शैलियों का अध्ययन करेंगे।

11.2 तार्किक लेखन का तात्पर्य

तार्किक लेखन को समझने से पूर्व उसके थोड़े से ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझ लेना आवश्यक होगा। मध्य युग और आधुनिक युग के बीच में अंतर इस तार्किकता के माध्यम से उपस्थित हुआ। मध्य युग में मनुष्यों में तार्किक बोध का विकास उस तरह से नहीं था जिस तरह आधुनिक काल में हुआ। उदाहरण के लिए रामचरित मानस की रचना मध्ययुग में हुई थी। मानस के एक पात्र हनुमान समुद्र को लांघ कर लंका पहुँच जाते हैं। आज का कोई लेखक इस प्रकार की घटना का वर्णन नहीं कर सकता है। इस घटना में विश्वसनीयता और प्रामाणिकता नहीं है। हमारी तर्क की कसौटी पर यह उचित नहीं प्रतीत होता है। मध्यकाल का मिथकीय बोध इतना अधिक प्रखर था कि उसमें तार्किकता के बिना भी काम चल जाता था। वहाँ तार्किकता के स्थान पर आस्था प्रमुख थी।

आधुनिक युग की शुरूआत योरोप में हुए पुनर्जागरण (रिनेसा) से माना जाता है। ज्ञान–विज्ञान के विकास और भौगोलिक खोजों ने यथार्थ की नई दृष्टि और उसके चिंतन के नए तरीकों को जन्म दिया। लोग जीवन के हर पहलू पर तार्किक चिंतन करने लगे। यह विश्वास किया गया कि मनुष्य अनिवार्यतः तार्किक प्राणी है। आधुनिकता का विकास इसी तार्किकता से संभव हुआ। जब हम अपने को आधुनिक कहते हैं तो उसका एक अर्थ यह भी होता है कि हम किसी चीज को प्रक्रिया में देखते हैं। उदाहरण के लिए हम फूल के गंध को ही अनुभव नहीं करते हैं अपितु उस मिट्टी की ओर भी देखते हैं जिसमें पौधे का जन्म हुआ। उस खाद और पानी को भी देखते हैं जिससे पौधे का पोषण हुआ है।

तार्किक लेखन का तात्पर्य है तर्क को कसौटी बनाकर लेखन कार्य में प्रवृत्त होना। जो कुछ हम लिखें उसमें कार्य–करण संबंध हो। कार्य–कारण संबंध पर आगे चर्चा करेंगे। यहाँ तार्किक लेखन और सर्जनात्मक लेखन के अंतर को थोड़ा समझ लें। सर्जनात्मक लेखन में कार्य–कारण संबंध की अनिवार्य श्रंखला हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है। कहानी, कविता, उपन्यास या अन्य सर्जनात्मक रचना के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसमें तार्किक शृंखला हो ही। मानवीय रचनात्मकता उसे दूसरी तरह से भी रच सकती है। मानवीय संवेदना और अनुभव तर्क से परे हैं। इसलिए किसी रचनात्मक वृत्ति का आकार तार्किक प्रक्रिया में नहीं गढ़ा जाता है। वह रचनात्मक प्रक्रिया में रचा जाता है। वहाँ मानवीय अनुभव और संवेदना अपना रास्ता खुद ही बनाते हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि प्रेमचंद के गोदान की समाप्ति तार्किक परिणति में हुई अथवा अतार्किक। रचनाकार का अनुभव वहाँ महत्वपूर्ण हो जाता है। लेकिन विज्ञान में, शास्त्र में या आलोचना में जब तक उसकी तार्किकता स्पष्ट नहीं होगी उसे प्रमाणिक नहीं माना जाएगा। गणित की शब्दावली का प्रयोग करें तो रचनात्मक लेखन दो और दो चार ही नहीं होगा, तीन भी हो सकता है और छह भी। लेकिन विज्ञान शास्त्र या आलोचक को चार के नजदीक या लगभग नजदीक होना चाहिए। एक उदाहरण हम हिंदी आलोचना से लेते हैं। उदाहरण "आधुनिक काल में गद्य का महत्व सहसा बहुत बढ़ गया। गद्य का बहुत गहरा संबंध वैचारिकता से है। आधुनिकता गद्य में ही नहीं पद्य में भी व्यक्त हुई है। भारतेन्दु युग के बाद की कविता पर गद्यात्मक दबाव है।" अब इस कथन का यदि परीक्षण करें तो पता चलेगा कि सभी वक्तव्य एक दूसरे से बँधे हुए हैं। एक दूसरे को

पुष्ट कर रहे हैं। वैचारिकता को गद्य में व्यक्त किया जाता है। आधुनिकता के लिए वैचारिकता जरूरी है। पद्य में आधुनिकता को अभिव्यक्त करने के विचार की जरूरत हुई और विचार गद्य में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसलिए कविता पर भी गद्य का दबाव बढ़ गया। इस प्रकार हम एक तार्किक निष्कर्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

विधाओं की प्रकृति के अनुसार तार्किकता का विकास होता है। विधाओं के अनुसार तर्क की शैली बदल जाती है। अब हम अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र या साहित्य की प्रकृति में अंतर के अनुसार किस तरह से तर्क का विकास होता है, इस बात को समझने की कोशिश करेंगे। यदि हम कहते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी है। उसका अध्ययन यदि अर्थशास्त्र के तर्क के अनुसार करेंगे तो हम कहेंगे कि ग्रामीण जनता की क्रय शक्ति अत्यंत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार नहीं विकसित हो रहे हैं आदि–आदि तर्क देंगे। जब हम समाजशास्त्र में ग्रामीण जनता की गरीबी का अध्ययन करेंगे तो गरीबी के प्रभाव से किस प्रकार से चोरी–डकैती आदि दुष्कर्म बढ़ गए हैं इस ओर हम ध्यान देंगे। गरीबी के कारण मानवीय रिश्तों में कितनी दरार आ गई है इन बिंदुओं की ओर संकेत करेंगे। साहित्य में गरीबी का वर्णन भाव को छूनेवाला होगा। वह अन्तः स्पर्शी होगा। कुछ उसी प्रकार का जिस प्रकार से गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में केवट की गरीबी का वर्णन किया है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि विधाओं के अनुसार तर्क का कारण, प्रभाव और स्वरूप बदलता है।

कभी–कभी एक शास्त्र के तर्क का प्रयोग दूसरे शास्त्र में करके अधिक सुसंगत निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। उदाहरण के लिए पहले इतिहास को मात्र राजनैतिक इतिहास की सीमाओं में रखा जाता था। परंतु स्वतंत्रता के बाद इतिहास चिंतन में बदलाव हुआ। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में इतिहास को देखा जाने लगा। इससे इतिहास के निष्कर्ष और भी प्रामाणिक बनकर उपस्थित हुए। इसी तरह कलाओं में भी हुआ। एक कला के संदर्भ में दूसरी कला को समझा जाने लगा।

11.3 तार्किक लेखन की प्रक्रिया

किसी भी लेखन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात होती है विषय वस्तु का चयन। तार्किक लेखन की प्रक्रिया में विषय वस्तु का चुनाव का विशिष्ट महत्व है। विषय वस्तु के अनुरूप ही तर्क निर्मित होता है। उदाहरण के लिए हमें इतिहास की किसी विषय वस्तु पर लिखना है तो उसके तर्क स्वयं इतिहास की विधाओं से ही प्राप्त होंगे। हमें इतिहास निर्माण की सामग्री ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों, स्रोतों और यात्रियों के कथन के आधार पर तर्क खोजने पड़ेगें। इसी प्रकार यदि हम साहित्य के इतिहास पर लिख रहे हैं तो हमें यह दिखाना होगा कि जनता की किन प्रवृतियों के परिवर्तन से हमारे साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है।

विषय वस्तु के चुनाव होने के बाद उस विषय वस्तु में क्या–क्या लिखना है इसका एक मानसिक ढाँचा या लिखित ढाँचा हमारे जेहन में बन जाना चाहिए। इसके बाद अपनी बातों को पुष्ट करने के लिए तार्किक प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं। कथन के संदर्भ में जो तथ्य सबसे महत्वपूर्ण हो उसे कथन के बाद देना चाहिए। उसके बाद उससे कम महत्वपूर्ण तथ्य को रखना चाहिए। इस प्रकार तार्किक अन्विति का शृंखलाबद्ध निर्माण करें। जो तथ्य विषय वस्तु से संबद्ध न हो उस प्रकार के तथ्य से बचना चाहिए। तथ्य बोझिल न हो, उसमें संप्रेषणीयता होना चाहिए। तार्किक अन्विति और शृंखला को एक उदाहरण के माध्यम से समझने पर हमारा सोचने का ढंग आसान हो जायेगा। मानो हम उदाहरण लेते हैं – भारत पर सिकंदर के आक्रमण का क्या प्रभाव पड़ा। इसके उत्तर में हम लिखते हैं:

> **इस आक्रमण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था भारत और यूनान के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष संपर्क की स्थापना। सिकंदर के अभियान से चार भिन्न-भिन्न स्थल मार्गों और जल मार्गों के द्वार खुले। इससे यूनानी**

व्यापारियों और शिल्पियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ तथा व्यापार की तत्कालीन सुविधाएँ बढ़ी।

(एन.सी.ई.आर.टी इतिहास, कक्षा 12)

अब इस पूरे अनुच्छेद की व्याख्या करने पर हम पाते हैं कि सिंकदर के भारत पर आक्रमण के परिणाम स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क बढ़ा। फिर लेखक विभिन्न क्षेत्रों के खुलने की व्याख्या करते हैं। इस एक परिणाम का प्रभाव कई क्षेत्रों में पड़ा। तार्किक लेखन की प्रक्रिया में लेखन में कारण और प्रभाव की बीच शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया होना चाहिए। एक कारण से एक प्रभाव, फिर उसी से संबद्ध एक दूसरे कारण से दूसरा प्रभाव। इस प्रकार से तार्किक प्रक्रिया की शृंखला को अभिव्यक्त करने का तरीका अलग तरह का होगा। इस तार्किक शृंखला को क्रमबद्ध वाक्यों में नहीं रखा जायेगा तो तार्किक शृंखला अराजक हो सकती है। जिससे विचारों की संबद्धता भंग हो सकती है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत हमें भाषा के प्रति सावधान होना होता है। वाक्य का गठन इस तरह से बनाया जाए जो विचारों के भार को वहन करने में सक्षम हो। अतंतः तार्किकता को भाषा के माध्यम से ही समझा जायेगा। एक उदाहरण यहाँ सामने रखें तो बात और भी अधिक स्पष्ट होगी। बौद्ध धर्म ने बौद्धिक और साहित्यिक जगत में भी एक चेतना जगाई। इसने लोगों को यह सुझाया कि किसी वस्तु को यों ही नहीं, बल्कि भली भाँति गुण दोष का विवेचन करके ग्रहण करना चाहिए। बहुत हद तक अंधविश्वास का स्थान तर्क ने ले लिया।

अब इस उदाहरण में देखते हैं तो जो कुछ कहा जा रहा है उसका भाषा के साथ सहयोग है। भाषा और विचारों का क्रम कहीं टूटता हुआ दिखाई नहीं पड़ता है तार्किक प्रक्रिया में भाषा की ओर भी ध्यान रखना चाहिए।

11.3.1 प्रक्रिया की व्याख्याः कार्य-कारण संबंध

तार्किक लेखन प्रक्रिया में होता है। इस प्रक्रिया की व्याख्या करना आवश्यक है। प्रक्रिया के माध्यम से उन संबंधों को समझ सकेंगे जिसमें कार्य–कारण विकसित होते हैं। उदाहरण के माध्यम से इसे समझने का प्रयत्न करेंगे। जैसे किसी सामाजिक आंदोलन की प्रक्रिया का उदाहरण ले लें।

सामाजिक असंतोष सामाजिक आंदोलन की प्रारंभिक अवस्था को प्रतिबिंबित करता है। लगभग सभी सामाजिक आंदोलन का आधार सामाजिक असंतोष होता है। इसके परिणामस्वरूप सामूहिक तनाव बनने लगता है। इस अवस्था के उपरांत द्वितीय अवस्था आती है जिसमें समाज में सामूहिक उत्तेजना दिखाई देती है, जब लोग यह महसूस करते हैं कि उनकी समस्या साझी है। कुछ विशिष्ट सामाजिक स्थितियों को विपत्ति के मूल कारण के रूप में पहचान लिया जाता है। तृतीय अवस्था औपचारिकीकरण की अवस्था होती है। इस अवस्था में पदाधिकारियों की एक श्रृंखला स्थापित की जाती है। नेतागण व अनुयायियों में काम का बंटवारा किया जाता है। चंदा या कोष अधिक सुव्यवस्थित रूप से एकत्रित किया जाता है। विरोध एवं क्रिया के लिए कार्यनीति तथा दाँवपेंच बनाये जाते हैं तथा अपने आंदोलन के लिए उठाये गए कदमों के लिए एक नैतिक औचित्य स्थापित किया जाता है। चतुर्थ अवस्था संस्थानीकरण की है। आंदोलन एक सुनिश्चित विन्यास के रूप में स्पष्ट हो जाता है। आंदोलनकर्त्ताओं का स्थान कुशल नौकरशाह ले लेते हैं। भवन एवं कार्यालय स्थापित किये जाते हैं। आंदोलन के उद्देश्यों को समाज में मान्यता मिल जाती है।

(सामाजिक परिवर्तन, इं.गां.रा.मु.वि.वि, ESO-02)

इस पूरे उदाहरण में हम एक प्रक्रिया को पाते हैं। आंदोलन का विकास धीरे–धीरे हुआ। चार चरण में एक के बाद एक का विकास होता गया। प्रारंभिक वाक्य सीधा विषय से संबंधित हैं। अब इसके कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या करते हैं। आंदोलन की प्रारंभिक अवस्था सामाजिक असंतोष है। इसके कारण सामूहिक तनाव बनता है। सामूहिक तनाव के फलस्वरूप लोगों को लगता है कि समस्या सांझी है। सामाजिक असंतोष के कारणों का पता लगाया जाता है। पुनः आंदोलन चलाने के लिए औपचारिक व्यवस्था की जाती है। उसके बाद आंदोलन एक संस्थान बन जाता है और अंत में आंदोलन को सामाजिक मान्यता मिल जाती है। आंदोलन में एक प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। इसी प्रकार से जब किसी विषयवस्तु पर हम लिख रहे हों तो एक प्रक्रिया में सुसंबद्ध रूप में हमारी विषय वस्तु आनी चाहिए। हमारे तर्क विभिन्न चरणों में विकसित होकर एक दूसरे से जुड़े हुए हों। व्याख्या और तर्क साथ–साथ विकसित हों।

11.3.2 कथन के समर्थन में तर्क

जब हम लेखन में सक्रिय होते हैं तो कोई न कोई हमारा उद्देश्य होता है। हमें अपने उद्देश्य को साबित करने के लिए एक तर्क की आवश्यकता होती है। हम कोई कथन लिखते हैं और उसके संदर्भ को तर्क से प्रमाणित करते हैं। अपनी बात को जब तर्क के साक्ष्य में प्रमाणित करते हैं तो वह अधिक विश्वसनीय हो जाती है। वैज्ञानिक सोच समझ विकसित करने के लिए तर्क आवश्यक है। तर्क को कार्य – कारण संबंधों में पहचाना जाता है। कथन को कई तर्कों से प्रमाणित किया जाता है। कभी–कभी कथन से संबंध परोक्ष रूप में हुआ करता है। कथन और तर्क के सीधे संबंध को एक उदाहरण द्वारा समझने की कोशिश करेंगेः

ब्रिटिश विजय का भारत पर स्पष्ट और गहरा आर्थिक प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों ने जो आर्थिक नीतियां अपनाई उनसे भारत की अर्थव्यवस्था का रूपांतरण एक औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में हो गया जिसके फलस्वरूप ढाँचे का निर्धारण ब्रिटिश अर्थव्यवस्था की जरूरतों के अनुसार हुआ। भारतीय उद्योगों विशेषकर ग्रामीण दस्तकारी उद्योगों की बर्बादी रेलवे के बनते ही काफी तेजी से हुई। रेलवे द्वारा ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के देश के सुदूर गांवों में पहुंचने और परंपरागत उद्योगों की जड़ें खोदने में सहायता मिली।

यहाँ कथन है ब्रिटिश विजय का भारत पर आर्थिक प्रभाव। उसके समर्थन में दो तर्क प्रस्तुत किए गये प्रथम भारतीय अर्थव्यवस्था का औपनिवेशीकरण हुआ जिसे ब्रिटिश अर्थव्यवथा की जरूरत के अनुसार बनाया गया था। दूसरा तर्क यह दिया कि ग्रामीण दस्तकारी की बर्बादी रेल के अविष्कार से और बढ़ गई। रेलवे के कारण ब्रिटिश की सस्ती वस्तुओं को गाँव तक पहुँचाया जाता था और उससे मुनाफा कमाया जाता था। इस प्रकार से ब्रिटिश विजय का भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रभाव को तार्किकता के अनुसार लिख सकते हैं।

कथन के संदर्भ में दिए गए तर्कों का एक परोक्ष प्रभाव भी होता है। जहाँ कथन और तर्क का प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है। तर्क के सूत्र मिलते हैं– जिससे कथन के साथ संबंध बनाना होता है। उदाहरण के लिए यदि लिखा गया है बौद्ध धर्म ने अहिंसा और जीव मात्र के प्रति दया की भावना जगाकर देश में पशुधन की वृद्धि की तो इस कथन से एक अर्थ यह भी निकलता है कि बौद्धधर्म से पूर्व समाज में व्यापक हिंसा हो रही रही थी। कथन के संदर्भ में छिपे हुए परोक्ष तर्क को भी पहचानना होता है।

बोध प्रश्न 1

1. तार्किक लेखन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

2. तार्किक लेखन की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

   क) तार्किक लेखन..... में होती है।

   ख) अपने लेखन के उद्देश्य को साबित करने के लिए..... की आवश्यकता होती है।

   ग) अपनी बात को जब तर्क के साक्ष्य में प्रमाणित करते हैं तो वह अधिक..... हो जाती है।

11.3.3 उदाहरणों का महत्व

कथन को उदाहरणों के माध्यम से पुष्ट बनाया जाता है। तार्किक लेखन में उदाहरणों के प्रयोग से कथन की प्रामाणिकता दिखाई जाती है। बातों को तर्क के द्वारा पुष्ट करना तार्किक लेखन का आसान तरीका है। उदाहरणों की अधिकता से कभी–कभी मूल प्रश्न ही गायब हो जाता है। उदाहरणों का प्रयोग संतुलित रूप में होना चाहिए। जितनी संदर्भ की माँग हो उतना ही उदाहरण प्रस्तुत करें। अधिक उदाहरणों के प्रयोग से बोझिलता और जटिलता बढ़ती है। उदाहरण हमेशा सटीक होने चाहिए। जो उदाहरण हम कथन के संदर्भ में प्रयुक्त करें उससे ऐसा आभास होना चाहिए कि वे कथन को एक परिप्रेक्ष्य देते हुए हों। एक उदाहरण द्वारा इसे समझते हैंः

> **जैव प्रौद्योगिकी एक बहुआयामी विज्ञान है, जिसका विकास जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के समन्वित उपयोग से हुआ है। इसका उपयोग जीवन के विविध क्षेत्रों में होता है। उदाहरण के लिए कृषि वानकी एवं बागवानी, खाद्य संबंधी उद्योग तथा पर्यावरण संरक्षण आदि में जैव प्रोद्यौगिकी के उपयोग की बहुत संभावनाएं हैं। कृषि वानिकी एवं बागबानी के क्षेत्र में नई पादप जातियों का विकास, उत्तम बीजों का उत्पादन, ईधन एवं चारा देने वाली फसलों का उत्पादन तथा वाणिज्यिक महत्व के पौधे का उत्पादन उसमें शामिल है। खाद्य पदार्थों से संबद्ध उद्योगों में जैव प्रौद्योगिकी के प्रमुख उदाहरण हैं– चूहों से मुक्त रखकर खाद्यान्नों का प्रभावी भंडारण करने की विधियाँ, खाद्य पदार्थों की पोषण क्षमता का विकास तथा खाने को सड़ने से बचाने वाली विधियाँ आदि। पर्यावरण संरक्षण में भी जैव प्रोद्यौगिकी का उपयोग हो रहा है। इनमें मलबे एवं औद्योगिक बहावों का शुद्धीकरण, अवशिष्ट पदार्थों से बायो गैस का निर्माण तथा वायु–प्रदूषण के रोकथाम का उपयोग प्रमुख है।**

कथन है कि जैव प्रोद्यौगिकी वह बहुआयामी विज्ञान है जिसका विकास जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं अभियांत्रिकी आदि के समन्वित उपयोग से हुआ है। इसका उपयोग विविध क्षेत्रों में होता है। इस कथन को उदाहरण के माध्यम से पुष्ट किया गया। कथन के संदर्भ में उदाहरण का प्रयोग बहुत ही विस्तृत है। तार्किक लेखन में सामान्यतः उदाहरणों के लंबे प्रयोग से बचना चाहिए।

11.4 तुलना और अंतर

तार्किक लेखन में तुलना और अंतर द्वारा बात को स्पष्ट करने की युक्ति का प्रयोग किया जाता है। दो बातों में जब समानता होती है तो दोनों के बीच तुलना की जाती है। तुलना करने पर उनका स्वयं अर्थ स्पष्ट हो जाता है। तुलना की पहली शर्त समानता है। समानता ही तुलना का आधार है। तुलना करके और उससे अंतर निकाल कर तर्क अधिक निष्पक्ष रूप में रखा जा सकता है। तुलना गुण के आधार पर हो सकती है, परिस्थितियों के आधार पर हो सकती है और घटनाओं के आधार पर हो सकती है। यदि पानी और दूध में शक्कर घोली जाए तो उसका स्वाद बदल जाता है। वह मीठा हो जाता है। यदि चाय या कॉफी में शक्कर मिलाएं तो वो भी मीठी हो जाती है अर्थात् विभिन्न पदार्थों में शक्कर मिलाएं तो भी मीठी हो जाती है। इस प्रकार विभिन्न पदार्थों में शक्कर मिलाने पर उनके स्वाद की तुलना करें तो पता चलता है कि उनका स्वाद मीठा होने का कारण शक्कर थी और निष्कर्ष निकालते हैं शक्कर मीठी थी। अंतर को स्पष्ट करने के लिए हम एक और उदाहरण लेते हैं। हम फिल्म देखते हैं और नाटक भी देखते हैं। दोनों विधाओं में अभिनय होता है। दोनों विधाओं में जब अंतर करते हैं तब सूक्ष्मता की जरूरत होती है। फिल्म विधा अतीत में बन चुकी होती है। वह एक यांत्रिक माध्यम द्वारा दर्शकों को दिखाई जाती है। नाटक की विधा कुछ सामयिक होती है। नाटक में अभिनय हो रहा होता है। वहाँ दर्शक के साथ अभिनेता का प्रत्यक्ष रिश्ता होता है। फिल्म के पास क्लोजअप हैं और बारीक से बारीक डिटेल्स को पकड़ने के साधन हैं। नाटक में मंच पर कल्पना शीलता, सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता के इस्तेमाल से ही अभिनय को प्रभावपूर्ण बनाना होता है।

तुलना और अंतर के प्रयोग द्वारा एक निष्कर्ष हमें मिलता है। कथन के संदर्भ में तुलना और अंतर तर्क की बारीकियों को बखूबी उभारने का प्रयत्न होना चाहिए। तुलना से तर्क की पारदर्शिता झलकती है। तुलना हमारे सोच और चिंतन की वैज्ञानिकता को परखने की कसौटी है। इस कथन को ध्यान में रखकर एक उदाहरण लेते हैं:–

समाजशास्त्री और इतिहासकार दोनों ही समाज के अध्ययन में रत हैं। अंतर केवल उनके अध्ययन के काल का है। एक वर्तमान का विद्यार्थी है तो दूसरा अतीत का। इस प्रकार दोनों को पृथक नहीं कर सकते हैं। बी आरस्टी के अनुसार "अगर अतीत को शताब्दियों से लुढ़कता हुआ एक वस्त्र मान लिया जाए तो इतिहास की रुचि उन विशिष्ट धागों और किनारों में होगी जो उस वस्त्र को बनाता है, जबकि समाजशास्त्र की रूचि उस वस्त्र से दिखने वाले प्रतिमानों में होगी।"

(समाजशास्त्र, एन.सी.ई.आर.टी, XII)

समाजशास्त्री और इतिहासकार दोनों समाज के अध्ययन में रत हैं। दोनों के बीच अंतर करने से हम उनके गुणात्मक अंत को समझ सकते हैं। अंतर करने पर विधाओं की सीमा का पता चलता है। इतिहास अतीत का अध्ययन करता है और समाजशास्त्र समकालीन समाज का अध्ययन करता है। इतिहास समाज के पीछे सक्रिय ऐतिहासिक शक्तियों का विवेचन करता है और समाजशास्त्र समकालीन समाज को एक प्रतिमान बनाकर अध्ययन करता है। तार्किक लेखन में तुलना और अंतर की आवश्यकता इसलिए होती है कि वह अपने विषय वस्तु से मिलते–जुलते तथ्यों से उसका महत्व स्थापित कर सके।

11.5 वर्गीकरण

अपने तर्क को संपूर्णता में प्रस्तुत करने के लिए वर्गीकरण आवश्यक हो जाता है। वर्गीकरण का सीधा उद्देश्य है कि जो कुछ हम कहें या लिखें वह एक क्रम में आना

चाहिए। यदि हमें मानव शरीर की संरचना का अध्ययन करना है तो पहले उसे विभिन्न अंगों में बाँटकर क्रम से उनका अध्ययन करने लगेंगे। इसका फर्क तर्कों की संरचना पर पड़ता है। वर्गीकरण के द्वारा यह संभव हो जाता है और किसी एक बात को गहराई से स्पष्ट करने में सुविधा होती है। सभी बातों को पिछले स्तर पर व्यक्त करने की अपेक्षा किसी एक बात को गहराई से व्यक्त करना अधिक संगत मालूम पड़ता है। हम अपने पक्षों को स्पष्ट करने के लिए, उसे गहराई से समझने के लिए वर्गीकरण को अपनाते हैं। जनसंचार माध्यम का प्रयोग संदेश या समाचार भेजने के लिए किया जाता है। संदेश या समाचार समाचारपत्रों के माध्यम, रेडियो के माध्यम से टेलीविजन के माध्यम से सिनेमा के माध्यम से, पत्रिका तथा अन्य माध्यम से प्रसारित करते हैं। इन्हें एक साथ जनसंचार माध्यम में रखते हैं। लेकिन इनका प्रकृति के आधार पर वर्गीकरण करते हैं तो अपनी बातों को व्यवस्थित ढंग से कह पाते हैं। इनका प्रारंभिक वर्गीकरण तीन माध्यमों के रूप में कर लेते हैं। मुद्रित माध्यम, में श्रव्य माध्यम और दृश्य माध्यम। मुद्रित माध्यम– समाचार पत्र, पत्रिका आदि को रखते हैं। श्रव्य माध्यम से रेडियों को रखते हैं और दृश्य माध्यम सिनेमा, टेलीविजन आदि को रखते हैं। वर्गीकरण की जो एक और महत्वपूर्ण चीज है वह है उसका गुण। वर्गीकरण में हमेशा समान गुणधर्म वाले को साथ रखा जाता है। थोड़ी सी भिन्नता रखने वाले की अलग श्रेणी बना दी जाती है। वर्गीकरण चार्टों द्वारा होता है, ग्राफों द्वारा होता है, चित्र के द्वारा होता है और गुण के आधार पर होता है। अब एक उदाहरण ले सकते हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का कार्यकलाप किस प्रकार से होता है। विश्वविद्यालय के लिए अलग–अलग तरह से श्रेणीकरण किया गया है। उनके विभागों को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रशासन की व्यवस्था की गई है।

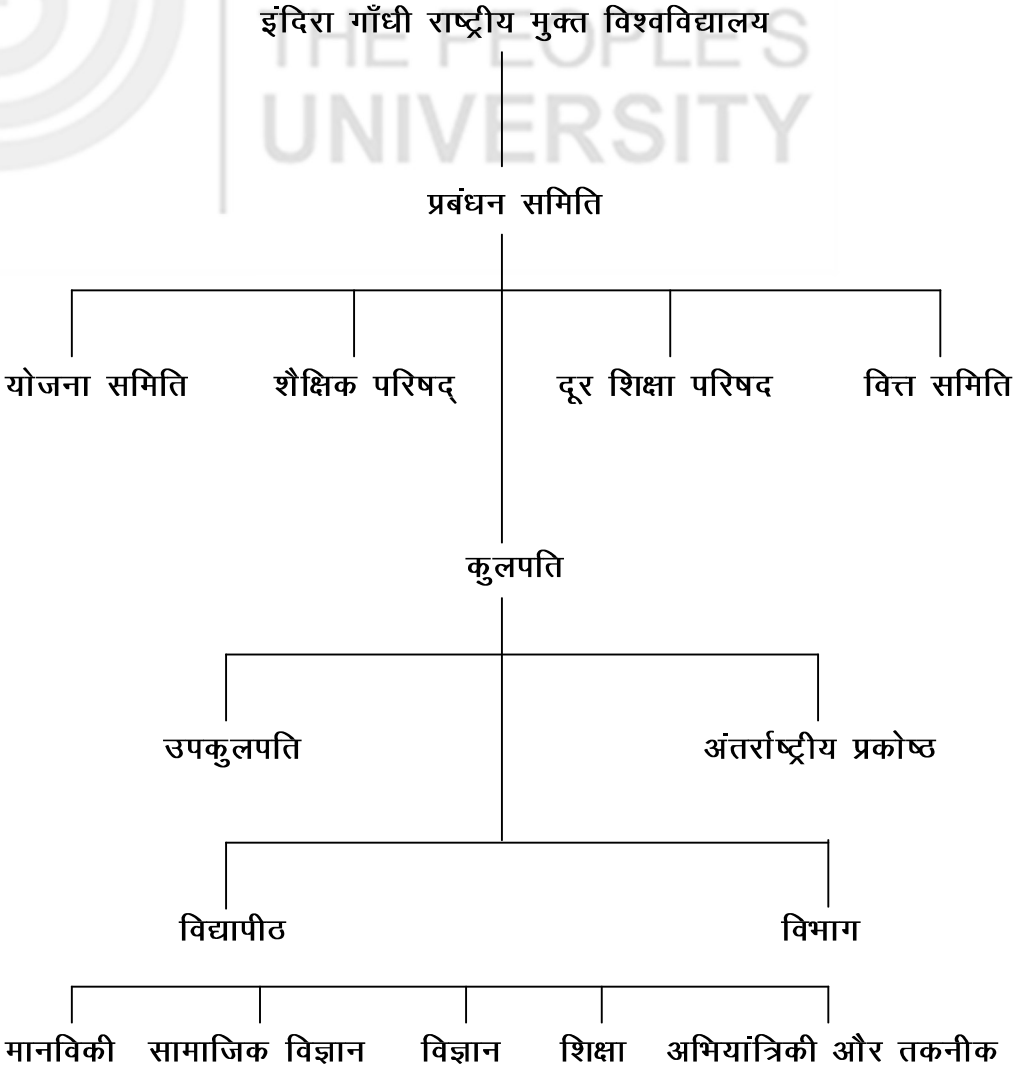

अब हम विचार करते हैं कि इस तार्किक लेखन में वर्गीकरण का क्या महत्व है। तार्किक लेखन में हमेशा यह ध्यान रखना होता है कि जो कुछ हम कहें या लिखें उसमें तारतम्य होना चाहिए। कार्यकारण संबंध के साथ–साथ सही तर्क को सही स्थान पर रखने की कला से भी हमें अवगत होना चाहिए।

11.6 पुनर्कथन

पुनर्कथन में अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए ही बात को दोहराया जाता है। हो सकता उसी बात को दूसरे शब्दों में भी अभिव्यक्त किया गया हो। तार्किक लेखन में यह सामान्य बात है कि किसी विशिष्ट बिन्दु पर बार–बार बल दिया जाता है। एक उदाहरण द्वारा इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है।

> **अजंता के चित्रों में विभिन्न विषयों को दर्शाया गया है। इनमें शाही दरबारों की शान शौकत, प्रेम की क्रियाएं, भोज, गान-नृत्य के आनंद, भोग विलास की मानव निर्मित वस्तुएँ, इमारतें, वस्त्र और आभूषण दिखाए गए हैं। कुछ चित्रों को कुशलतापूर्वक बनाया गया है। जीवन के सभी रूपों को दर्शाकर जीवन की एकता का संदेश दिया गया है। जीवन के सभी रूप मिलकर जीवन की एक भरपूर तस्वीर पेश करते हैं।**

अजंता के चित्रों में विभिन्न विषयों को दर्शाया गया है। इस बात पर बल दने के लिए जीवन के विविध पक्षों को दिखाकर उस पर बार–बार बल दिया गया है। एक बात को साबित करने के लिए भिन्न–भिन्न तरह से उसे समझाया गया है। पुनर्कथन के बारे में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि उसमें मात्र दुहराव ही होता है। पुनर्कथन में बिना किसी नये विषय और तर्क के एक ही बात को अलग–अलग तरीके से रखा जाता है। तार्किक लेखन में यह ध्यान रखने की आवश्यकता होती है कि एक ही कथन को बार–बार दुहराना नहीं चाहिए लेकिन अपनी बातों को मजबूती से रखने के लिए उससे संबद्ध विभिन्न आयामों को रखना चाहिए। लेखन में ऐसा महसूस हो कि वे एक बात को कहने के लिए अलग–अलग तरह से आये हैं ताकि तर्कों में एक प्रकार की नवीनता बनी रहे।

11.7 विश्लेषण

तार्किक लेखन के अंत में हमें विश्लेषण की जरूरत है। व्यापक अर्थों में तार्किक लेखन के सभी पहलू अपने आप में विश्लेषणात्मक है। विश्लेषण हमें कुछ तकनीक सिखाता है कि विषयों को किस प्रकार से प्रस्तुत करें और इसके प्रत्येक अंगों को किस प्रकार से विवेचित करें। इन तकनीकों का विस्तार से वर्णन हमने कथन के पक्ष में तर्क, तुलना और अंतर तथा वर्गीकरण के विवेचन से किया। विश्लेषण किसी भी बात को प्रस्तुत करने की शैली से संबंध रखता है। विश्लेषण में हमारे इस ज्ञान का पता चलता है कि किसी बात को हमने कितनी स्पष्टता से समझा है और उसे संप्रेषित करने की कैसी शैली हमने अर्जित की है।

बोध प्रश्न 2

1. तार्किक लेखन में उदाहरणों का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   क) तार्किक लेखन में.....और.....द्वारा बात को स्पष्ट करने की युक्ति का प्रयोग किया जाता है।

   ख) अपने तर्क को.....में प्रस्तुत करने के लिए..... आवश्यक है।

   ग) अपने पक्ष को मज़बूत करने के लिए एक ही बात को दोहराया जाना..... कहलाता है।

   घ) .....में लेखक के ज्ञान और विषय की स्पष्ट समझ का पता चलता है।

   ड.) तार्किक लेखन के सभी पक्ष..... हैं।

11.8 सारांश

इस इकाई में हमने तार्किक लेखन की प्रकृति, उसे विकसित करने की विभिन्न पद्धतियों की विस्तार से चर्चा की। तार्किक लेखन के तात्पर्य, उसकी प्रक्रिया और उसके कार्य–कारण संबंधों के विषय में हमने जानकारी दी। कथन के पक्ष में तर्क, तुलना और अंतर, वर्गीकरण तथा पुनर्कथन के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की गई कि किसी भी तार्किक लेखन को विभिन्न पद्धतियों के उदाहरण के माध्यम से समझाया गया ताकि हमारी बातों का उद्देश्य स्पष्ट हो सके। हम अपने पक्षों को ठोस प्रामाणिकता के साथ रख सके।

11.9 शब्दावली

विशेषण – कुछ चीजों को विभिन्न हिस्सों में बाँटना

वर्गीकरण – वर्गों की व्यवस्था

विकास – प्रस्तुति का प्रामाणिक तरीका

उदाहरण – कथन के अनुकूल और गुणात्मक रूप में उससे मिलती जुलती चीजों को दिखाना

व्याख्या – अर्थों का स्पष्टीकरण

प्रक्रिया – कार्य की परिणामबद्ध व्याख्या

तर्क – कार्य की व्याख्या

कथन – कुछ चीजों को शब्द में व्यक्त करना।

11.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. तार्किक लेखन का अभिप्राय है तर्क को कसौटी बनाकर लेखन कार्य में प्रवृत्त होना। अर्थात् जो कुछ भी लेखन हो उसमें कार्य और कारण संबंध हो।

2. देखिए भाग 11.3

3. क) प्रक्रिया

ख) तर्क

ग) विश्वसनीय

बोध प्रश्न 2

1. तार्किक लेखन के प्रयोग से प्रामाणिकता दिखाई जाती है। उदाहरण के माध्यम से ही लेखक अपने कथन को पुष्ट बनाता है, परंतु अधिक उदाहरण भी रचना को बोझिल कर सकते हैं। अतः उदाहरण हमेशा सटीक होने चाहिए।

2. क) तुलना, अंतर

   ख) संपूर्णता, वर्गीकरण

   ग) पुनकर्थन

   घ) विश्लेषण

   ड) विश्लेषणात्मक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY